VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

संस्कृति

क्लासरूम स्टडी मटेरियल

(अप्रैल, 2024 से अक्टूबर, 2024)

PT 365

www.visionias.in 8468022022, 9019066066

enquiry@visionias.in /c/VisionIASdelhi /visionias.upsc /vision _ias VisionIAS_UPSC

अहमदाबाद बेंगलुरु भोपाल चंडीगढ दिल्ली गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे रांची

संस्कृति (Culture)

विषय-सूची

1. मूर्तियां, मंदिर एवं अन्य स्थापत्य (Sculptures, Temples and Other Architecture) ____ 4
1.1. स्मारकों को संरक्षित सूची से हटाना ____ 4
1.2. नालंदा विश्वविद्यालय ____ 6
1.3. श्री जगन्नाथ मंदिर ____ 9
1.4. विरुपाक्ष मंदिर ____ 9
1.5. सुर्ख़ियों में रहे अन्य मंदिर एवं स्थापत्य ____ 12
1.5.1. गांधी सरोवर/ केदारनाथ मंदिर ____ 12
1.5.2. संगमेश्वर मंदिर ____ 12
1.5.3. कामाख्या मंदिर ____ 13
1.5.4. ज्योतिर्मठ या जोशीमठ ____ 13
1.5.5. अलगर मंदिर, तमिलनाडु ____ 14
1.5.6. श्री माधव पेरुमल मंदिर ____ 14
1.5.7. केसरिया स्तूप ____ 14
1.5.8. चंद्रवल्ली गुफा परिसर ____ 15
2. मूर्तिकला, चित्रकला और अन्य कला शैलियां (Sculptures, Paintings and Other Forms of Art) ____ 16
2.1. शास्त्रीय भाषा ____ 16
2.2. तोलू बोम्मालट्टा ____ 17
2.3. सुर्ख़ियों में रही चित्रकारियां ____ 20
2.4. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां ____ 21
2.4.1. कुचिपुड़ी नृत्य ____ 21
2.4.2. मोहिनीअट्टम नृत्य ____ 21
2.4.3. कलारीपयट्टू ____ 22
2.4.4. वचन साहित्य ____ 22
2.4.5. तंजावुर वीणा ____ 22
3. सुर्ख़ियों में प्रमुख स्थल (Important Sites in the News) 24
3.1. चराइदेव मोइदम्स ____ 24
3.2. कोझिकोड: भारत का पहला 'सिटी ऑफ लिटरेचर' ____ 26
3.3. वर्ल्ड क्राफ्ट सिटी ____ 27
3.4. कीलाडी उत्खनन ____ 27
3.5. हड़प्पा सभ्यता ____ 28
3.6. लोथल ____ 31
3.7. सुर्ख़ियों में रहे अन्य स्थल ____ 31
3.7.1. गोवा के मौक्सी गांव में चट्टानों पर नक्काशी नवपाषाण कालीन ____ 31
3.7.2. श्रीकाकुलम ____ 32
3.7.3. तेलंगाना में नए पुरातत्व स्थल ____ 33
3.7.4. फणीगिरी (तेलंगाना) ____ 33
3.7.5. बाविकोंडा मठ ____ 34
4. व्यक्तित्व (Personalities) ____ 35
4.1. भगवान महावीर जैन ____ 35
4.2. देवी अहिल्याबाई होल्कर ____ 36
4.3. नाना जगन्नाथ शंकरसेठ ____ 37
4.4. महर्षि दयानंद सरस्वती ____ 38
4.5. स्वामी विवेकानंद ____ 39
4.6. श्री रतन नवल टाटा ____ 40
5. पुरस्कार/सम्मान (Awards) ____ 41
5.1. भारत रत्न ____ 41
5.2. नोबेल पुरस्कार ____ 42
5.3. अन्य महत्वपूर्ण पुरस्कार/ सम्मान ____ 43
5.3.1. पद्म पुरस्कार ____ 43
5.3.2. अनुभव पुरस्कार ____ 44
5.3.3. वीरता पुरस्कार ____ 45
5.3.4. राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार ____ 46
5.3.5. यूनेस्को का प्रिक्स वर्साय पुरस्कार, 2023 ____ 47
5.3.6. दादा साहब फाल्के पुरस्कार ____ 48
6. सुर्ख़ियों में रही जनजातियां (Tribes in News) ____ 49
7. विविध (Miscellaneous) ____ 55
7.1. तीर्थयात्री कॉरिडोर परियोजनाएं ____ 55
7.2. श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर ____ 57
7.2.1. सुर्ख़ियों में रही अन्य सरकारी पहलें ____ 58
7.2.1.1. कस्तूरी कॉटन भारत ____ 58
7.2.1.2. प्रोजेक्ट परी/ PARI (पब्लिक आर्ट ऑफ इंडिया) ____ 58
7.2.1.3. पर्यटन मित्र और पर्यटन दीदी पहल ____ 59
7.2.1.4. भौगोलिक संकेतक (GI) टैग ____ 59
7.3. सुप्रीम कोर्ट में नया ध्वज, प्रतीक चिन्ह और न्याय की देवी की नई प्रतिमा ____ 62

7.4. सुर्ख़ियों में रही ऐतिहासिक घटनाएं ____ 63
7.4.1. वायकोम सत्याग्रह ____ 63
7.4.2. हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन ____ 65
7.4.3. रंगभेद व्यवस्था ____ 65
7.5. अन्य महत्वपूर्ण घटनाक्रम ____ 67
7.5.1. संथाल विद्रोह ____ 67
7.5.2. ओडिशा का अकाल, 1866 ____ 67
7.5.3. सारागढ़ी का युद्ध, 1897 ____ 68
7.6. सुर्ख़ियों में रहे त्यौहार ____ 69
7.7. खेलों से संबंधित सुर्ख़ियां ____ 71
7.7.1. भारत में खेल इकोसिस्टम ____ 71
7.7.2. खेल संबंधी अन्य सुर्ख़ियां ____ 72
7.7.2.1. ओलंपिक ऑर्डर ____ 72
7.7.2.2. राष्ट्रमंडल खेल 2026 ____ 72
7.7.2.3. शतरंज ____ 72
7.7.2.4. टी20 विश्व कप ____ 73
7.8. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां ____ 74
7.8.1. पोर्ट ब्लेयर का नाम बदलकर श्री विजय पुरम किया गया ____ 74
7.8.2. वर्ल्ड हेरिटेज ट्रांस-ह्यूमैंन्स इनिशिएटिव ____ 75
7.8.3. यूनेस्को के "मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड (MOW)-एशिया-पैसिफिक रीजनल रजिस्टर" ____ 75
7.8.4. साहित्य अकादमी ____ 76
7.8.5. अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस ____ 76
7.8.6. अभय मुद्रा ____ 76
7.8.7. सांस्कृतिक संपदा समझौता ____ 77
7.8.8. विश्व भर में 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (IYD) मनाया गया ____ 77
7.8.9. भारतीय ध्वज संहिता ____ 78
7.8.10. राष्ट्रीय हथकरघा दिवस ____ 78
7.8.11. एरी सिल्क (रेशम) ____ 79
7.8.12. डेनिसोवन ____ 79
7.8.13. बंगाल गजट ____ 79
7.8.14. अंतर्राष्ट्रीय गणितीय ओलंपियाड ____ 80
7.8.15. विश्व का सबसे पुराना कैलेंडर ____ 80
परिशिष्ट 1: भारत की बुनाई शैलियाँ ____ 81
परिशिष्ट 2: भारत के फसल उत्सव ____ 82
परिशिष्ट 3: भारत का क्षेत्रीय नववर्ष ____ 83
परिशिष्ट 4: अशोक के शिलालेख और शिलालेख ____ 84
परिशिष्ट 5: भारत के ऐतिहासिक बंदरगाह ____ 86
परिशिष्ट 6: भारत में विश्व धरोहर स्थल ____ 87

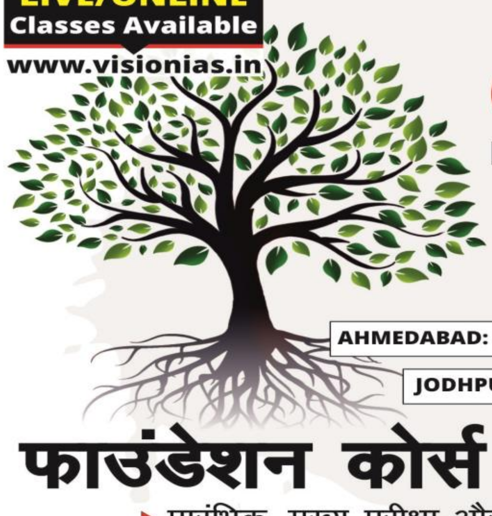
LIVE/ONLINE Classes Available
www.visionias.in
Foundation Course
GENERAL STUDIES
PRELIMS cum MAINS 2026, 2027 & 2028
DELHI: 21 JAN, 1 PM | 31 JAN, 5 PM | 11 FEB, 8 AM
GTB Nagar Metro (Mukherjee Nagar): 8 FEB, 8 AM
हिन्दी माध्यम | DELHI: 4 फरवरी, 11 AM
AHMEDABAD: 4 JAN | BENGALURU: 18 FEB | BHOPAL: 5 DEC | HYDERABAD: 12 FEB | JAIPUR: 18 FEB
JODHPUR: 3 DEC | LUCKNOW: 11 FEB | PUNE: 20 JAN | ADMISSION OPEN | CHANDIGARH
फाउंडेशन कोर्स सामान्य अध्ययन 2026
▸ प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
DELHI: 4 फरवरी, 11 AM | JAIPUR: 18 फरवरी | JODHPUR: 3 दिसंबर | प्रवेश प्रारम्भ | BHOPAL | LUCKNOW
Scan the QR CODE to download VISION IAS App. Join official telegram group for daily MCQs & other updates.
/visionias.upsc /c/VisionIASdelhi /c/VisionIASdelhi /t.me/s/VisionIAS_UPSC
DELHI: HEAD OFFICE: 1st floor, Apsara Arcade, Near Gate-7 Karol Bagh Metro Station, 1/8 b, Pusa Road, Karol Bagh, Delhi – 110005 | CONTACT: 8468022022, 9019066066
AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | CHANDIGARH | GUWAHATI | HYDERABAD | JAIPUR | JODHPUR | LUCKNOW | PRAYAGRAJ | PUNE | RANCHI

अभ्यर्थियों के लिए संदेश

प्रिय अभ्यर्थी,

PT 365 (हिंदी) डाक्यूमेंट के अंतर्गत, व्यापक तौर पर **विगत 1 वर्ष (365 दिन) की महत्वपूर्ण समसामयिकी को समेकित रूप से कवर किया गया है,** ताकि प्रीलिम्स की तैयारी में अभ्यर्थियों को सहायता मिल सके।

अभ्यर्थियों के हित में PT 365 डॉक्यूमेंट को और बेहतर बनाने के लिए इसमें निम्नलिखित नवीन विशेषताओं को शामिल किया गया है:

चित्र एवं संक्षेप में इन्फोग्राफिक्स के रूप में टॉपिक्स, जैसे-

» **मंदिर और पुरातात्विक स्थल;**
» यूनेस्को, **UCCN, ASI,** आदि जैसे **महत्वपूर्ण संगठन;**
» नोबेल प्राइज जैसे **अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार;** आदि।

इन्हें सरलता से समझने, सहज अनुभव प्राप्त करने और सामग्री को बेहतर तरीके से याद रखने के लिए संक्षिप्त तौर पर प्रस्तुत किया गया है।

सुव्यवस्थित मानचित्र: इनका उपयोग सुर्ख़ियों में रहे **त्योहारों, जनजातियों, पुतली कला, मार्शल आर्ट** आदि के बारे में भौगोलिक और प्रासंगिक जानकारी प्रदान करने के लिए किया गया है।

परिशिष्ट: इसमें प्रीलिम्स एग्जाम को ध्यान में रखते हुए **अशोक के शिलालेख, प्राचीन बंदरगाह** आदि से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी को व्यापक तरीके से जोड़ा गया है, ताकि क्विक रिविजन को सुविधाजनक बनाया जा सके।

क्विज़: अभ्यर्थी ने विषय को कितना बेहतर समझा है, इसके परीक्षण के लिए QR आधारित स्मार्ट क्विज़ को शामिल किया गया है।

अतिरिक्तांक: इस वर्ष प्राचीन से लेकर आधुनिक काल तक के **सुर्ख़ियों में रहे व्यक्तित्व** के बारे में एक अतिरिक्त डॉक्यूमेंट भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

SMART QUIZ	विषय की समझ और अवधारणाओं के स्मरण की अपनी क्षमता के परीक्षण के लिए आप हमारे ओपन टेस्ट ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर स्मार्ट क्विज़ का अभ्यास करने हेतु इस QR कोड को स्कैन कर सकते हैं।	

1. मूर्तियां, मंदिर एवं अन्य स्थापत्य (Sculptures, Temples and Other Architecture)

1.1. स्मारकों को संरक्षित सूची से हटाना (Delisting of Monuments)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने **24 "लुप्त/ अप्राप्त" (Untraceable)** स्मारकों में से **18** स्मारकों को **"स्मारकों की केंद्रीय संरक्षित सूची" से हटाने की घोषणा की** है।

अन्य संबंधित तथ्य

- गौरतलब है कि ASI ने कुछ समय पहले उन स्मारकों की एक सूची जारी की थी जो गायब या लुप्त हो गए हैं। ASI का मानना है कि इन **स्मारकों का अब राष्ट्रीय महत्त्व नहीं** रह गया है। इन्हीं **स्मारकों में से 18 स्मारकों को** संरक्षित सूची से हटाने का निर्णय लिया गया है।
- ये अप्राप्त स्मारक ASI द्वारा संरक्षित स्मारक थे। कई वजहों से **इन स्मारकों की सटीक अवस्थिति और दशा** का निर्धारण करना संभव नहीं हो पा रहा था।
  - जिन स्मारकों को केंद्रीय संरक्षित सूची से हटाया जाना है उनमें शामिल हैं- **हरियाणा के मुजेसर गांव में स्थित कोस मीनार नंबर 13,** झांसी जिले में **गनर बुर्किल का मकबरा,** वाराणसी में **तेलिया नाला बौद्ध खंडहर,** आदि।
  - **कोस मीनारें** उत्तरी भारतीय उपमहाद्वीप में ग्रांड ट्रंक रोड के किनारे मध्यकालीन भारत में निर्मित एक अनूठी और महत्वपूर्ण वास्तुशिल्पीय उपलब्धि हैं, जिन्हें 16वीं शताब्दी के शासक **शेरशाह सूरी** ने बनवाया था।
  - ASI ने यह निर्णय केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा **"भारत में लुप्त स्मारक और स्मारकों के संरक्षण से संबंधित मुद्दे"** शीर्षक से संसद में प्रस्तुत रिपोर्ट के आधार पर लिया है।

HQ: नई दिल्ली

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के बारे में

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

उत्पत्ति: इसकी स्थापना **1861 में अलेक्जेंडर कनिंघम** ने की थी। कनिंघम को **"भारतीय पुरातत्व का जनक"** माना जाता है।

संबंधित मंत्रालय: संस्कृति मंत्रालय

परिचय: यह **सांस्कृतिक विरासत से संबंधित प्राचीन स्मारकों के पुरातात्विक अनुसंधान, संरक्षण और रखरखाव के लिए जिम्मेदार** प्रमुख संगठन है।

सौंपे गए कार्य:
- यह **प्राचीन स्मारक और पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष (AMASR) अधिनियम, 1958 तथा पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972** के प्रावधानों के अनुसार देश में सभी पुरातात्विक गतिविधियों को नियंत्रित करता है।
- यह विश्व धरोहर संपत्ति आदि सहित **केंद्र स्तर पर संरक्षित स्मारकों (CPMs)/ राष्ट्रीय महत्त्व के स्थलों की सुरक्षा और रखरखाव के प्रभारी** की भूमिका निभाता है।

केंद्रीय संरक्षित स्मारकों की सूची से स्मारकों को हटाने के बारे में

- किसी स्मारक को केंद्रीय संरक्षित सूची से हटाने का अर्थ है कि उसका अब ASI द्वारा संरक्षण, परिरक्षण और रख-रखाव नहीं किया जाएगा। केंद्रीय सूची से हटाने का कार्य **प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष, (AMASR)[1] अधिनियम, 1958** की धारा 35 के अनुसार किया जाता है।
  - एक बार जब किसी स्मारक को इस सूची से हटा दिया जाता है, तो स्मारक के आसपास के क्षेत्र में नियमित निर्माण कार्य और शहरीकरण संबंधी गतिविधियां फिर से आरंभ की जा सकती हैं।

[1] Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains

- यह धारा **केंद्र सरकार को यह घोषित** करने का अधिकार देती है कि कोई **प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारक या पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष राष्ट्रीय महत्त्व** का नहीं रह गया है।
- गौरतलब है कि **AMASR अधिनियम में "लुप्त स्मारक"** नामक किसी शब्दावली का प्रयोग नहीं किया गया है। स्मारकों के लिए इस शब्दावली का पहली बार इस्तेमाल नियंत्रक-महालेखा परीक्षक (CAG) की ऑडिट टीम ने अपनी रिपोर्ट में किया था।

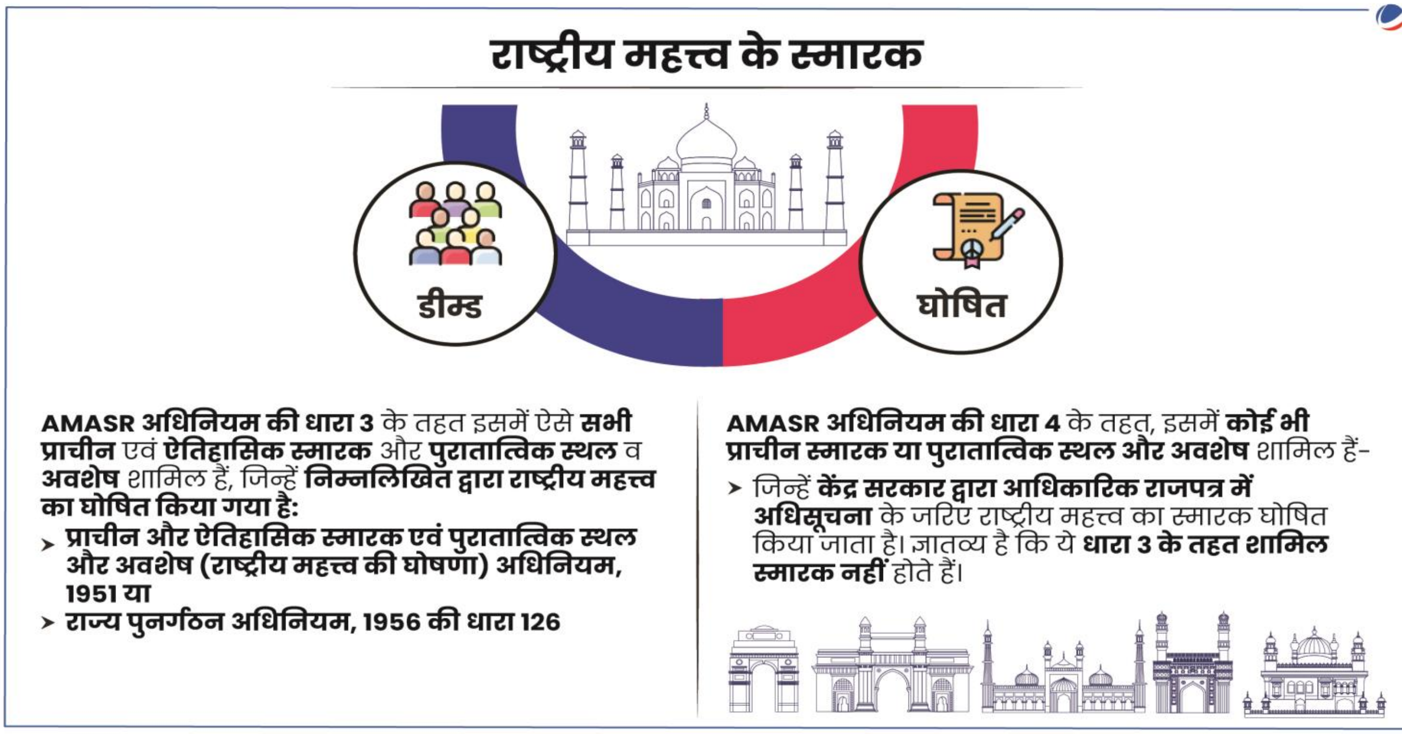

कानूनी स्थिति

- भारत के संविधान का **अनुच्छेद 49 (DPSP)** राज्य को **देश भर में राष्ट्रीय महत्त्व वाले कलात्मक या ऐतिहासिक स्मारक या स्थान या वस्तु का संरक्षण करने का निर्देश** देता है।
- **AMASR अधिनियम, 1958:** यह कानून **राष्ट्रीय महत्त्व के प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारकों, पुरातात्विक स्थलों एवं अवशेषों के संरक्षण** का प्रावधान करता है।
  - यह **पुरातात्विक उत्खनन का विनियमन तथा मूर्तियों, नक्काशी और अन्य वस्तुओं की सुरक्षा का भी प्रावधान** करता है।
  - इस अधिनियम की धारा 4 केंद्र सरकार को प्राचीन स्मारकों आदि को **राष्ट्रीय महत्त्व का स्थल** घोषित करने का अधिकार देती है।
- **AMASR (संशोधन और मान्यता) अधिनियम, 2010** के तहत **राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (NMA) की स्थापना** की गई है। यह प्राधिकरण केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के तहत कार्य करता है।
  - **NMA के कार्य:**
    - यह प्राधिकरण केंद्रीय संरक्षित स्मारकों के आसपास निषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों का प्रबंधन करके स्मारकों और स्थलों की सुरक्षा और संरक्षण सुनिश्चित करता है।
    - यह प्रतिबंधित और विनियमित क्षेत्र में निर्माण संबंधी गतिविधि के लिए आवेदकों को भी अनुमति भी देता है।

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज़
देश के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट सीरीज़ प्रोग्राम के इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम का लाभ उठाएं
✓ सामान्य अध्ययन ✓ निबंध ✓ दर्शनशास्त्र
2025 ENGLISH MEDIUM 25 JANUARY हिन्दी माध्यम 25 जनवरी
2026 ENGLISH MEDIUM 25 JANUARY हिन्दी माध्यम 2 फरवरी

1.2. नालंदा विश्वविद्यालय (Nalanda University)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **प्रधान मंत्री ने राजगीर (बिहार) में नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन** किया।

अन्य संबंधित तथ्य

- **नए नालंदा विश्वविद्यालय को "अलग-अलग सभ्यताओं के बीच संवाद के केंद्र"** के रूप में स्थापित किया जा रहा है। आधुनिक **नालंदा विश्वविद्यालय एक 'नेट जीरो ग्रीन कैंपस'** है।
- यह **नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010** के तहत स्थापित किया गया है और नया परिसर **प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहरों** के निकट स्थित है।
    - 2007 में फिलीपींस में दूसरे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS) में, सदस्य देशों ने **नालंदा विश्वविद्यालय** के पुनरुद्धार प्रस्ताव पर सहमति व्यक्त की थी।

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में

- **स्थापना:** इसे 5वीं शताब्दी ई. में **कुमारगुप्त प्रथम** ने निर्मित करवाया था। यह **12वीं शताब्दी ई. तक शिक्षा का प्रमुख केंद्र** बना रहा था।
- **स्थापत्य कला:**
    - यह एक मठीय (Monastic) विश्वविद्यालय था। इसके संरचनात्मक अवशेषों में **महाविहार** (आवासीय सह शैक्षणिक भवन) और **चैत्य** (उपासना स्थल) शामिल हैं।
    - इसमें **स्तूप, उपासना स्थल और स्टुको, पाषाण व धातु से बनी महत्वपूर्ण कलाकृतियां** भी शामिल हैं।
- **नालंदा की शैक्षणिक उत्कृष्टता और पाठ्यक्रम:**
    - **मुख्य विषय:** नालंदा में **वेद, तीनों बौद्ध पंथ (थेरवाद, महायान और वज्रयान), ललित कला, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान, राजनीति और युद्ध कला** की शिक्षा दी जाती थी।
        - **थेरवाद:** पाली भाषा में इसका अर्थ है **"बुजुर्गों का सिद्धांत"।**
        - **महायान:** संस्कृत भाषा में इसका अर्थ है **"बड़ा वाहन"।**
        - **वज्रयान:** यह बौद्ध धर्म का **तांत्रिक पंथ** है।
    - **प्रवेश:** विश्वविद्यालय में **पूरी तरह से योग्यता के आधार पर प्रवेश** होता था। इसके लिए **प्रशिक्षित द्वारपालों द्वारा प्रवेश परीक्षाएं** आयोजित की जाती थीं।
    - **पुस्तकालय:** विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को काव्यात्मक रूप से **"धर्म गुंज" या "सत्य का शिखर"** कहा जाता था। इस 9 मंजिला भवन में 9 मिलियन से भी अधिक पुस्तकें रखी गई थीं।
- **संरक्षक:**
    - इसे **कन्नौज के राजा हर्षवर्धन (7वीं शताब्दी ई.), पाल शासकों (8वीं-12वीं शताब्दी ई.)** आदि सहित अलग-अलग शासकों द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था।
    - ऐसा कहा जाता है कि **सम्राट अशोक ने नालंदा में सारिपुत्र के चैत्य को चढ़ावा** दिया था और वहां एक मंदिर बनवाया था।
- इसे **1205 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक के तुर्क सेनापति बख्तियार खिलजी ने नष्ट** कर दिया था।
    - 19वीं सदी के प्रारंभ में **इस विश्वविद्यालय की फिर से खोज करने का श्रेय सर फ्रांसिस बुकानन** को दिया जाता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय मान्यता:** नालंदा महाविहार को **2016 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल** घोषित किया गया था।

नालंदा से जुड़े महत्वपूर्ण व्यक्तित्व:

- **पाली** भाषा में रचित **बौद्ध साहित्यों** के अनुसार, **महात्मा बुद्ध ने नालंदा की यात्रा** की थी।
- महात्मा बुद्ध के दो प्रमुख शिष्य **सारिपुत्र और मोग्गलान** भी नालंदा से ही थे।
- जैन ग्रंथों के अनुसार **महावीर वर्धमान** ने नालंदा में **चौदह वर्षा ऋतुएँ** बिताई थीं।

नालंदा के प्रमुख शिक्षक:

- **आर्यभट्ट:** प्रसिद्ध गणितज्ञ और शून्य के आविष्कारक आर्यभट्ट ने **नालंदा में ही अध्ययन और अध्यापन** किया था।
- **नागार्जुन:** बौद्ध **महायान** शाखा के एक दार्शनिक थे।
- **दिङ्नाग:** वे **तर्कशास्त्र दर्शन** के संस्थापक थे।
- **धर्मपाल:** एक **ब्राह्मण** विद्वान थे।
- **अभयकरगुप्त:** वे एक प्रसिद्ध **तांत्रिक साधक** थे, जो एक साथ **महाबोधि, नालंदा और विक्रमशिला मठों** के मठाधीश रहे थे।
- **नरोपा:** वे **तिब्बती परंपरा की तांत्रिक वंशावली से संबंधित थे, और 1049 से 1057 के दौरान नालंदा के मठाधीश** रहे थे।

नालंदा की यात्रा करने वाले विदेशी यात्री:

- नालंदा ने **चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, मंगोलिया, श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया** के विद्वानों का ध्यान अपनी ओर खींचा था।
- 7वीं शताब्दी ई. में, **चीनी विद्वान इ-किंग और जुआन-जांग (ह्वेनसांग)** नालंदा आए थे। नालंदा को तब **नाला** कहा जाता था।
- **जुआन-जांग** ने योग के सर्वोच्च प्राधिकारी **कुलपति शीलभद्र** के अधीन नालंदा में **योगशास्त्र का अध्ययन** किया था।

नालंदा की स्थापत्य संबंधी विशेषताएं

- **संरचना और निर्माण-योजना:**
  - यह इमारत प्राचीन **कुषाण स्थापत्य शैली** में निर्मित है। इसका निर्माण **उत्तर-दक्षिण दिशा में एक अक्षीय योजना** के तहत किया गया था।
  - संरचनात्मक अवशेषों में **विहार** (आवासीय सह शैक्षणिक भवन) और **चैत्य** (उपासना स्थल) शामिल हैं।
  - इसकी अनूठी विशेषताओं में **पंचकोणीय आकृति वाले चैत्यों का उद्भव** और स्थानीय बौद्ध मंदिरों पर उनके प्रभाव शामिल हैं।
- **स्थापत्यकला संबंधी महत्त्व:**
  - नालंदा विश्वविद्यालय को भारतीय उपमहाद्वीप में **योजनाबद्ध तरीके से निर्मित प्रथम विश्वविद्यालय** के रूप में मान्यता प्राप्त है।
  - **नालंदा की स्टुको प्लास्टर विधि** ने थाईलैंड की निर्माण विधियों को प्रभावित किया था। इसकी **धातु कला** ने विद्वानों के जरिए **मलय द्वीप समूह, नेपाल, म्यांमार और तिब्बत** को प्रभावित किया था।
  - यहां की स्थापत्यकला बौद्धों की वैचारिक प्रणाली में बदलाव तथा महायान से वज्रयान की ओर झुकाव को प्रदर्शित करती है।

नालंदा महाविहार की मूर्तिकला शैली

- **उत्पत्ति:** स्टुको, पत्थर और कांसे से तैयार की गई नालंदा की मूर्तिकला, **सारनाथ की गुप्तकालीन बौद्ध कला** से विकसित हुई थी।
  - **मुकुटधारी बुद्ध का चित्रण** आमतौर पर 10वीं शताब्दी के बाद से ही देखने को मिलता है।
- **मिश्रण:** नौवीं शताब्दी तक सारनाथ गुप्तकालीन बौद्ध कला शैली, विहार निर्माण की स्थानीय परंपराओं और मध्य भारतीय शैलियों के मिश्रण ने **मूर्तिकला की विशिष्ट नालंदा शैली** को जन्म दिया।
  - नालंदा में सारनाथ शैली से भिन्न विविध **ब्राह्मणवादी मूर्तियां** भी प्राप्त हुई हैं।

नालंदा महाविहार की स्टूको कला

नालंदा मूर्तिकला शैली

- **पाषाण निर्मित:**
  - **चेहरे के हाव-भाव की विशेषताएं,** शरीर के गठन तथा वस्त्रों एवं आभूषणों की विशेषताएं।
  - मूर्तियां आमतौर पर उभार में सपाट नहीं होती थीं, बल्कि उन्हें **त्रि-आयामी रूपों में चित्रित** किया जाता था।
    - **मूर्तियों के पीछे की पट्टिकाएं विस्तृत और सुन्दर अलंकरण से युक्त** होती थीं।

- **धातु निर्मित:**
    - नालंदा कांस्य कला शैली 7वीं और 8वीं शताब्दी से लेकर लगभग 12वीं शताब्दी के बीच पाल शासकों के युग की धातु की बनी मूर्तियों का एक बड़ा हिस्सा है।
    - कांस्य निर्मित मूर्तियां भी आरंभ में सारनाथ और मथुरा की गुप्तकालीन कला शैलियों पर बहुत अधिक निर्भर थीं।
    - **प्रारंभिक चरण:** महायान पंथ के बौद्ध देवता जैसे कि **मंजुश्री कुमार, अवलोकितेश्वर,** आदि।
    - **उत्तरवर्ती चरण:** वज्रयान शाखा से संबंधित देवता जैसे कि **वज्र शारदा, खसर्पण,** आदि।

अन्य बौद्ध शिक्षण केंद्र

तक्षशिला	• यह वर्तमान **उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान** में स्थित था। इसकी ख़ोज पुरातत्वविद् **अलेक्जेंडर कनिंघम** द्वारा 19वीं शताब्दी के मध्य में की गई थी। • 1980 में इसे **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल** के रूप में मान्यता प्रदान की गई थी। • यहां पर अध्ययन करने वाले विख्यात शिष्यों में व्याकरणविद **पाणिनि** (अष्टाध्यायी के लेखक), चिकित्सक **जीवक** और शासन कला के कुशल प्रतिपादक **चाणक्य** (अर्थशास्त्र के लेखक) शामिल थे।
विक्रमशिला	• यह **बिहार के भागलपुर** के निकट स्थित है। इसकी स्थापना **पाल वंश के राजा धर्मपाल** ने की थी। • **अतीश दीपांकर** (तिब्बत में बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए जाने जाते हैं) और **वसुबंधु** विक्रमशिला में अध्ययन करने वाले प्रसिद्ध विद्वान रहे थे।
ओदंतपुरी	• यह भी **बिहार** में ही स्थित है। • यह भारत का **दूसरा सबसे पुराना विश्वविद्यालय** है। ओदंतपुरी की स्थापना 8वीं शताब्दी में **पाल शासक गोपाल-प्रथम** ने की थी। कई **तिब्बती** विद्वानों ने यहां से अध्ययन किया था।
नागार्जुनकोंडा	• यह वर्तमान **आंध्र प्रदेश** में स्थित है। • इसका नाम **महायान बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन** के नाम पर रखा गया था। नागार्जुन को **"शून्यवाद सिद्धांत" का प्रतिपादक** माना जाता है।
रत्नागिरी	• इसे बौद्ध शिक्षा के केंद्र के रूप में, विशेष रूप से **महायान और तंत्रयान (वज्रयान) बौद्ध धर्म के केंद्र** के रूप में **नालंदा विश्वविद्यालय का प्रतिस्पर्धी** माना जाता था। • तीन बौद्ध-स्थलों यथा **रत्नागिरी, ललितगिरि और उदयगिरि** को ओडिशा में बौद्ध केंद्रों का **"डायमंड ट्रायंगल"** कहा जाता है।
अन्य	• **वल्लभी** (गुजरात) • **जगदल** (अब बांग्लादेश में)

1.3. श्री जगन्नाथ मंदिर (Shree Jagannath Temple)

सुर्ख़ियों में क्यों?

श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी के **पवित्र रत्न भंडार कक्ष का द्वार 46 साल बाद फिर से खुला।**

श्री जगन्नाथ मंदिर (व्हाइट पैगोडा), पुरी, ओडिशा के बारे में

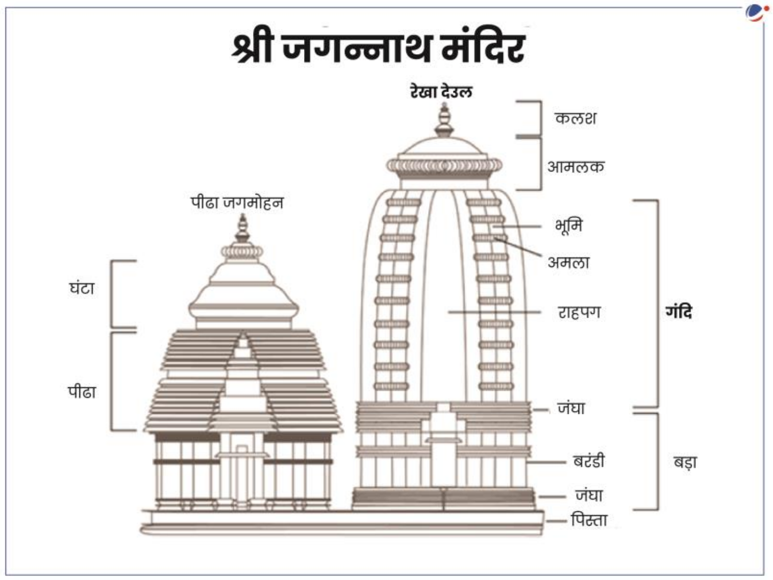

- यह मंदिर **भगवान जगन्नाथ** (भगवान विष्णु के अवतार), उनकी बहन **देवी सुभद्रा** और बड़े भाई **भगवान बलभद्र** (पवित्र त्रिदेव) को समर्पित है।
    - **रत्न भंडार में पवित्र त्रिदेवों के रत्न भी मौजूद हैं।**
- इस मंदिर का निर्माण **12वीं शताब्दी में पूर्वी गंग वंश के प्रथम शासक राजा अनंतवर्मन चोडगंग देव** ने करवाया था।

श्री जगन्नाथ मंदिर की स्थापत्य शैली के बारे में

- **स्थापत्य शैली:** यह मंदिर स्थापत्य की **कलिंग शैली** में निर्मित है। कलिंग शैली को **नागर शैली की एक उप-शैली** के रूप में जाना जाता है।
- **मंदिर के मुख्यतः चार भाग हैं-**
    - **विमान या देउल (गर्भगृह):** मंदिर का विमान **नागर शैली में निर्मित रेखा देउल** में बना है। विमान को **शिखर** के नाम से भी जाना जाता है। यह एक वक्राकार मीनार के समान है।
    - **जगमोहन:** यह **पीढा देउल** के रूप में है। इसका **शिखर पिरामिडनुमा** हैं।
    - **नटमंडप:** यह **दर्शकों के लिए या नृत्य** कक्ष है।
    - **भोग मंडप:** यह विशिष्ट अनुष्ठानों के लिए और प्रसाद अर्पण सभाकक्ष है।
- मुख्य मंदिर की बाहरी दीवार के दोनों तरफ **भगवान विष्णु की आकृतियां उत्कीर्ण** की गई हैं। दोनों ओर भगवान विष्णु की **चार-चार आकृतियां** उत्कीर्ण हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर ये भगवान विष्णु के **24 रूपों यथा- केशव, माधव, दामोदर, नारायण** आदि को दर्शाती हैं।

रत्न भंडार के बारे में

- रत्न भंडार मंदिर के **जगमोहन के उत्तरी छोर** पर स्थित है। जगमोहन, मंदिर का **सभा कक्ष** है।
- इसके दो भाग हैं- पहला, **बाहर भंडार (बाहरी कक्ष)** और दूसरा, **भीतर भंडार (आंतरिक कक्ष)।**
- श्री जगन्नाथ मंदिर के **'छप्पन भोग' प्रसाद में से एक, मगाजी लाडू को भौगोलिक संकेतक (GI) टैग** मिला है।
    - मगाजी लाडू ओडिशा के **ढेंकनाल जिले** की प्रसिद्ध पारंपरिक मिठाई है।

1.4. विरुपाक्ष मंदिर (Virupaksha Temple)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हम्पी में भारी वर्षा के कारण विरुपाक्ष मंदिर के **'सालू मंडप'** का एक हिस्सा ढह गया है।

विरुपाक्ष मंदिर के बारे में

- यह मंदिर **भगवान विरुपाक्ष (या पम्पापति) को समर्पित** है। विरुपाक्ष **शिव** का एक रूप है। इनकी पत्नी स्थानीय देवी **पम्पा** हैं। देवी पम्पा को **माता पार्वती का अवतार** माना जाता है।
- यह मंदिर **हम्पी, कर्नाटक** में स्थित है। हम्पी विजयनगर साम्राज्य (14वीं ईस्वी-16वीं ईस्वी) की राजधानी थी।
- यह मंदिर **हम्पी में स्मारकों के उस समूह का एक हिस्सा** है, जो यूनेस्को द्वारा **विश्व धरोहर के रूप में सूचीबद्ध** हैं।
- यह मंदिर स्थापत्य की **द्रविड़ शैली** में बना है। इस शैली की खास विशेषताएं **भव्य गोपुरम, विमान, जटिल नक्काशी, स्तंभ युक्त सभाकक्ष** आदि हैं।

© Vision IAS

मंदिर का इतिहास

- विरुपाक्ष मंदिर का निर्माण कार्य सदियों तक चला था। अभिलेखों से पता चलता है कि **सबसे पहला मंदिर 740 ईस्वी में चालुक्य रानी लोकमहादेवी** ने बनवाया था। उन्होंने **दक्षिण के राजाओं पर अपने पति की विजय की स्मृति** में यह मंदिर निर्मित करवाया था।
- **पल्लव, चालुक्य, होयसल, चोल जैसे राजवंशों** ने मंदिर के विस्तार और अलंकरण में अपना योगदान दिया है। हालांकि, इसका **सर्वाधिक विस्तार विजयनगर शासकों** ने कराया था।
- विजयनगर के **संगम वंश** के शासकों ने मंदिर को एक **प्रमुख धार्मिक स्थल के रूप में मान्यता दिलाने में अपना योगदान** दिया था। **तुलुव वंश** के शासकों ने **मंदिर का सर्वाधिक विस्तार** कराया था।
    - **कृष्णदेव राय (1509-29 ई.)** ने अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में मुख्य मंदिर के सामने एक **सभाकक्ष** के निर्माण के साथ-साथ **पूर्वी गोपुरम का भी निर्माण** कराया था।

द्रविड़ मंदिर स्थापत्य कला की विशेषताएं

- मंदिर के **गर्भगृह** के ऊपर मौजूद विमान सबसे छोटा है। **गर्भगृह मंदिर का सबसे पुराना** हिस्सा है।
    - **नोट:** द्रविड़ स्थापत्य शैली में **विमान** गर्भगृह के ऊपर बनी ऊँची संरचना होती है। यह संरचना एक पिरामिड जैसी होती है और इसकी योजना वर्गाकार होती है। इसमें कई मंजिलें होती हैं जो आकार में घटती हुईं एक के ऊपर एक बनाई जाती हैं। **स्तूपिका** एक बड़ा पत्थर है जो विमान की अंतिम मंजिल के ऊपर स्थित होता है। स्तूपिका के ऊपर **कलश** होता है, जिसके कारण विमान की ऊँचाई और अधिक बढ़ जाती है।

- मंदिर परिसर एक **प्राचीर** से घिरा हुआ है। मंदिर में एक प्रवेश द्वार है, जिसे **गोपुरम** कहा जाता है।
- मुख्य मंदिर के **विमान का आकार सीढ़ीदार पिरामिड** के समान है। उल्लेखनीय है कि द्रविड़ शैली में निर्मित मंदिरों के विमान नागर शैली में निर्मित मंदिरों के वक्राकार शिखरों की बजाय ज्यामितीय आकार के होते हैं।
- **मंडप** मंदिर का प्रवेश द्वार है। इसका निर्माण **बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के एकत्र होने या संगीत और नृत्य आयोजनों** के लिए किया गया है।
- मंदिर परिसर में **द्वारपाल** की मूर्तियां बनाई गई हैं।
- इसके अलावा, मंदिर में **एक बड़ा जलाशय भी निर्मित** है।

मंदिर स्थापत्य कला की अन्य शैलियां

- **नागर शैली:**
    - **उत्तर भारत के अधिकतर मंदिरों का निर्माण नागर शैली** में हुआ है।
    - **पत्थर के चबूतरे (बेदी) पर मंदिरों का निर्माण** हुआ है। इन पर चढ़ने के लिए सीढियां बनाई गई हैं।
    - **पंचायतन शैली:** इस शैली में मुख्य मंदिर एक **आयताकार चबूतरे** पर बना है, जिसके **चारों कोनों पर चार छोटे-छोटे मंदिर** बने हुए हैं।
    - मंदिर के प्रांगण में **जलाशय या तालाब निर्मित नहीं** हैं।
    - इस शैली की **दो प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:**
        - **जमीन पर क्रूस आकार की संरचना:** यह **चौकोर मंदिर** है और प्रत्येक के सामने वाले हिस्से के मध्य भाग में **रथक नामक कई क्रमिक चरण** मिलते हैं।
        - **वक्रीय शिखर:** घुमावदार शिखर धीरे-धीरे अंदर की ओर मुड़ता हुआ ऊपर बढ़ता है और चोटी पर मिलता है। **शिखर की चोटी या शीर्ष भाग पर एक नालीदार चक्रीका (तश्तरी) होती है, जिसे आमलक** कहा जाता है। आमलक पर **उभारदार वक्र** बनाए गए होते हैं।
    - **उदाहरण:** मोढेरा में सूर्य मंदिर, सोमनाथ मंदिर, आदि।

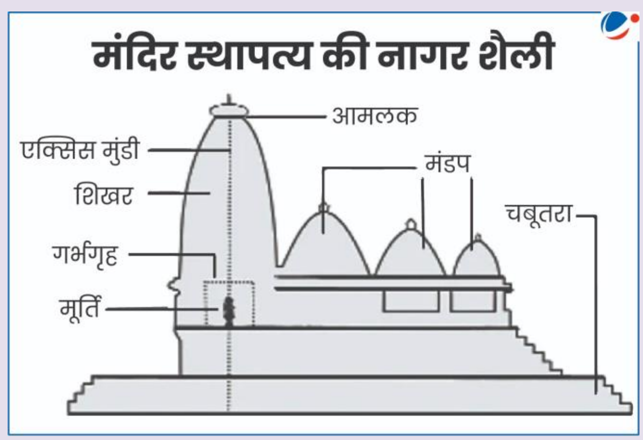

- **वेसर शैली:**
    - इस स्थापत्य शैली में **नागर और द्रविड़, दोनों शैलियों की विशेषताएं** पाई जाती हैं।

PT 365 - संस्कृति

○ **संरक्षक:** चालुक्य, राष्ट्रकूट और होयसल शासक।
○ द्रविड़ शैली के विपरीत इस शैली में **गर्भगृह के चारों ओर ढका हुआ प्रदक्षिणा पथ** नहीं है।
○ **उदाहरण:** ऐहोल का लाडखान मंदिर, बादामी के मंदिर, पट्टदकल का विरुपाक्ष मंदिर आदि।

विजयनगर साम्राज्य (1336-1646) के बारे में	
क्रमिक राजवंश	• **संगम वंश:** हरिहर प्रथम और बुक्का राय प्रथम द्वारा स्थापित। • **सलुव वंश:** संगम वंश के पतन के बाद सत्ता में आया। • **तुलुव वंश:** इनके शासनकाल में विजयनगर साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया था। • **अराविडु वंश:** इनका शासन काल आंतरिक संघर्षों और बाहरी आक्रमणों से ग्रसित था।
साम्राज्य का विस्तार	• 1512 ईस्वी में **कृष्णदेव राय** के शासनकाल के दौरान, **तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों के बीच की भूमि (रायचूर दोआब)** पर अधिकार कर लिया गया था। • 1514 ईस्वी में **ओडिशा** के शासकों को विजयनगर की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी थी। • 1520 ईस्वी में **बीजापुर** के सुल्तान को बुरी तरह पराजित किया गया था।
राजव्यवस्था	• **अमर-नायक** सैन्य कमांडर होते थे, जिन्हें **राय (राजा)** द्वारा शासन करने के लिए **क्षेत्र** दिया जाता था। ○ वे **कर संग्रह** करते थे। वे राजस्व का कुछ हिस्सा निजी इस्तेमाल के लिए; हाथियों और घोड़ों के निर्धारित दल के रखरखाव के लिए; मंदिर के रखरखाव के लिए और सिंचाई कार्यों के लिए अपने पास रख लेते थे। • **आयगार व्यवस्था** में 12 पदाधिकारी होते थे, जिन्हें सामूहिक रूप से **'आयगार'** के रूप में जाना जाता था। उन्हें शासन द्वारा प्रत्येक आवंटित गाँव में नियुक्त किया जाता था। ○ यह पद बाद में वंशानुगत हो गया।
भू-राजस्व प्रशासन	• **'अमरम'** और **'भंडारवाड़ा'** अमरनायकों के अधिकार वाली भूमि थी। • नायकों ने इन जमीनों पर खेती के लिए **कनियालार** की सेवा प्राप्त की थी। • मंदिरों को दिए जाने वाले कर मुक्त भूखंड को **'मान्या'** कहा जाता।
स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरण	• विरुपाक्ष मंदिर • विट्ठल मंदिर परिसर • हजारा राम मंदिर • **हम्पी परिसर यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल** है।
साहित्य	• **कृष्णदेव राय** की साहित्यिक कृतियां हैं- **अमुक्तमाल्यद** (राजव्यवस्था पर रचना) और **जाम्बवती कल्याणम** (संस्कृत नाटक)। • **अष्टदिग्गज** कृष्णदेव राय के दरबार में विभूषित **आठ कवियों** के लिये प्रयुक्त शब्द है।

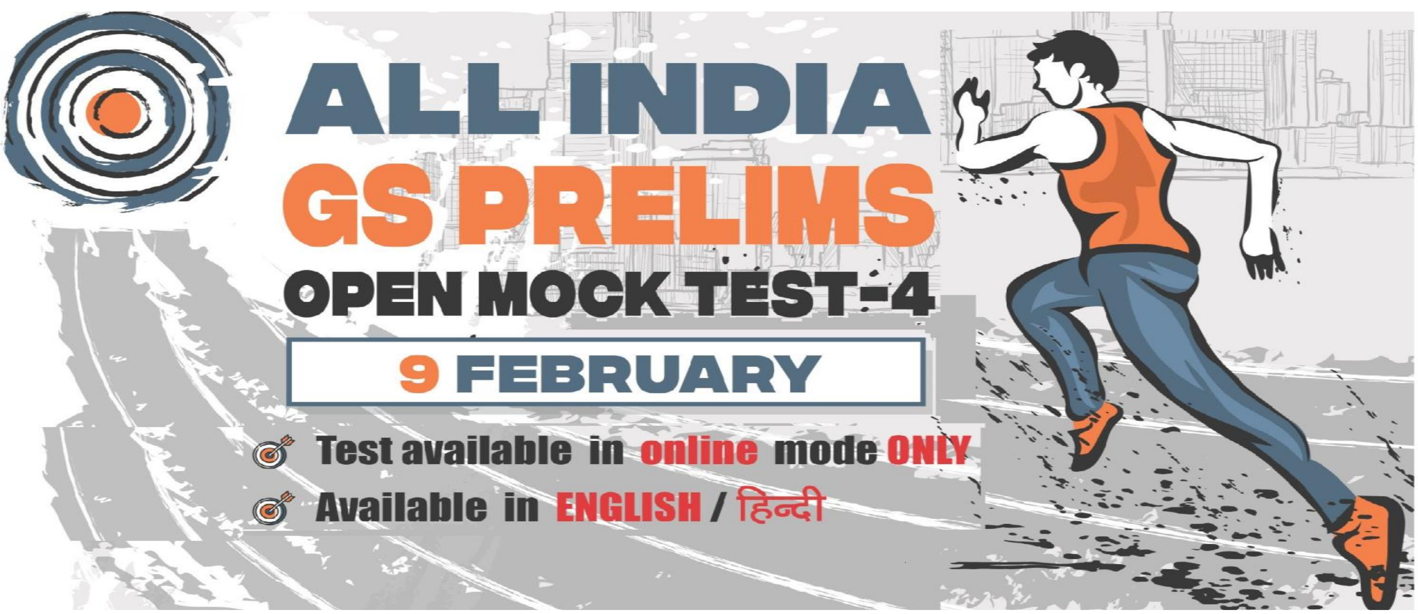

1.5. सुर्ख़ियों में रहे अन्य मंदिर एवं स्थापत्य (Other Temples and Architecture in News)

1.5.1. गांधी सरोवर/ केदारनाथ मंदिर (Gandhi Sarovar/ Kedarnath Temple)

उत्तराखंड में **केदारनाथ मंदिर के पास स्थित गांधी सरोवर भारी हिमस्खलन की चपेट** में आ गया। गांधी सरोवर को **चोराबाड़ी ताल** के नाम से भी जाना जाता है।

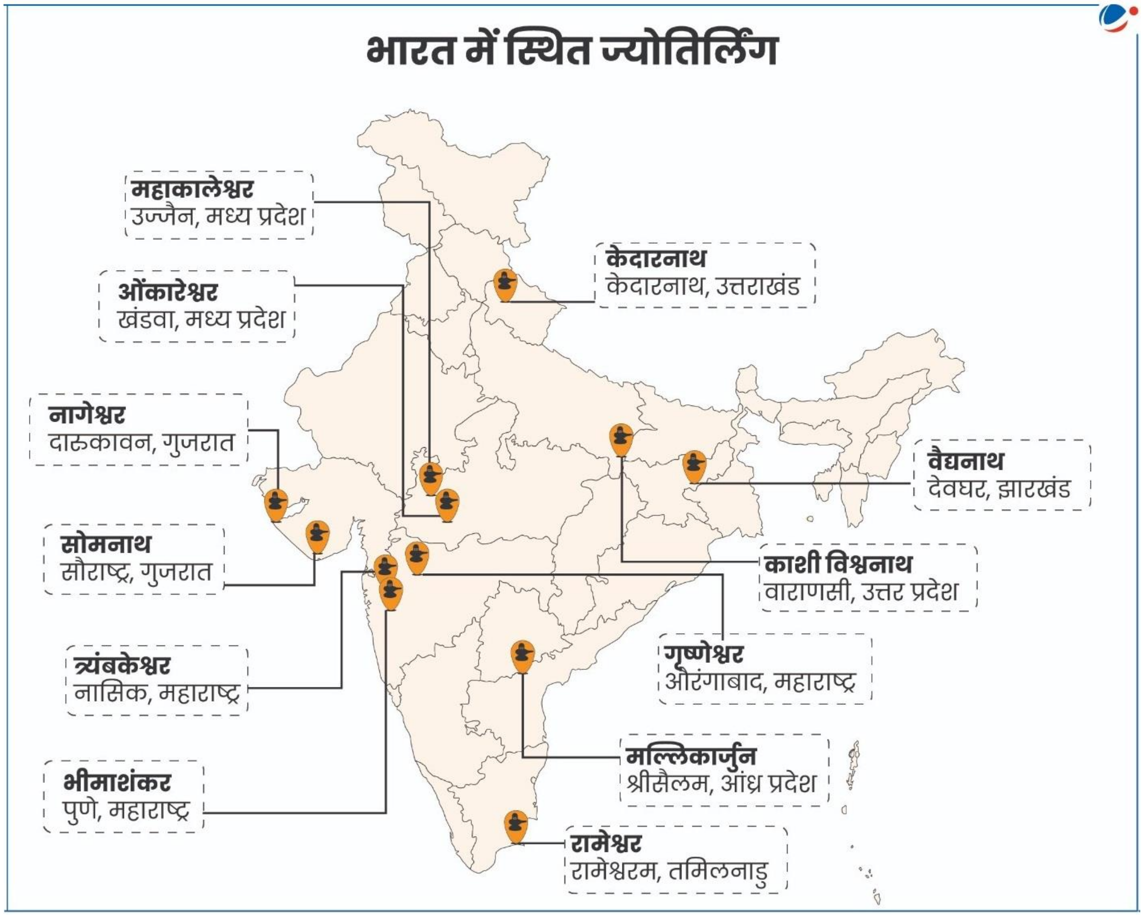

गांधी सरोवर के बारे में

- इसका मूल नाम **कांति सरोवर** है।
- यह झील **चोराबाड़ी बामक ग्लेशियर** से उत्पन्न हुई है।
- ऐसी मान्यता है कि इसी झील के पास **भगवान शिव ने सप्तऋषियों को योग का ज्ञान** दिया था।

केदारनाथ मंदिर के बारे में

- यह **भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों** में से एक है। 12 ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के पवित्र उपासना स्थल हैं।
- यह **उत्तराखंड में चार-धाम यात्रा में शामिल चार पवित्र** स्थलों में से एक है। अन्य तीन पवित्र स्थल (धाम) हैं: **यमुनोत्री, गंगोत्री और बद्रीनाथ।**

1.5.2. संगमेश्वर मंदिर (Sangameshwar Temple)

कृष्णा नदी में बाढ़ के कारण संगमेश्वर मंदिर जलमग्न हो गया।

- यह मंदिर **आंध्र प्रदेश के नांदयाल जिले** में अवस्थित है। यह मंदिर **हर साल श्रीशैलम बांध के बैक वाटर (पश्च जल)** में डूब जाता है।

संगमेश्वर मंदिर के बारे में

- यह मंदिर **नागर शैली** में बना हुआ है और **भगवान शिव** का मंदिर है।
- इसका निर्माण **चालुक्य राजवंश** द्वारा **कृष्णा और भवनासी** नदियों के साथ-साथ पांच अन्य सहायक नदियों **वेणी, तुंग, भद्रा, भीमरथी और मालापहारिणी** के संगम पर किया गया था। इसलिए इसका नाम संगमेश्वर पड़ा।

भारत में अन्य संगमेश्वर मंदिर

- तेलंगाना में स्थित **श्री केतकी संगमेश्वर स्वामी मंदिर;**
- तमिलनाडु में स्थित **भवानी संगमेश्वर मंदिर;** तथा
- कर्नाटक का **संगमेश्वर मंदिर।** यह मंदिर **पट्टदकल** में यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध स्मारकों के समूह का हिस्सा है।

1.5.3. कामाख्या मंदिर (Kamakhya temple)

असम के कामाख्या मंदिर में **अंबुबाची मेले** का आयोजन हुआ।

- यहां हर साल **अंबुबाची मेला** आयोजित होता है। इसे **देवी कामाख्या (शक्तिपीठ) के वार्षिक रजस्वला** के उपलक्ष्य में आयोजित किया जाता है।

कामाख्या मंदिर के बारे में

- कामाख्या मंदिर असम के **गुवाहाटी में नीलाचल पहाड़ी (या कामगिरि)** पर अवस्थित है।
- मूल मंदिर को **काला पहाड़ ने नष्ट** कर दिया था। 16वीं शताब्दी के मध्य में **कोच राजवंश द्वारा इसका पुनर्निर्माण** कराया गया था।
    - इस मंदिर का पुनर्निर्माण **वास्तुकला की नीलाचल शैली में** किया गया है।
    - **स्थापत्य शैली: ऊपरी बर्मा** (ताई प्रवासियों की) और **बंगाल की पाल शैली** मिश्रित होकर **अहोम स्थापत्य शैली** के रूप में विकसित हुई।
- यह **51 शक्तिपीठों** में से एक है। ऐसा माना जाता है कि **कामाख्या मंदिर वाली जगह पर देवी सती के शरीर का योनी वाला भाग गिरा** था।
    - यह स्थान **तांत्रिक पूजा** का भी केंद्र है।
    - यह मंदिर **आर्य और अनार्य, दोनों समुदायों की मान्यताओं एवं प्रथाओं** का केंद्र है।

1.5.4. ज्योतिर्मठ या जोशीमठ (Jyotirmath or Joshimath)

केंद्र सरकार ने उत्तराखंड सरकार के **चमोली जिले की जोशीमठ तहसील का नाम बदलकर ज्योतिर्मठ** और **नैनीताल जिले की कोश्याकुटोली तहसील का नाम बदलकर परगना श्री कैंची धाम** करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

ज्योतिर्मठ के बारे में

- यह **8वीं शताब्दी के दार्शनिक आदि शंकराचार्य** द्वारा देश भर में स्थापित **चार प्रमुख मठों में से एक** है। आदि शंकराचार्य ने **अद्वैत वेदांत दर्शन** के प्रसार के उद्देश्य से इन मठों की स्थापना की थी।
    - अद्वैत वेदांत दर्शन वास्तव में वेदांत का एक रूप है। इसे **"अद्वैतवाद"** दर्शन कहा जाता है।
    - अद्वैत सिद्धांत के अनुसार केवल ब्रह्म अंतिम सत्य है और परिवर्तनशील दिखने वाला संसार केवल ब्रह्म की माया (रचनात्मक ऊर्जा) है और आत्मा यथार्थ रूप में ब्रह्म से अलग नहीं है। ब्रह्म वास्तव में **उत्तर-वैदिक काल का परम, पारलौकिक और अंतर्यामी ईश्वर** है।
- ऐसा माना जाता है कि **आदि शंकराचार्य** ने ज्योतिर्मठ में **अमर कल्पवृक्ष** नामक वृक्ष के नीचे तपस्या की थी।
- इस स्थान को **भगवान बद्रीनाथ के शीतकालीन निवास** के रूप में भी जाना जाता है।
- यह **नंदा देवी चोटी** पर चढ़ने वाले पर्वतारोहियों के लिए एक आधार शिविर है।

1.5.5. अलगर मंदिर, तमिलनाडु (Alagar Temple, Tamil Nadu)

वैगई नदी से भगवान कल्लालगर की शोभा यात्रा पूर्ण होने के साथ ही **चितिराई उत्सव** संपन्न हुआ।

अलगर मंदिर के बारे में

- यह मंदिर **तमिलनाडु के मदुरै में आलगर पहाड़ियों की तलहटी** में अवस्थित है।
- यह **मंदिर भगवान विष्णु के 108 अधिष्ठानों (दिव्य देशम)** में से एक है। यहां भगवान विष्णु की पूजा **कल्लालगर के नाम** से की जाती है।
- मंदिर में **छह गलियारे हैं, जो किले की प्राचीरों से घिरे** हुए हैं।
- इस मंदिर का उल्लेख **तमिल महाकाव्य शिलप्पादिकारम और आलवार संतों के भजनों** में भी मिलता है।
- मंडप के स्तंभों को **नायक कला शैली में अलंकृत** किया गया है।

1.5.6. श्री माधव पेरुमल मंदिर (Sri Madhava Perumal Temple)

श्री माधव पेरुमल मंदिर काफी हद तक **भवानी सागर बांध** के कारण डूबा हुआ था। इस मंदिर में पाए गए अभिलेखों से 1000 साल पुराने व्यापार मार्ग का पता चलता है।

व्यापार मार्ग के बारे में

- यह मार्ग **भवानी नदी और मोयार नदी** को पार करके **पश्चिमी तमिलनाडु के कोंगु क्षेत्र को दक्षिणी कर्नाटक और केरल से जोड़ता** था।
- **1338 ई. में वीर सिद्ध केथतया दंडनायक** ने श्री माधव पेरुमल मंदिर का निर्माण कराया था।
- यह मंदिर **तोंडरीश्वरमुदियार (भगवान शिव)** को समर्पित है।
- इस मंदिर का क्षेत्र **होयसल शासकों** के अधीन था।

1.5.7. केसरिया स्तूप (Kesariya Stupa)

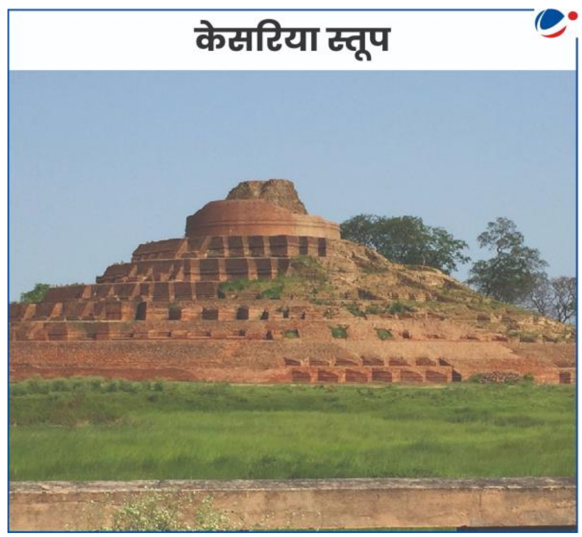

केसरिया स्तूप **विश्व का सबसे ऊंचा और सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप** है।

केसरिया स्तूप के बारे में

- यह **बिहार** के **पूर्वी चंपारण** जिले में स्थित है।
- **संरचना:** इसकी आकृति **गोलाकार** है। इसे **ईंट, मिट्टी और चूने के मोर्टार** से बनाया गया है।
  - इसकी **ऊंचाई 104 फीट** है। इस तरह यह **जावा (इंडोनेशिया) में स्थित विश्व धरोहर स्मारक "बोरोबुदुर स्तूप"** से भी ऊंचा है।
  - भारत की यात्रा करने वाले चीनी यात्रियों में **फाह्यान (5वीं शताब्दी ईस्वी)** और **ह्वेन त्सांग (7वीं शताब्दी ईस्वी)** ने भी इस स्तूप का उल्लेख किया है।
- **महत्त्व:** ऐसा माना जाता है कि इस स्तूप का निर्माण उस स्थान की याद में किया गया था, जहां **भगवान बुद्ध ने अपना 22वां उपदेश** दिया था। इसी जगह पर उन्होंने **अपनी मृत्यु (महापरिनिर्वाण) की भविष्यवाणी** की थी।
  - जब बुद्ध केसरिया की यात्रा पर आये थे तब उन्होंने घोषणा की थी कि वे पूर्व जन्म में **'चक्रवर्ती सम्राट'** थे। इस घोषणा का अंकन केसरिया स्तूप पर है।
  - इसी दौरान बुद्ध ने लिच्छिवियों को **"भिक्षापात्र"** देकर उन्हें वैशाली लौट जाने के लिए भी कहा था।

- बुद्ध के आगमन की स्मृति में **लिच्छवियों** ने यहां स्तूप का निर्माण कराया था। समय के साथ **मौर्य, शुंग व कुषाण** काल के दौरान इसमें कई परिवर्तन किए गए और यह अंततः **ईंट निर्मित स्तूप** बन गया।

1.5.8. चंद्रवल्ली गुफा परिसर (Chandravalli Cave Complex)

यह गुफा परिसर **कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले** में स्थित है। यह अपनी मरम्मत और रखरखाव की आवश्यकता के कारण चर्चा में रहा।

चंद्रवल्ली गुफा परिसर के बारे में

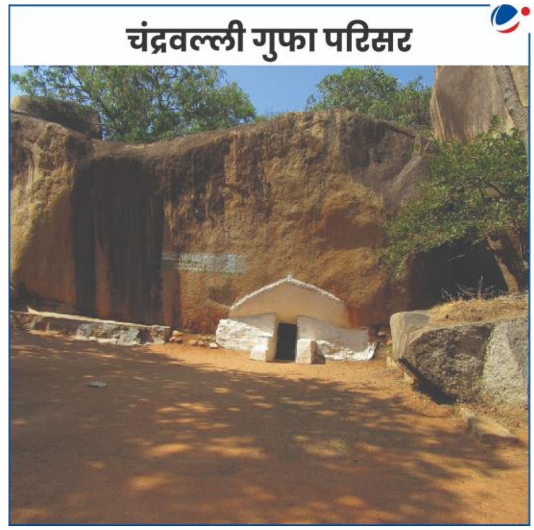

- **उत्पत्ति:** यह प्रागैतिहासिक काल का है। यहां लौह युग की मानव बस्तियों के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। इसे **अनकली मठ** के नाम से भी जाना जाता है।
- **भौतिक विशेषताएं:** यहां के एक गुफा कक्ष में उपासना स्थल है जिसमें एक शिवलिंग प्रतिष्ठापित है। इसके अलावा आगंतुकों और साधुओं के लिए एक कक्ष; एक बैठक या स्वागत कक्ष, एक शयनकक्ष, एक आंतरिक हौज से जुड़ा जल का निर्गम द्वार और एक पुस्तकालय शामिल हैं।
- **भौगोलिक अवस्थिति:** यह दो विशाल एकाश्म चट्टानों के बीच स्थित है। यह परिसर **तीन पहाड़ियों (चित्रदुर्ग, किरबनकल्लू और जोलागुड्डा)** से घिरा हुआ है।
- **राजवंश और कलाकृतियां:** इस गुफा परिसर से **सातवाहन, होयसल, विजयनगर, रोमन और चीनी शासकों के सिक्के** तथा **चित्रित मृदभांड, और अभिलेख** प्राप्त हुए हैं।
  - **कदंब वंश के राजा मयूरशर्मा का 450 ई. का एक शिलालेख** इसके ऐतिहासिक महत्त्व को दर्शाता है।
  - पौराणिक रूप से यह **कुंतल के राजा चंद्रहास** से जुड़ा हुआ है। इसकी वजह से यह स्थल पौराणिक माना जाता है।
- **सांस्कृतिक महत्त्व:** माना जाता है कि इसका उपयोग **अनकलगी** के संतों द्वारा ध्यान लगाने के लिए और संभवतः एक शैक्षिक केंद्र (गुरुकुल) के रूप में किया जाता था।

 © Vision IAS

2. मूर्तिकला, चित्रकला और अन्य कला शैलियां (Sculptures, Paintings and Other Forms of Art)

2.1. शास्त्रीय भाषा (Classical Language)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने **मराठी** (महाराष्ट्र), **पाली और प्राकृत** (बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश), **असमिया** (असम) और **बंगाली** (पश्चिम बंगाल) भाषाओं को **शास्त्रीय भाषा का दर्जा** देने को मंजूरी दी।

शास्त्रीय भाषा के बारे में

- भारत सरकार ने पहली बार **2004 में भाषाओं की एक नई श्रेणी 'शास्त्रीय भाषाएं'** की शुरुआत की थी।
    - शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने हेतु प्रस्तावित भाषाओं की पात्रता की जांच करने के लिए 2004 में **संस्कृति मंत्रालय ने साहित्य अकादमी** के तहत **भाषाई विशेषज्ञ समिति (LEC)**[2] का गठन किया।
- इससे पहले, **छह** भारतीय भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया जा चुका है। ये हैं- **तमिल** (2004), **संस्कृत** (2005), **तेलुगु** और **कन्नड़** (2008), **मलयालम** (2013) तथा **उड़िया** (2014)।
    - ये सभी शास्त्रीय भाषाएं **संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध** हैं।
- किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित करने के मानदंड को 2024 में **भाषाई विशेषज्ञ समिति ने** फिर से संशोधित किया था।
    - **'मौलिक साहित्यिक परंपरा[3]' संबंधी मानदंड को 2005 के संशोधित मानदंडों से हटा** दिया गया। समिति के अनुसार, **'मौलिक साहित्यिक परंपरा' को साबित करना या अस्वीकार करना बहुत मुश्किल** है। ऐसा इसलिए क्योंकि सभी प्राचीन भाषाएं एक-दूसरे से प्रभावित रही हैं।
- **शास्त्रीय भाषा के दर्जे के लाभ:** शास्त्रीय भाषा के विद्वानों को प्रत्येक वर्ष दो प्रमुख पुरस्कार दिए जाते हैं; अध्ययन के लिए समर्पित केंद्र और केंद्रीय विश्वविद्यालयों में UGC द्वारा भाषा पीठ स्थापित किए जाते हैं; आदि।

नई शास्त्रीय भाषाओं के बारे में

- **प्राकृत:** यह **इंडो-आर्यन (भारोपीय) भाषाओं का निकटता से संबंधित एक समूह** है।
    - दरअसल प्राचीन भारत में संस्कृत अभिजात वर्ग की बोलचाल और साहित्यिक कृतियों तक सीमित थी, वहीं प्राकृत आमजन की भाषा थी।
    - **प्राकृत वास्तव में क्षेत्रीय भाषा उप-प्रकारों को दर्शाती है। बौद्ध साहित्य** पालि भाषा में लिखे गए हैं। यह प्राकृत भाषा का एक रूप है।

---

[2] Linguistic Experts Committee

[3] Original literary tradition

- गुप्तकाल से पहले के शिलालेख विशेषकर अशोक के शिलालेख प्राकृत भाषा में हैं।
- **गुप्त शासकों के समय तक**, प्राकृत भाषा का मानकीकरण हो गया था और इसने **अपनी स्थानीय विशेषताएं** खो दी थी।

- **पालि:** पारंपरिक रूप से इसकी **पहचान मागधी प्राकृत** से की गई है। **धम्मपद** जैसी प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक रचनाएं और **जातक कथाएं पालि** भाषा में लिखी गई हैं।
  - पालि को थेरवाद बौद्ध संप्रदाय की भाषा के रूप में जाना जाता है। **बौद्ध पालि ग्रन्थ तीन सामान्य भागों या तीन पिटारी में विभाजित** है। इन्हें **त्रिपिटक** कहा जाता है। इनमें शामिल हैं:
    - **विनय पिटक (अनुशासन ग्रंथ):** यह बौद्ध संघ और मठ के नियमों या अनुशासन से संबंधित ग्रंथ है।
    - **सुत्त पिटक (उपदेश ग्रंथ):** यह सबसे बड़ा त्रिपिटक है। इसमें भगवान बुद्ध के उपदेश, और कुछ धार्मिक कविताएं शामिल हैं।
    - **अभिधम्मपिटक:** यह बौद्ध धर्म के दर्शन का संग्रह है।
  - इसकी प्रमुख शब्दावलियां हैं- **"चित्त" (चेतना), "चेतसिक" (चित्त या चेतन संबंधी), "रूप" (भौतिक),** और **"निब्बान" (अंतिम मुक्ति)।**
- **मराठी:** मराठी इंडो-आर्यन (भारोपीय) भाषा है।
  - **आधुनिक मराठी का उद्भव महाराष्ट्री प्राकृत** से हुआ है, जो पश्चिमी भारत में बोली जाने वाली प्राकृत भाषा थी। गौरतलब है कि **महाराष्ट्री प्राकृत सातवाहनों की राजकीय भाषा** थी।
  - आधुनिक मराठी का सबसे प्रारंभिक प्रमाण सतारा के एक ताम्र-पट्टिका शिलालेख से पाया गया है, जो 739 ई. का है।
- **बंगाली और असमिया:** इन दोनों भाषाओं की उत्पत्ति **मागधी प्राकृत** से हुआ है। **मागधी प्राकृत** पूर्वी भारत में लोकप्रिय भाषा थी। **मागधी, मगध दरबार की राजकीय भाषा** थी।

प्राकृत भाषा के अन्य रूप

- **अर्धमागधी प्राकृत:** यह **प्राचीन मगध साम्राज्य** (आधुनिक बिहार) और मौर्य साम्राज्य में बोली जाती थी।
  - भगवान महावीर का जन्म मगध में हुआ था। **सबसे प्रारंभिक जैन ग्रंथ अर्धमागधी में** लिखे गए थे।
- **शौरसेनी प्राकृत:** मूल रूप से आधुनिक उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में बोली जाती थी।
  - शौरसेनी भाषा विशेष रूप से महिलाओं और समाज के हाशिये वाले तबके के सम्मानित लोगों द्वारा नाटक मंचन के दौरान बोली जाती थी।
- **महाराष्ट्री:** यह उत्तर-पश्चिमी दक्कन क्षेत्र में बोली जाती थी।
  - महाराष्ट्री प्राकृत साहित्यिक भाषा थी, जो विशेष रूप से गीतों की रचना के लिए उपयोग की जाती थी।

शास्त्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम

- **विशेष संस्थानों की स्थापना:**
  - **संस्कृत के लिए:** राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली; महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद-विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन; राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति; आदि।
  - **तेलुगु और कन्नड़ के लिए:** केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL) में संबंधित भाषाओं के लिए 2011 में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर स्टडीज स्थापित किए गए।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020:** इसमें शास्त्रीय भाषाओं सहित सभी भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है।
- **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** केंद्रीय विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों में भारत की शास्त्रीय भाषाओं के लिए भाषा पीठ की स्थापना का समर्थन करता है।
- **राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन:** इसका मुख्य उद्देश्य भारत की पांडुलिपि विरासत का दस्तावेज़ीकरण, संरक्षण, डिजिटलीकरण और ऑनलाइन प्रसार है।
  - अधिकतर भारतीय लिपियों का उपयोग लेखन के लिए किया गया है। 70% पांडुलिपियां संस्कृत भाषा में हैं। अन्य 30% पांडुलिपियां असमिया, बंगाली, मलयालम, मराठी, उड़िया, तमिल आदि भाषाओं में लिखी गई हैं।

2.2. तोलू बोम्मालट्टा (Tholu Bommalata)

सुर्ख़ियों में क्यों?

संगीत नाटक अकादमी तोलू बोम्मालट्टा पुतली की **प्राचीन नाट्य प्रदर्शन परंपरा** को पुनर्जीवित कर रही है। उल्लेखनीय है कि यह कला विलुप्त होने की कगार पर आ गई है।

© Vision IAS

तोलू बोम्मालट्टा के बारे में

- इसे **चमड़े की बनी गुड़ियों** के नृत्य के रूप में भी जाना जाता है।
- इसका प्रदर्शन मुख्य रूप से **आंध्र प्रदेश के गोदावरी क्षेत्र** में होता है।
- इन गुड़ियों को **बकरी की खाल (चमड़े)** से बनाया जाता है। इनके नृत्य का प्रदर्शन एक छोटी स्क्रीन (जैसे रंगीन फोटोग्राफिक पारदर्शिताओं) पर किया जाता है।
- **मुख्य स्क्रीन पात्र:** जानवर, पक्षी, देवता और राक्षस।
- **मुख्य विषय:** रामायण व महाभारत।

भारतीय कठपुतली कला

- भारत में **पुतली कला के चार प्रमुख प्रकार** हैं, जिन्हें निम्नलिखित में वर्गीकृत किया गया है:

धागा पुतली

- धागा पुतली (या कठपुतली) में संयुक्त अंग होते हैं, इनके जोड़ युक्त अंग तथा **धागों द्वारा संचालन इन्हें अत्यंत लचीलापन प्रदान करते हैं।** इसलिए, इन्हे पुतली का सबसे मुखर रूप कहा जाता है।

- **क्षेत्र:** राजस्थान, ओडिशा, कर्नाटक और तमिलनाडु।
- **उदाहरण:**
  - **कठपुतली** (राजस्थान),
  - **गोम्बेयेट्टा** (कर्नाटक),
  - **बोम्मलट्टम** (यह छड़ और धागा पुतली का मिश्रण है) (तमिलनाडु),
  - **कुनढेई** (ओडिशा)।

छाया पुतली

- छाया पुतलियां चपटी होती हैं, अधिकांशत: वे **चमड़े से निर्मित होती हैं।** उन्हें पारभासी बनाने के लिए संशोधित किया जाता है।

- **क्षेत्र:** ओडिशा, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु।
- **उदाहरण:**
  - **रावणछाया** (ओडिशा),
  - **तोगालुगोम्बेयट्टा** (कर्नाटक),
  - **तोलु बोम्मालट्टा** (आंध्र प्रदेश)।

दस्ताना पुतली

- दस्ताना पुतली को भुजा, कर या हथेली पुतली भी कहा जाता है। **उत्तर प्रदेश** के दस्ताना पुतली नाटक **सामाजिक विषय वस्तु** प्रस्तुत करते हैं, तो **ओडिशा** में ये नाटक **राधा-कृष्ण** की कहानियों पर आधारित होते हैं।

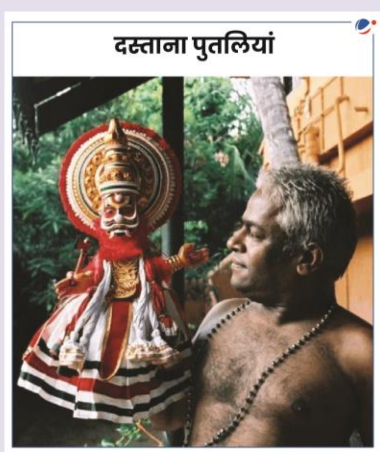

छड़ पुतली

- छड़ पुतली वैसे तो **दस्ताना पुतली का अगला चरण है,** लेकिन यह उससे काफी बड़ी होती है तथा नीचे स्थित छड़ों पर आधारित रहती है और उसी से संचालित होती है।
- **क्षेत्र:** पश्चिम बंगाल तथा ओडिशा।
- **उदाहरण: पुतुल नाच, यमपुरी (बिहार)।**

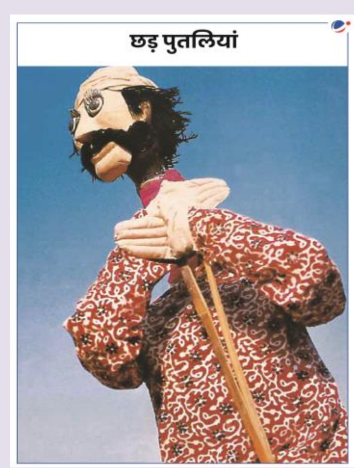

• **क्षेत्र:** उत्तर प्रदेश, ओडिशा, पश्चिमी बंगाल और केरल। • **उदाहरण: पावाकूथू,** केरल का पारंपरिक दस्ताना पुतली नाटक है।	

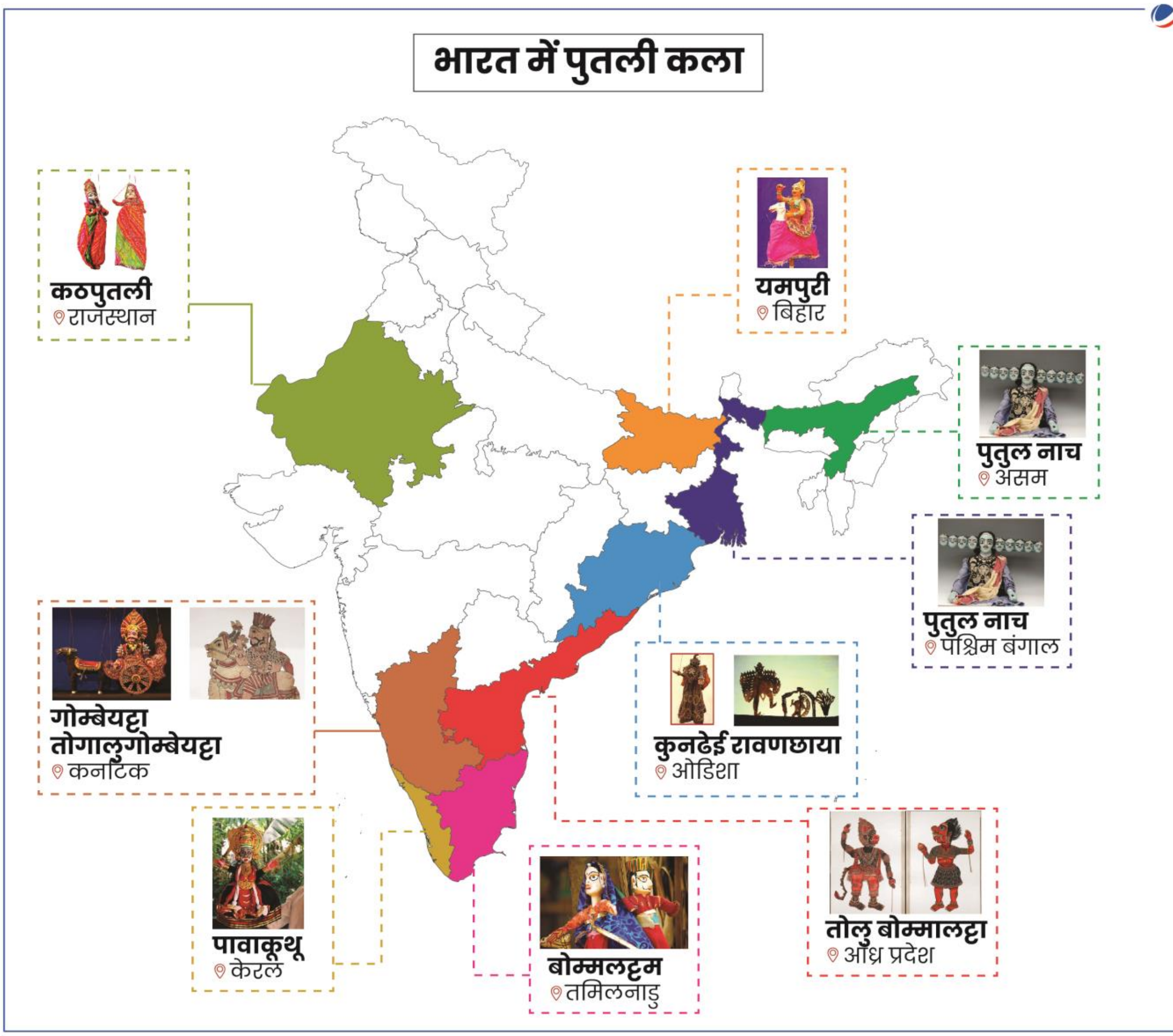

2.3. सुर्ख़ियों में रही चित्रकारियां (Paintings in News)

चित्रकारी के प्रकार	मुख्य विशेषताएं	सांस्कृतिक/ भौगोलिक संदर्भ
सोहराई पेंटिंग (Sohrai painting)	• यह मुख्य रूप से **भित्ति चित्रकला** का रूप है। इसमें **मिट्टी के घरों की दीवारों पर सुंदर चित्र** बनाए गए हैं। • चित्र बनाने में **प्राकृतिक रंगद्रव्य, ब्रश के रूप में अक्सर टहनियों, चावल की भूसी या अपनी उंगलियों** का इस्तेमाल करते हैं। • सोहराई पेंटिंग में **जानवरों, पक्षियों, और प्रकृति** का चित्रण होता है। ये चित्र जनजातीय संस्कृति में **कृषि जीवन शैली के प्रति श्रद्धा का प्रतिनिधित्व** करते हैं। • सोहराई-खोवर पेंटिंग्स को **भौगोलिक संकेतक (जी.आई.) टैग** भी मिल चुका है।	• **उत्पत्ति:** यह कला **झारखंड के हजारीबाग जिले में प्रचलित** है। • सोहराई त्यौहार के अवसर पर स्थानीय आदिवासी महिलाएं अपने **मिट्टी के घरों की दीवारों पर सुंदर चित्र** बनाती हैं। 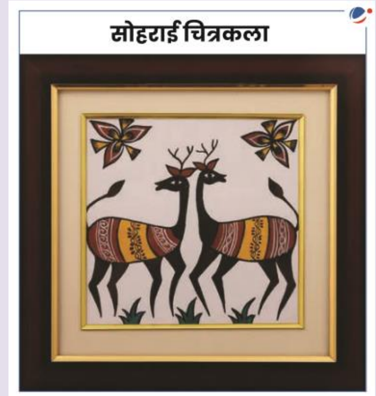
माता नी पछेड़ी चित्रकला	• यह एक धार्मिक टेक्सटाइल लोक कला है। • इस शैली की पेंटिंग के केंद्र में **देवी** चित्रित होती हैं। इनके चारों ओर **भक्तों, वनस्पतियों और जीवों** का चित्र बनाया जाता है। • इस पेंटिंग में मुख्य रूप से **मैरून, काले, सफेद रंग** का इस्तेमाल किया जाता है। चित्र बनाने के लिए बांस की छड़ी से बने **कलम** का उपयोग किया जाता है।	• **उत्पत्ति: गुजरात,** यह शैली **कलमकारी शैली** से प्रभावित है। • **वाघरी समुदाय** इन पछेड़ियों की पेंटिंग के लिए जाने जाते हैं। • माता नी पछेड़ी से आशय है **"देवी मां की मूर्ति के पीछे"**। 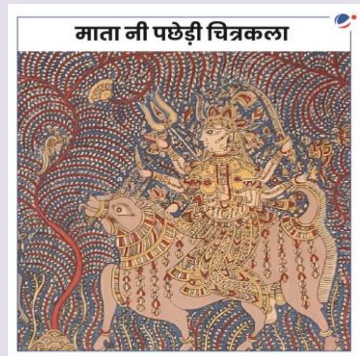
कुमित्तिपति शैल चित्रकला	• माना जाता है कि यह **3000 साल पुरानी** है। • कलाकारों ने आकृतियों को चित्रित करने के लिए **प्राकृतिक गोंद के साथ-साथ एक अकार्बनिक सफेद रंगद्रव्य** का भी उपयोग किया है। • इन चित्रों में एक **हाथी, थेर (एक रथ या कुछ विद्वानों के अनुसार मोर पक्षी), और प्रारंभिक निवासियों** के जीवन को चित्रित किया गया है। • **तमिलनाडु** में अधिकांश शैलचित्र **स्थल शैलाश्रयों** पर पाए जाते हैं, लेकिन कुमित्तिपति में शैल चित्र एक गुफा के अंदर बनाए गए हैं।	• **अवस्थिति: कुमित्तिपति,** तमिलनाडु। • इसमें **थेर (एक रथ या कुछ विद्वानों के अनुसार मोर पक्षी), और प्रारंभिक निवासियों** के जीवन को चित्रित किया गया है। 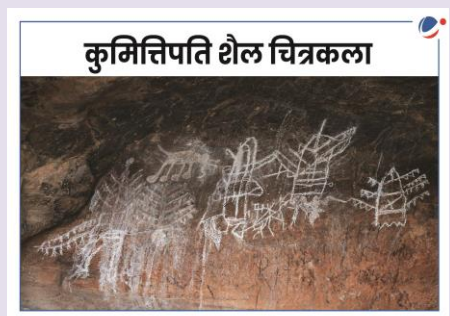
केरल भित्ति चित्रकारी	• उत्कृष्ट रेखाचित्रण के लिए ख्याति प्राप्त है (वहीं **अजंता भित्तिचित्रों में रंग पर अधिक जोर** दिया गया है)। • **हिंदू पौराणिक कथाओं और महाकाव्यों का चित्रण** प्राप्त होता है। • **चित्रकांड में हिंदू महाकाव्यों के दृश्य** चित्रित किए गए हैं। • **चरमोत्कर्ष काल:** 14वीं शताब्दी ई. (भित्तिचित्रों वाले 150 से अधिक मंदिर)।	• **उत्पत्ति: केरल** (8वीं शताब्दी ई.)। प्राचीनतम ज्ञात भित्ति चित्र **तिरुनंदिकारा गुफा मंदिर** में हैं। • **प्रसिद्ध स्थान:** कुमारनल्लूर देवी मंदिर, गुरुवायूर, एट्टुमानूर, मट्टनचेरी पैलेस। • **भक्ति आंदोलन और प्रकृति से प्रभावित।**

2.4. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News)

2.4.1. कुचिपुड़ी नृत्य (Kuchipudi Dance)

प्राप्त जानकारी के अनुसार **कुचीपुड़ी नृत्य के कलाकार अपने जीवनयापन के लिए संघर्ष** कर रहे हैं।

कुचीपुड़ी नृत्य के बारे में

- यह **भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली** है। इसकी उत्पत्ति **आंध्र प्रदेश के कुचीपुड़ी गांव** में हुई थी।
- पहले इस नृत्य में केवल पुरुष ही भाग लेते थे। हालांकि, अब पूरे भारत में **महिला कुचीपुड़ी नृत्यांगना** प्रमुखता प्राप्त कर रही हैं।

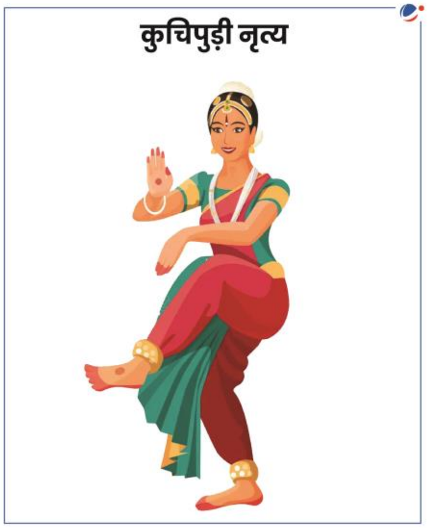

प्रमुख विशेषताएं

- नृत्य की इस शैली को **पैरों के तीव्र संचालन, जीवंत नेत्र भाव-भंगिमाओं** आदि के लिए जाना जाता है।
- कुचीपुड़ी नृत्य शैली की एक मुख्य विशेषता **'तरंगम'** है। इसके अंतर्गत कलाकार **पीतल की थाली के किनारे पर पैर** रखकर नृत्य करता है।
- कुचीपुड़ी **नृत्य की दो शैलियां हैं:** नृत्य-नाटक तथा एकल नृत्य-प्रस्तुति।
- 17वीं शताब्दी में एक प्रतिभाशाली वैष्णव कवि तथा द्रष्टा **सिद्धेंद्र योगी ने यक्षगान के रूप में कुचीपुड़ी शैली की कल्पना** की थी। यक्षगान **कर्नाटक** का लोक नृत्य है।

भारत में 8 शास्त्रीय नृत्य हैं- भरतनाट्यम, कथक, कथकली, कुचिपुड़ी, ओडिसी, सत्रीय, मोहिनीअट्टम और मणिपुरी।

2.4.2. मोहिनीअट्टम नृत्य (Mohiniyattam)

केरल कलामंडलम ने मोहिनीअट्टम नृत्य सीखने से संबंधित लड़कों पर लगा प्रतिबंध हटा दिया है।

मोहिनीअट्टम नृत्य के बारे में

- यह **केरल का शास्त्रीय एकल नृत्य (सोलो डांस)** है।
- पारंपरिक रूप से यह **महिला कलाकारों** द्वारा किया जाने वाला सोलो डांस है। इसमें नृत्य और गायन के माध्यम से नाट्य की प्रस्तुति की जाती है।
- इस नृत्य का उल्लेख **1709 में मज्हमंगलम नारायणन नम्बुतिरि द्वारा लिखित 'व्यवहारमाला'** और बाद में कवि **कुंजन नांबियार द्वारा लिखित 'घोषयात्रा'** में मिलता है।
- **नृत्य के प्रमुख विषय:** ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति। आमतौर पर **भगवान विष्णु या उनके अवतार भगवान कृष्ण** इस नृत्य के मुख्य पात्र होते हैं।
- **विशेषताएं:**
  - मोहिनीअट्टम के तहत **40 अलग-अलग मूल मुद्राएं** होती हैं, जिन्हें **'एड़वुकल'** कहा जाता है।
  - बिना किसी अचानक झटके अथवा उछाल के **लालित्यपूर्ण व ढलावदार शारीरिक अभिनय** इस नृत्य की मुख्य विशेषता है।
  - **मुख की अभिव्यक्तियों व हस्त मुद्राओं** को अधिक महत्त्व दिया जाता है।
- **प्रयुक्त वाद्ययंत्र:** मद्दलम, मृदंगम, वीणा, कुझीतालम या झांझ, एडक्का,आदि।

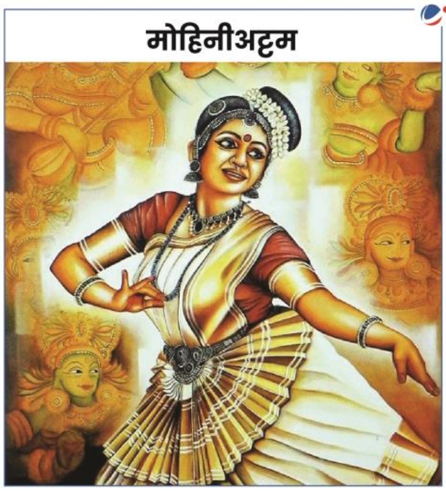

2.4.3. कलारीपयट्टू (Kalaripayattu)

केंद्रीय युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय ने **'भारतीय कलारीपयट्टू महासंघ' को क्षेत्रीय खेल महासंघ** के रूप में मान्यता दी है। इस कदम का उद्देश्य देश में 'कलारीपयट्टू' को बढ़ावा देना है।

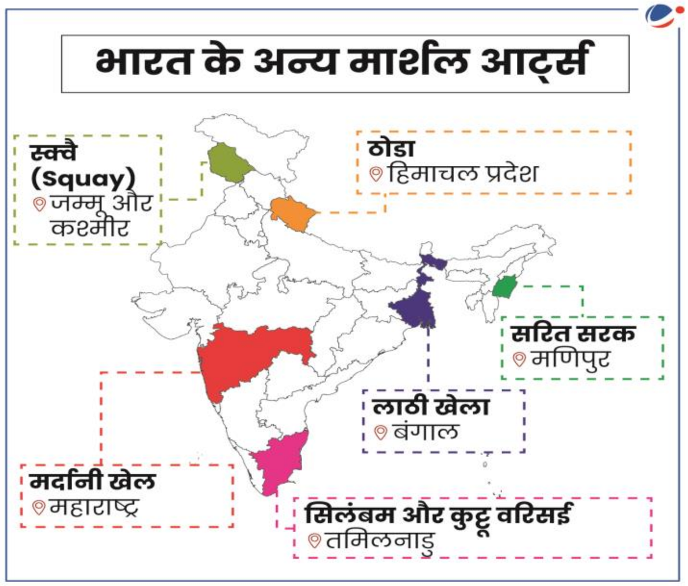

कलारीपयट्टू के बारे में

- इस कला की **उत्पत्ति केरल** में हुई थी। यह **विश्व की सबसे प्राचीन मार्शल आर्ट कलाओं** में से एक है।
- यह अपनी **ऊंची छलांगों वाली कलाबाजी, आकर्षक चालों और घातक हथियारों का सहजता से इस्तेमाल** करने के लिए प्रसिद्ध है।
- **दृष्टिकोण:** मार्शल आर्ट, आयुर्वेद, योग और ध्यान।
- **प्रशिक्षण के उद्देश्य:** शारीरिक सेहतमंदी, आत्मरक्षा, उपचार और मानसिक अनुशासन।
- **इसकी दो मुख्य उप-शैलियां हैं:**
  - **वडक्कन या उत्तरी शैली:** मुख्य रूप से **केरल के मालाबार क्षेत्र** में प्रचलित है।
  - **थेक्केन या दक्षिणी शैली:** यह मुख्य रूप से **त्रावणकोर क्षेत्र** में प्रचलित है।
- इसे **तीन अन्य स्वदेशी खेलों के साथ 2021 के खेलो इंडिया यूथ गेम्स में शामिल** किया गया था। अन्य तीन खेल हैं: **गतका (पंजाब), थांग-ता (मणिपुर)** और **मलखंब (महाराष्ट्र)।**

2.4.4. वचन साहित्य (Vachana Literature)

वचन साहित्य को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रसिद्ध **फकीरप्पा गुरुबसप्पा हलकट्टी** को देश ने उनकी जयंती पर याद किया।

वचन साहित्य के बारे में

- "वचन" शब्द का शाब्दिक अर्थ है **"जो बोला गया है"।**
- वचन दरअसल **कन्नड़ लयबद्ध रचना** का प्रकार है। इसे **कन्नड़ कविता** के रूप में भी जाना जाता है। साहित्य की इस शैली का उदय **11वीं शताब्दी** में हुआ था और **12वीं शताब्दी** में यह **शरण आंदोलन के तत्व** के रूप में फली-फूली थी।
  - ज्ञातव्य है कि **गुरु बसवन्ना ने कर्नाटक में 'शरण आंदोलन'** का नेतृत्व किया था।
  - **'शरण संस्कृति' के सिद्धांत:**
    - **अरिवु** (ज्ञान, जागृति),
    - **आचार** (अभ्यास)
    - **अनुभव** (आध्यात्मिक ज्ञान)
    - **कायक** (शारीरिक श्रम के माध्यम से अर्जन)
    - **दासोह** {बिना किसी 'अहम' (मैं दाता हूँ) के जरूरतमंदों को अपनी कमाई का एक हिस्सा देना।}
- कुछ शोधकर्ता **ग्यारहवीं सदी के मोची-संत मदारा चेन्नैया को "वचन काव्य का जनक"** मानते हैं। चेन्नैया **पश्चिमी चालुक्यों** के शासनकाल के हैं।

2.4.5. तंजावुर वीणा (Thanjavur Veena)

कला में अपने योगदान के लिए प्रसिद्ध, **तमिलनाडु का मंदिरों का शहर तंजावुर** अपनी अनूठी वीणा कला के लिए प्रसिद्ध है।

वीणा के प्रकार:

- **हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत:** रुद्र वीणा और विचित्र वीणा; तथा
- **कर्नाटक शास्त्रीय संगीत:** सरस्वती वीणा और चित्रा वीणा।

तंजावुर वीणा (सरस्वती वीणा) के प्रकार

- तंजावुर **एकमात्र ऐसा स्थान है, जहां सरस्वती वीणा बनाई** जाती है।
- **मान्यता: भौगोलिक संकेतक (GI) टैग प्राप्त करने वाला यह भारत का पहला संगीत वाद्ययंत्र** है।
- **इसके दो प्रकार हैं-**
  - **ओट्टू वीणा:** इसके हिस्से अलग-अलग बनाए जाते हैं और फिर उन्हें जोड़ा जाता है।
  - **एकांत वीणा:** लकड़ी के एक ही टुकड़े से बनाई जाती है।
- **सांस्कृतिक प्रतीक: विद्या और कला की देवी सरस्वती**, वीणा धारण करती हैं।
- **शिल्पकारी:** वीणा बनाने के लिए **कटहल की लकड़ी** का उपयोग किया जाता है और इसमें तीन मुख्य भाग बनते हैं: **अनुनादक** (कुदम), **दंडी**, और **ट्यूनिंग बॉक्स**।

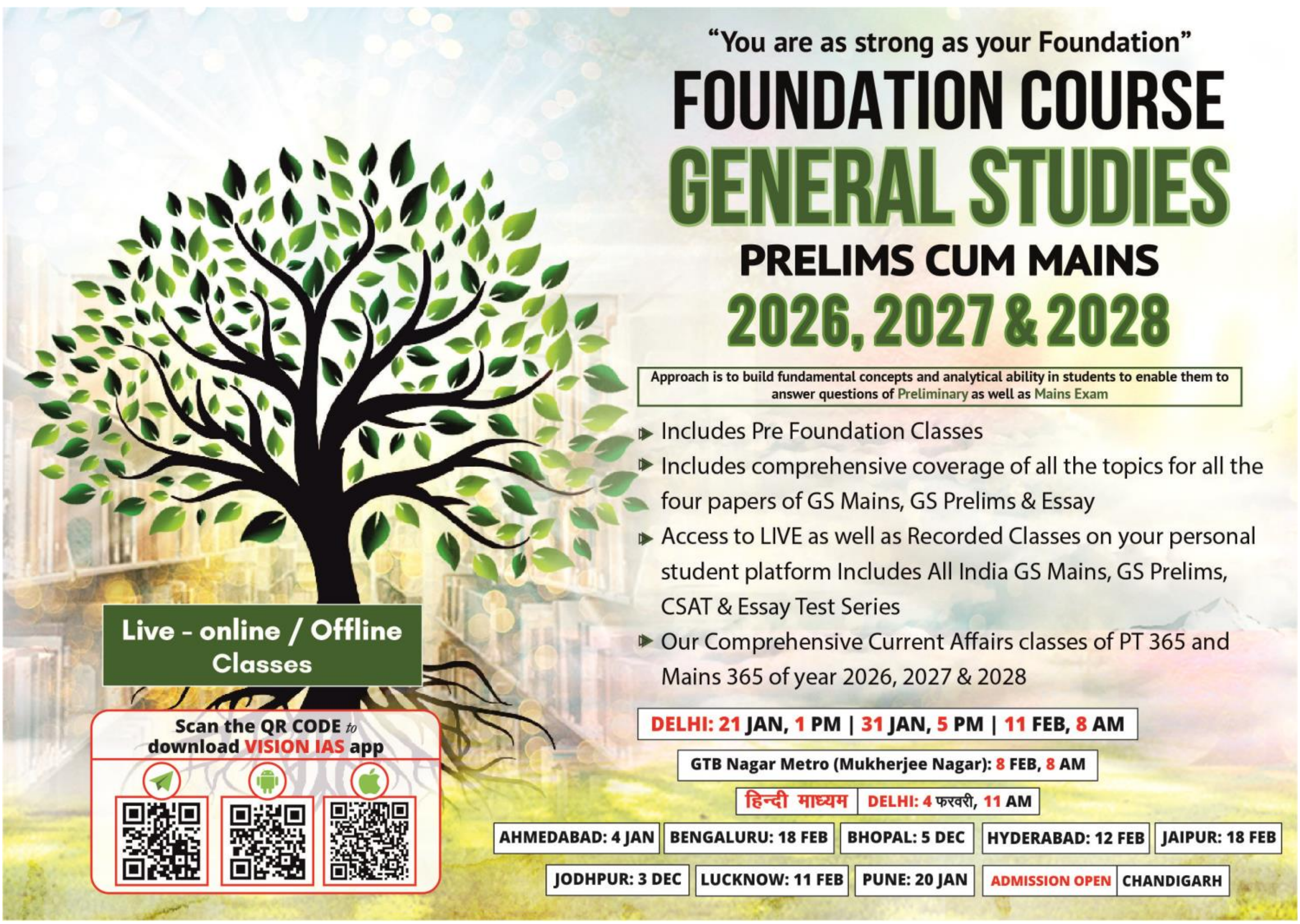

3. सुर्ख़ियों में प्रमुख स्थल (Important Sites in the News)

3.1. चराइदेव मोइदम्स (Charaideo Moidams)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, असम के चराइदेव मोइदम्स (Moidams) को आधिकारिक तौर पर संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) की **विश्व धरोहर सूची** में शामिल किया गया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- 'मोइदम्स' को विश्व धरोहर सूची में शामिल करने की घोषणा **विश्व धरोहर समिति (WHC)**[4] **के 46वें सत्र के दौरान** की गई। यह सत्र **नई दिल्ली** में आयोजित किया गया था।
- अंतर्राष्ट्रीय स्मारक और स्थल परिषद (ICOMOS)[5] ने असम के चराइदेव जिले में स्थित मोइदम्स को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची की सांस्कृतिक संपदा श्रेणी में शामिल करने की सिफारिश की थी।
    - यह पहली बार है जब **पूर्वोत्तर राज्यों के किसी स्थल को विश्व विरासत सूची की सांस्कृतिक श्रेणी के तहत सूचीबद्ध किया गया** है।
- भारत में अब यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों की कुल संख्या 43 हो गई है। इनमें तीन स्थल- **चराइदेव मोइदम्स, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान** और **मानस राष्ट्रीय उद्यान** असम में हैं।

यूनेस्को विश्व धरोहर समिति के बारे में

UNESCO

उत्पत्ति: इसे 1972 में आयोजित यूनेस्को के 17वें सत्र के दौरान **विश्व धरोहर कन्वेंशन (WHC)** के तहत स्थापित किया गया था।

उद्देश्य: "फाइव Cs" जिसमें शामिल हैं- **Credibility (विश्वसनीयता); Conservation (संरक्षण); Capacity Building (क्षमता निर्माण); Communication (संचार);** और **Communities (समुदाय)**

मुख्य भूमिका:
- यह **किसी संपदा को विश्व धरोहर सूची में शामिल करने का अंतिम निर्णय** लेती है।
- यह **विश्व धरोहर कोष** के उपयोग का तरीका निर्धारित करती है और सदस्य देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
- यह विश्व धरोहर सूची में शामिल संपदाओं के संरक्षण की स्थिति पर रिपोर्ट की जांच करती है।

सदस्य: कन्वेंशन के पक्षकार देशों में से **21 प्रतिनिधि** चुने जाते हैं। इन्हें आम सभा द्वारा छह वर्षों के लिए चुना जाता है। **भारत को 2021-2025 के लिए विश्व धरोहर समिति में सदस्य** चुना गया है।

प्रमुख भागीदार:
- **ICCROM:** सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को बढ़ावा।
- **ICOMOS:** स्थापत्य और भूक्षेत्र (landscape) आधारित धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए जिम्मेदार।

विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र में अन्य भारतीय पहलें

- पहली बार भारत ने **विश्व धरोहर समिति** की बैठक की मेजबानी की।
- भारत ने **यूनेस्को विश्व विरासत केंद्र को 1 मिलियन डॉलर का अनुदान** देने की घोषणा की है। भारत ने यह कदम ग्लोबल साउथ के देशों में मौजूद प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण प्रयासों को समर्थन प्रदान करने के लिए उठाया है।
- इस अवसर पर **भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका** ने **सांस्कृतिक संपदा समझौते (CPA)**[6] पर हस्ताक्षर किए हैं। इस **समझौते का उद्देश्य** सांस्कृतिक संपदाओं की अवैध तस्करी को रोकना और पुरातात्विक वस्तुओं को उनके मूल स्थान में वापस लाना है।
- **सांस्कृतिक संपदा समझौता** दरअसल **"सांस्कृतिक परिसंपत्ति के अवैध को रोक लगाने के साधनों पर यूनेस्को कन्वेंशन 1970"** के अनुरूप है।

[4] World Heritage Committee

[5] International Council on Monuments and Sites

[6] Cultural Property Agreement

चराइदेव मोइदम्स के बारे में

- **अवस्थिति:** यह जगह पूर्वी असम में **पटकाई पर्वतमाला** की तलहटी में अवस्थित है।
- **शाही कब्रगाह स्थल:** चराइदेव **ताई-अहोम राजवंश (13वीं-19वीं सदी)** के शाही कब्रगाह हैं। इनकी तुलना मिस्र के पिरामिडों से की जा सकती है।
    - मोइदम्स का मतलब **'आत्मा के लिए घर'** होता है। इसे **स्वर्ग और पृथ्वी का मिलन-बिंदु** माना जाता है।
    - **बुरंजी,** असम में अहोम राजवंश के ऐतिहासिक घटनाक्रमों के संकलन की एक शैली है। ये **शाही कब्रिस्तान क्षेत्रों और इसकी आध्यात्मिक महत्ता के बारे में जानकारी प्राप्त करने के प्रामाणिक स्रोत** भी हैं।
- **स्थापत्य संबंधी विशेषताएं:** मोइदम्स के नजदीक बरगद का वृक्ष तथा ताबूत और पांडुलिपियों के लिए छाल वाले वृक्ष लगाए गए हैं। इसके अलावा, **इनके पास जल निकाय भी निर्मित** किए गए हैं। प्रत्येक मोइदम में निम्नलिखित संरचनाएं शामिल हैं:
    - यह **मिट्टी का एक अर्धगोलाकार टीला** (गा-मोइदम) होता है जिसके शीर्ष पर **केंद्र में पवित्र संरचना (चाउ चाली)** बनी होती है।
    - **अष्टकोणीय दीवार** (गढ़) जो **ताई ब्रह्मांड का प्रतीक** है।
    - **ईंट-पत्थर से बना वॉल्ट** होता है। इस वॉल्ट के भीतर एक कब्रगाह गड्ढा (गरवहा) होता है।
- **सुरक्षा अधिकारी:** अहोम के शासनकाल के दौरान, मोइदम्स की सुरक्षा मोइदम फुकन नामक विशेष अधिकारियों और **मोइदमिया** नामक एक रक्षक समूह द्वारा की जाती थी।
- **मृत्यु के बाद पुनर्जन्म में विश्वास:** मोइदम्स में कब्रगाह में शवों के साथ भोजन, घोड़े, हाथी और कभी-कभी नौकर (ऐसी वस्तुएं जिनकी उन्हें मृत्यु के बाद के जीवन में आवश्यकता होगी) के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- **शवाधान की विधियां:** 17वीं शताब्दी से पहले शवों को रसायनों से संरक्षित करके उन्हें मोइदम में दफनाया जाता था। वहीं, बाद की अवधि में शवों का सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार करके राख को मोइदम में दफनाया जाने लगा।
    - शवाधान विधियों का यह विकास क्रम **ताई-अहोम द्वारा स्थानीय संस्कृति को अपनाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान** करता है।
- **सांस्कृतिक निरंतरता:** 600 साल पुरानी परंपरा को बरकरार रखते हुए **मी-डैम-मी-फी (पूर्वजों की पूजा)** और **तर्पण** जैसे वार्षिक अनुष्ठान अभी भी किए जाते हैं।
- **खोज:** मोइदम का विवरण पहली बार 1848 में **सार्जेंट सी. क्लेटन** द्वारा **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल** के जर्नल में प्रकाशित किया गया था।

भारत में शवाधान की अन्य विधियां

अवधि/ शवाधान विधि	विशेषताएं
नवपाषाण	• **बुर्जहोम (श्रीनगर) में अंडाकार गर्तों में दफनाए गए शवों के साक्ष्य** मिले हैं। साथ में इन शवों के साथ जंगली कुत्तों के कंकाल और बारहसिंगे के सींग भी मिले हैं। • यह यूनेस्को की विश्व धरोहर की संभावित सूची में शामिल है।
हड़प्पा सभ्यता	• कब्रगाह में शव को **पीठ के बल उत्तर-दक्षिण दिशा में लेटाया** जाता था। • हड़प्पा में ताबूत शवाधान का साक्ष्य मिला है। • **लोथल से युगल शवाधान के साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं। • शवों को दफनाते समय उनके साथ **आभूषण और अन्य वस्तुए रखी** जाती थीं जो इस बात का प्रमाण है कि सिंधुवासी मृत्यु के बाद पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
महापाषाण काल	• यह संस्कृति अपनी विशिष्ट शवाधान विधि के जानी जाती है। इसमें **अंत्येष्टि क्रिया के लिए बड़े प्रस्तर की खड़ी संरचना का इस्तेमाल** किया जाता था। • इस विधि की शुरुआत **नवपाषाण-ताम्रपाषाण काल** से मानी जा सकती है। उदाहरण के लिए- ताम्रपाषाण कालीन स्थल **इनामगांव (महाराष्ट्र)** से प्राप्त कलश-युक्त कब्रगाह। • **अधिकांश दक्षिण भारतीय महापाषाण स्थलों से लोहे की वस्तुएं प्राप्त** हुई हैं। इसलिए, महापाषाण काल को **'लौह युग'** भी कहा जाता है। • कब्रगाह के अंदर मिली वस्तुएं और मृदभांड इस बात का प्रमाण हैं कि महापाषाण कालीन लोग **'मृत्यु के बाद पुनर्जन्म'** में विश्वास करते थे। ○ कर्नाटक के कोप्पल जिले के गंगावती तालुका में महापाषाण कालीन स्थल हायर बेन्कल यूनेस्को की अस्थायी सूची में शामिल है।

© Vision IAS

अहोम साम्राज्य (1228 से 1826) के बारे में

- **संस्थापक:** इस साम्राज्य का संस्थापक **मोंग माओ** का एक **शान राजकुमार, सुकाफा** था। वह **पटकाई पर्वत श्रेणी** को पार करके असम आया था।
    - **ताई नृजाति के वंशज थे**, जो भारत-म्यांमार सीमा पर **चीन के युन्नान प्रांत से आकर बसे** थे।
- **प्रशासन: राजतंत्र होने के बावजूद शक्तियां मंत्रिपरिषद में निहित थीं।**
    - **राजा** की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद थी। इसे **पात्र मंत्री** के नाम से जाना जाता था।
    - 14वीं शताब्दी में तीन अवधियों के दौरान उपयुक्त उत्तराधिकारी के अभाव में कोई राजा ही नहीं हुआ।
- **संस्कृति: शैव धर्म** और **शक्ति आंदोलन** को अपनाया और पूरे असम में मंदिरों का निर्माण कराया, जिनमें **कामाख्या देवी मंदिर** भी शामिल है। बाद में कामाख्या मंदिर का पुनर्निर्माण भी किया गया और अहोमों ने इसका संरक्षण किया।
- **शासन का अंत:** अहोम राजवंश का शासन **असम पर बर्मी आक्रमण** और फिर **याण्डबू की संधि (1826)** के बाद **ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अधिकार कर लेने** के साथ ही समाप्त हो गया।

3.2. कोझिकोड: भारत का पहला 'सिटी ऑफ लिटरेचर' (Kozhikode: India's First 'City of Literature')

सुर्ख़ियों में क्यों?

केरल का कोझिकोड औपचारिक रूप से यूनेस्को की 'सिटी ऑफ लिटरेचर' सूची में शामिल होने वाला भारत का पहला शहर बन गया है और इस मान्यता का उत्सव धूमधाम से मनाया गया।

कोझिकोड के बारे में

- **अवस्थिति:** कोझिकोड या कालीकट शहर **मालाबार तट** पर स्थित है।
    - माना जाता है कि **"कैलिको"** शब्द की उत्पत्ति **कालीकट** से हुई है। **"कैलिको" हाथ से बुने हुए महीन सूती वस्त्र** को कहा जाता है।
- **कोझिकोड का इतिहास:**
    - **शासक:** मध्यकाल में इस पर **समूतिरियों यानी जमोरिनों** का शासन था।
    - **मसालों का शहर:** यह शहर **यहूदियों, अरबों, फोनेशियन और चीन के लोगों के साथ 500 से अधिक वर्षों से काली मिर्च एवं इलायची** जैसे मसालों के व्यापार में शामिल रहा है।
- **आने वाले विदेशी यात्री:**
    - **रेहला के लेखक इब्नबतूता** ने 14वीं शताब्दी में कोझिकोड शहर की यात्रा की थी।
    - पुर्तगाली नाविक **वास्को डी गामा और फारसी राजदूत अब्दुल रज्जाक** ने 15वीं शताब्दी में कोझिकोड शहर की यात्रा की थी।

कोझिकोड का वर्तमान में महत्त्व:

- यह शहर केरल में साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र है। यहां **500 से अधिक पुस्तकालय और 70 से अधिक प्रकाशक** मौजूद हैं।
- **2012** में इस शहर को **"मूर्तियों का शहर" (शिल्प-नगरम)** का दर्जा दिया गया था। यह दर्जा इस शहर के अलग-अलग हिस्सों में स्थित विविध स्थापत्य-मूर्तिकलाओं के कारण दिया गया था।
- 'सिटी ऑफ लिटरेचर' सूची में औपचारिक रूप से शामिल होने के अवसर पर केरल ने हर साल **23 जून को कोझिकोड में 'सिटी ऑफ लिटरेचर' दिवस** मनाने की घोषणा की है।

3.3. वर्ल्ड क्राफ्ट सिटी (World Craft City: WCC)

सुर्ख़ियों में क्यों?

जयपुर, मलप्पुरम और **मैसूर** के बाद, **श्रीनगर** वर्ल्ड क्राफ्ट्स काउंसिल इंटरनेशनल (WCCI) द्वारा 'वर्ल्ड क्राफ्ट सिटी' का दर्जा प्राप्त करने वाला चौथा भारतीय शहर बन गया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- इससे तीन साल पहले 2021 में **श्रीनगर शहर को शिल्प और लोक कलाओं के लिए "यूनेस्को क्रिएटिव सिटी नेटवर्क (UCCN)" में नामित** किया गया था।

यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (UCCN) के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसे **2004** में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य उन शहरों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना है, जिन्होंने **रचनात्मकता को संधारणीय शहरी विकास का एक प्रमुख माध्यम** बनाया है।
- **शामिल किए गए शहर:** दुनिया भर के **350 शहर** इस नेटवर्क का हिस्सा हैं।
- **शहरों को सात रचनात्मक श्रेणियों में शामिल किया जाता है:** ये सात श्रेणियां हैं- शिल्प और लोक कला, डिजाइन, फिल्म, पाक-कला (गैस्ट्रोनॉमी), साहित्य, मीडिया कला तथा संगीत।
- **UCCN में शामिल अन्य भारतीय शहर: सिटी ऑफ़ म्यूजिक** (ग्वालियर, चेन्नई व वाराणसी); **सिटी ऑफ़ फिल्म** (मुंबई); **सिटी ऑफ़ गैस्ट्रोनॉमी** (हैदराबाद) **तथा सिटी ऑफ क्राफ्ट्स एंड फोक आर्ट्स** (जयपुर एवं श्रीनगर)

वर्ल्ड क्राफ्ट सिटी (WCC) के बारे में

- इस कार्यक्रम को **WCCI ने 2014** में शुरू किया था।
- यह दुनिया भर में सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास में **स्थानीय प्राधिकारियों, शिल्पकारों और समुदायों की भूमिका को मान्यता** प्रदान करता है।
- यह **रचनात्मक अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों के अनुरूप, दुनिया भर में शिल्प (क्राफ्ट) शहरों का एक परिवर्तनशील नेटवर्क** तैयार करता है।
- **श्रीनगर के स्थानीय शिल्प:** इसमें **पश्मीना शॉल, अखरोट की लकड़ी पर नक्काशी, हाथ से बुने हुए कालीन, कानी शॉल, खतमबंद (छतों की डिजाइन), सोजनी शिल्प (सुई से की गई कढ़ाई), जलकडोजी (कढ़ाई किए हुए गलीचे), नमदा (हस्तनिर्मित गलीचा), बसोहली चित्रकला (वैष्णव धर्म से संबंधित), पेपर मेशी आदि** शामिल हैं।

यूनेस्को क्रिएटिव सिटी नेटवर्क (UCCN) से जुड़े अन्य तथ्य

- इसकी स्थापना **1964** में न्यूयॉर्क में प्रथम वर्ल्ड क्राफ्ट काउंसिल की आम सभा में **सुश्री एलेन ओसबोर्न वेंडरबिल्ट वेब, सुश्री मार्गरेट एम. पैच** और **श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय** द्वारा की गई थी।
  - **कमलादेवी चट्टोपाध्याय (मैंगलोर) भारत में विधान सभा सीट (मद्रास प्रांतीय चुनाव) के लिए चुनाव लड़ने** वाली पहली महिला थीं।
  - **योगदान: राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, संगीत नाटक अकादमी, केंद्रीय कुटीर उद्योग एम्पोरियम और भारतीय शिल्प परिषद** में उनका योगदान रहा।
- यह **यूनेस्को से संबद्ध** है और इसे इसमें **सलाहकार** का दर्जा प्राप्त है।
- **मुख्यालय:** 2021-24 के कार्यकाल के लिए WCCI का मुख्यालय **कुवैत** में स्थापित किया गया है। WCCI का मुख्यालय अलग-अलग कार्यकालों के अनुसार **बदलता रहता है।**

3.4. कीलाडी उत्खनन (Keeladi Excavation)

सुर्ख़ियों में क्यों

हाल ही में, **तमिलनाडु के कीलाडी में पुरातत्ववेत्ताओं ने संगम युग की क्रिस्टल क्वार्ट्ज से बनी एक भार मापक इकाई** की खोज की है।

© Vision IAS

कीलाडी या कीलड़ी उत्खनन स्थल के बारे में

- कीलाडी **तमिलनाडु में वैगई नदी** के तट पर स्थित एक छोटा सा गाँव है।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) और तमिलनाडु पुरातत्व विभाग द्वारा इसका उत्खनन किया जा रहा है।

कीलाडी उत्खनन का महत्त्व

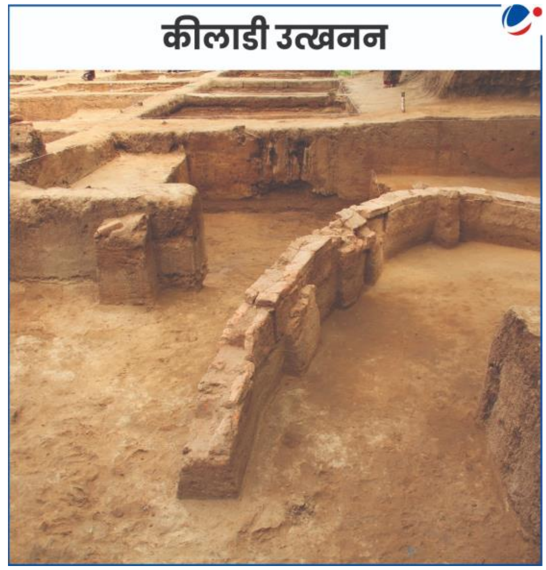

- **ऐतिहासिक सटीकता की पुष्टि करता है:** प्रारंभिक ऐतिहासिक काल **(छठी शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) के साथ लौह युग (बारहवीं शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईसा पूर्व)** के लुप्त संबंधों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।
- यह **संगम युग** से संबद्ध है।
- **नगरीय बस्ती:** कीलाडी पुरास्थल में नगरीय सभ्यता की सभी विशेषताएं मौजूद हैं।
- **उद्योगों का अस्तित्व:** उत्खनन से **बुनाई उद्योग** के विविध चरणों का पता चला है। वहां से **रंगाई उद्योग** और **कांच के मनकों के उद्योग** के साक्ष्य मिले हैं।
- **तमिल ब्राह्मी लिपि:** पाए गए मृदभांडों के कुछ टुकड़ों पर तमिल ब्राह्मी लिपि में लेख मिले हैं।

संगम युग के बारे में (लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी तक प्राचीन तमिलनाडु व केरल का काल)

- संगम का तात्पर्य **कवियों और विद्वानों की सभाओं** से है।
  - इस युग की प्रसिद्ध महिला कवयित्रियों में शामिल हैं: **अव्वैयार, नच्चेल्लैयार,** और **कक्कईपदिनियार।**
- संगम कवियों को **वर्ण के सामाजिक वर्गीकरण** की जानकारी थी।
- ऐसा माना जाता है कि **तीन संगम आयोजित** हुए थे। पहला और तीसरा **मदुरै** में तथा दूसरा संगम **कपाडपुरम** में आयोजित हुआ था।
- **वट्टाकिरुतल** आमरण व्रत करने की एक तमिल प्रथा थी, जो संगम युग के दौरान व्यापक रूप से प्रचलित थी।
- **संगम** साहित्य में मुख्य रूप से **तोलकाप्पियम (सबसे पहला संगमयुगीन साहित्य), एत्तुतोकै और पत्तुपत्तु** शामिल हैं
  - **जुड़वां महाकाव्य-** शिलप्पादिकारम और मणिमेखलै।

संबंधित सुर्ख़ियां: आंध्र प्रदेश में ब्राह्मी अभिलेख

आंध्र प्रदेश के **पालनाडु जिले** के **अमरावती मंडल** के **धरणीकोटा गांव** में एक ब्राह्मी अभिलेख मिला है।

धरणीकोटा गांव में मिले शिलालेख के बारे में

- **शिलालेख का विषय:** एक स्मारक स्तंभ पर दो पुत्रियों, हताना और विनिया को एक परिचारिका यानी अटेंडेंट के साथ दर्शाया गया है।
- **लिपि और भाषा:** यह अभिलेख दूसरी शताब्दी ईस्वी में **प्राकृत भाषा में ब्राह्मी लिपि** का उपयोग करके लिखा गया था।
- **सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व:** धरणीकोटा के आसपास का क्षेत्र, विशेषकर अमरावती, अपने बौद्ध स्तूपों, मठों और कलाकृतियों के लिए जाना जाता है।

ब्राह्मी लिपि के बारे में

- **उत्पत्ति:** ब्राह्मी लिपि भारत की सबसे **सबसे पुरानी लिपियों में से एक** है। माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास हुई थी, और इसका सबसे प्रसिद्ध प्रारंभिक प्रयोग **अशोक के शिलालेखों** में मिलता है।
- **विशेषताएं:** यह एक **अबुगिडा** लिपि है, जहाँ प्रत्येक वर्ण एक अंतर्निहित स्वर के साथ एक व्यंजन का प्रतिनिधित्व करता है।

3.5. हड़प्पा सभ्यता (Harappan Civilisation)

सुर्ख़ियों में क्यों?

"हड़प्पा सभ्यता" की खोज को **100 वर्ष पूरे** हो गए हैं। **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के तत्कालीन महानिदेशक **जॉन मार्शल ने 20 सितंबर, 1924 को "सिंधु घाटी या हड़प्पा सभ्यता"** की खोज की घोषणा की थी।

हड़प्पा सभ्यता के बारे में

- **पृष्ठभूमि:** इस **सभ्यता की खोज सबसे पहले 1921 में दयाराम साहनी ने आधुनिक पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के हड़प्पा** नामक स्थल से की थी।
  - हड़प्पा सभ्यता एक **कांस्य युगीन सभ्यता** थी।

- **अवस्थिति:** इसके 2,000 से अधिक स्थलों को **भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान** में खोजा गया है। इसके अधिकांश स्थल **सिंधु और सरस्वती नदी घाटियों के बीच** खोजे गए हैं।
- **समयावधि:** कई विद्वानों के अनुसार, यह सभ्यता **6000 ईसा पूर्व से 1300 ईसा** पूर्व तक अस्तित्व में थी।
  - **प्राक् हड़प्पा (6000 ईसा पूर्व-2600 ईसा पूर्व):** यह इस सभ्यता का एक **प्रारंभिक चरण** था;
  - **परिपक्व हड़प्पा (2600 ईसा पूर्व-1900 ईसा पूर्व):** यह इस सभ्यता का **नगरीय चरण** था, जो इसका सबसे समृद्ध काल भी था; तथा
  - **उत्तरवर्ती चरण (1900 ईसा पूर्व-1300 ईसा पूर्व):** इसे **उत्तर हड़प्पा काल** भी कहा जाता है।

हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं

घटक	प्रमुख विशेषताएं
नगर नियोजन और स्थापत्य	• **नगर नियोजन:** ○ **ग्रिड पैटर्न:** नगर **आयताकार ग्रिड पैटर्न** में बसे हुए थे और सड़कें एक-दूसरे को **समकोण** पर काटती थीं। ○ **पकी हुई ईंटों का उपयोग:** मिट्टी की पकी हुई ईंटों का उपयोग किया जाता था, जिसे जिप्सम के मोर्टार से जोड़ा जाता था। **समकालीन मिस्र** में धूप में सुखाई गई ईंटों का उपयोग किया जाता था। ○ सभी घरों को सड़क की नालियों से जोड़ने वाली **भूमिगत जल निकासी व्यवस्था थी।** • **स्थापत्य:** ○ इसमें **दुर्गीकृत नगर, अन्नागार, मोहनजोदड़ो का प्रसिद्ध विशाल स्नानागार और बहुमंजिला इमारतें** शामिल हैं, जो इस सभ्यता के स्थापत्य कौशल का प्रदर्शन करती हैं।
कृषि	• **कृषि:** खेतों की जुताई **लकड़ी के फाल** वाले हल से की जाती थी। ○ **मुख्य फसलें:** गेहूं, चावल, बाजरा, जौ, मसूर, चना, तिल आदि। हड़प्पावासियों ने ही **विश्व में सबसे पहले कपास का उत्पादन** किया था। यूनानी इसे **सिंडोन** कहते थे। • **जानवरों को पालतू बनाना:** बैल, भैंस, बकरी, भेड़, सूअर, कुत्ते, बिल्ली, गधे, कूबड़ वाले बैल, ऊंट आदि पाले जाते थे। ○ हड़प्पावासी **हाथी और गैंडे** से भी परिचित थे।
शिल्प	• हड़प्पावासी **कताई, नाव बनाने, मुहर बनाने, टेराकोटा निर्माण (कुम्हार का चाक), स्वर्णकारी, मनका बनाने** आदि में दक्ष थे। • **मनके बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्रियों की विविधता उल्लेखनीय है।** उदाहरण के लिए- कार्नेलियन (सुंदर लाल रंग का पत्थर), जैस्पर, क्रिस्टल, क्वार्ट्ज और सेलखड़ी; तांबा, कांस्य और स्वर्ण जैसी धातुएं; तथा शंख, फेयॉन्स और टेराकोटा या पकी हुई मिट्टी इत्यादि। • ज्यादातर **सेलखड़ी** से बनी मुहरों का उपयोग मुख्य रूप से **व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए, ताबीज बनाने के लिए, पहचान के रूप में तथा शैक्षिक उद्देश्यों** के लिए किया जाता था। • हड़प्पावासी **लोहे से परिचित नहीं थे।**
कला	• **कांसे की ढलाई:** हड़प्पावासियों ने **कांसे की ढलाई के लिए 'लुप्त मोम (लॉस्ट वैक्स) विधि' या साइर पर्ड्यू** का इस्तेमाल किया था। इस तकनीक का उत्कृष्ट उदाहरण हड़प्पा सभ्यता की **नर्तकी की कांस्य मूर्ति (डांसिंग गर्ल)** है, जो **'त्रिभंग'** नृत्य मुद्रा में खड़ी हुई है। • **पत्थर की मूर्तियां: मोहनजोदड़ो** से प्राप्त **दाढ़ी वाले व्यक्ति** की मूर्ति की पहचान एक पुजारी के रूप में की गई है। यह मूर्ती **सेलखड़ी** से बनी है। हड़प्पा से भी **लाल बलुआ पत्थर से बने** एक पुरुष के धड़ (मूर्ती) का अवशेष प्राप्त हुआ है। • **टेराकोटा की मूर्तियां:** मातृदेवी, सींग वाले देवता का मुखौटा, खिलौने, आदि।
व्यापार और वाणिज्य	• **आंतरिक और विदेशी व्यापार:** मानकीकृत वजन एवं माप के उपयोग ने व्यापार व वाणिज्य को सुविधाजनक बनाया। ○ **मेसोपोटामिया के अभिलेखों में सिंधु क्षेत्र को 'मेलुहा'** कहा गया है। इसके अलावा, **दो मध्यवर्ती व्यापारिक केंद्रों दिलमुन (बहरीन) और माकन (मकरान तट)** का भी उल्लेख मिलता है। ○ **निर्यात:** हड़प्पावासी **अनाज, आभूषण और मिट्टी के बर्तनों का निर्यात** करते थे। ○ **आयात: पतले तांबे और कीमती पत्थरों का आयात** करते थे।

धर्म एवं संस्कृति	• **देवता:** इस सभ्यता के लोग मुहरों पर अंकित **योगी मुद्रा में बैठे पुरुष देवता पशुपति (आद्य-शिव) तथा टेराकोटा की मूर्तियों पर उत्कीर्ण मातृदेवी** की पूजा करते थे। हड़प्पाई समाज में **लिंग पूजा** भी प्रचलित थी। • हड़प्पा के किसी भी स्थल से किसी भी प्रकार के **मंदिर का अवशेष नहीं** मिला है। • **प्रकृति पूजा:** हड़प्पावासियों द्वारा **वृक्षों (जैसे पीपल) और पशुओं** की पूजा की जाती थी।
लेखन प्रणाली	• **चित्रात्मक लिपि:** हड़प्पाई लिपि **बौस्ट्रोफेडन शैली** में लिखी गई है यानी, एक पंक्ति **दाएं से बाएं** और फिर अगली पंक्ति **बाएं से दाएं** लिखी जाती थी। ○ हालांकि, इसे **अभी तक पढ़ा नहीं** जा सका है।

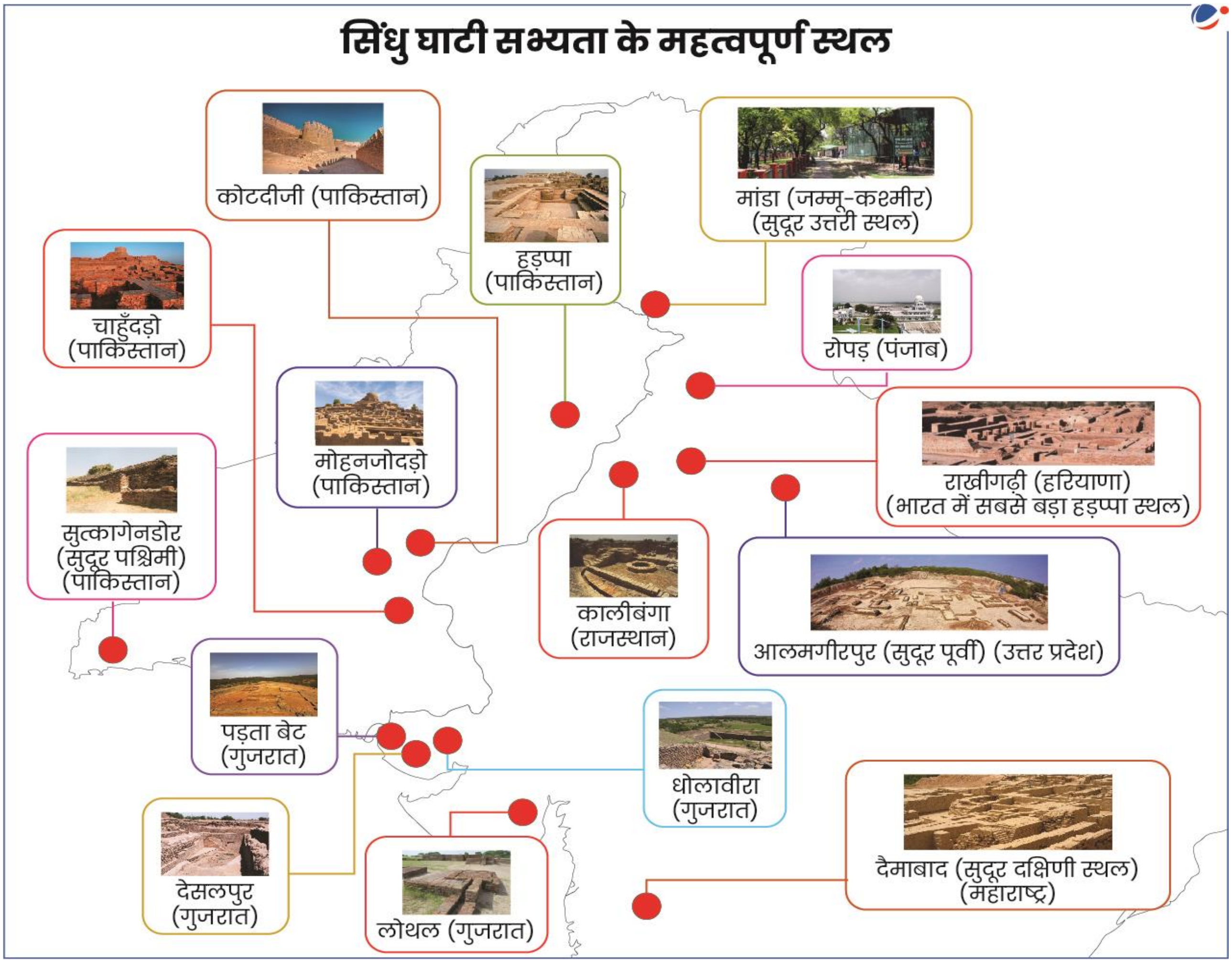

3.6. लोथल (Lothal)

सुर्ख़ियों में क्यों?

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने गुजरात के लोथल में **राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC)**[7] के विकास को मंजूरी दी।

अन्य संबंधित तथ्य

- राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC) को **पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय द्वारा सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मोड में सागरमाला कार्यक्रम** के तहत विकसित किया जा रहा है।
- **लोथल का ऐतिहासिक महत्त्व:** यह **खंभात की खाड़ी के पास भोगावो और साबरमती नदियों के बीच** स्थित है।
  - यह **सिंधु-घाटी सभ्यता का एक प्रमुख शहर** रहा है। यहां से **विश्व के सबसे पुराने मानव निर्मित गोदीवाड़ा (ड्राई-डॉक)** के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यह गोदीवाड़ा **2400 ईसा पूर्व** का है।
    - लोथल में गोदीवाड़ा की खोज से उस अवधि के दौरान **समुद्री ज्वार, पवन और अन्य समुद्री कारकों के बारे में जानकारी** मिलती है।

राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC) के बारे में

- **उद्देश्य:** भारत की **समृद्ध और विविध समुद्री विरासत को प्रदर्शित** करना। साथ ही, विश्व में **सबसे बड़ा समुद्री विरासत परिसर** बनाना।
- **प्रमुख परियोजनाएं:** विरासत परिसर में **विश्व स्तरीय लाइटहाउस संग्रहालय, तटीय राज्य पवेलियन, समुद्री-थीम वाला इको-रिज़ॉर्ट** आदि शामिल हैं।

भारत की समुद्री विरासत के बारे में

- **प्राचीन विरासत (3000-2000 ईसा पूर्व):** सिंधु घाटी सभ्यता का **मेसोपोटामिया** के साथ समुद्री मार्ग से व्यापारिक संबंध था।
- **वैदिक युग (2000-500 ईसा पूर्व):** समुद्री गतिविधियों का सबसे प्रारंभिक उल्लेख **ऋग्वेद** में प्राप्त होता है।
- **नंद और मौर्य युग (500-200 ईसा पूर्व):** मगध साम्राज्य की नौसेना को **विश्व के इतिहास में दर्ज पहली नौसेना** माना जाता है।
- **सातवाहन राजवंश (200 ईसा पूर्व-220 ईस्वी):** वे **जहाजों के प्रतीक वाले सिक्के जारी करने वाले पहले भारतीय शासक** थे।
- **गुप्त राजवंश (320-500 ईस्वी):** गुप्त शासकों ने भारत के **पूर्वी और पश्चिमी तटों पर कई बंदरगाहों का विकास** किया था। इससे **यूरोपीय और अफ्रीकी देशों के साथ समुद्री व्यापार को पुनर्जीवित करने में मदद** मिली थी।
- **मराठा:**
  - **शिवाजी** के नेतृत्व में, **मराठा नौसेना** ने 40 वर्षों तक **पुर्तगालियों** और **अंग्रेजों** को रोके रखा था।
    - उन्होंने **विजयदुर्ग** और **सिंधुदुर्ग** जैसे तटीय किले भी बनवाए थे।
  - **कान्होजी आंग्रे** ने 1699 में मराठा बेड़े के **सरखेल (एडमिरल)** के रूप में पदभार संभाला था। उन्होंने **उन सभी किलों पर पुनः कब्जा कर लिया था, जिन्हें मराठा नौसेना द्वारा पराजय के बाद सिद्दियों को समर्पित** करने पड़े थे।
- **दक्षिण भारत के राजवंश:**
  - **चोल (तीसरी-13वीं शताब्दी): दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ समुद्री व्यापार** विकसित किया और भारतीय संस्कृति का प्रसार किया।
  - **पांड्य (छठी-16वीं शताब्दी): रोम, मिस्र और चीन** के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए; **मोती के व्यवसाय (Pearl Farming)** पर नियंत्रण स्थापित किया; आदि।
  - **चेर (12वीं शताब्दी): यूनानियों और रोमनों के साथ व्यापार** किया, व्यापार मार्गों के लिए **मानसूनी हवाओं का उपयोग** किया; आदि।

3.7. सुर्ख़ियों में रहे अन्य स्थल (Other sites in news)

3.7.1. गोवा के मौक्सी गांव में चट्टानों पर नक्काशी नवपाषाण कालीन (Neolithic age rock carvings in Goa's Mauxi village)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने पुष्टि की है कि गोवा के मौक्सी गांव में चट्टानों पर नक्काशी **नवपाषाण कालीन** है। गौरतलब है कि प्राचीन नक्काशी युक्त ये चट्टानें आज से 20 साल पहले **ज़ार्मे नदी** के सूखे तल के पास मेटा बेसाल्ट चट्टान में पाई गई थीं।

- इन प्राचीन चट्टानों पर **जेबू, बैल** और **मृग** जैसे जीवों के अलावा कुछ **पदचिन्हों और कप्यूल्स की आकृतियां** भी उकेरी गई हैं।
  - **कप्यूल्स (Cupules)** वास्तव में चट्टानों में मानव द्वारा निर्मित **कप के आकार के अर्धगोलाकार गड्ढे** होते हैं।

[7] National Maritime Heritage Complex

© Vision IAS

भारत के प्रागैतिहासिक शैलचित्र

- **उच्च पुरापाषाण काल (Upper Palaeolithic Period):**
  - भारत में, **सबसे पुराने शैलचित्र** इसी काल के माने जाते हैं।
  - इस समय चट्टानों पर **यष्टि यानी छड़ीनुमा (Stick) मानव आकृतियों के अलावा बाइसन, हाथी, बाघ जैसे जीवों की आकृतियां भी उत्कीर्ण** की गई थीं। ये चित्र एक रेखा में हैं और **हरे व गहरे लाल रंग** के हैं।
  - **मुख्य स्थल:** भीमबेटका (मध्य प्रदेश) और ज्वालापुरम (आंध्र प्रदेश)।
- **मध्यपाषाण काल (Mesolithic Period):**
  - भारत में **सर्वाधिक संख्या में प्राचीन शैल चित्र इसी काल** के हैं।
  - चित्रों में **मानव दृश्यों की प्रधानता** है। मनुष्य को **समूह में शिकार और सामुदायिक नृत्य** करते हुए चित्रित किया गया है।
  - **जानवरों को प्राकृतिक शैली में और मनुष्यों को शैलीगत तरीके** से चित्रित किया गया है।
  - **मुख्य स्थल:** पचमढ़ी और आदमगढ़ पहाड़ियां (मध्य प्रदेश)।
- **नवपाषाण-ताम्रपाषाण काल (Neolithic-Chalcolithic Period):**
  - इस काल के चित्रों में **मृदभांडों और धातु के उपकरणों** को दर्शाया गया है। हालांकि, इस युग के चित्रों में पहले की तुलना में **जीवंतता और आत्मीयता का अभाव** है।
  - **चित्रों में सफेद और लाल रंगों का अधिक प्रयोग** हुआ है। इन रंगों को शायद **हेमेटाइट और चूना पत्थर को पीसकर** तैयार किया जाता था।
  - चित्रों में **पुरुषों को अधिक साहसी और जानवरों को अधिक वयस्क एवं प्रभावशाली** दिखाया गया है।
  - **मुख्य स्थल:** चंबल क्षेत्र, दैमाबाद (महाराष्ट्र) आदि।

3.7.2. श्रीकाकुलम (Srikakulam)

कई इतिहासकार, शिक्षाविद, लेखक और विरासत के संरक्षण के प्रति उत्साही लोग **श्रीकाकुलम (आंध्र प्रदेश) की भूली हुई विरासत की प्रतिष्ठा को फिर से बहाल करने के लिए प्रयास** कर रहे हैं।

इतिहास

- आरंभ में इसका नाम **चिकाकोल** था। इस नाम का इस्तेमाल ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन द्वारा किया जाता था।
- यह कभी **कलिंग साम्राज्य का हिस्सा** था **(तीसरी शताब्दी ई.पू.)**।
  - बाद में यह **गजपति शासकों** के अधीन आ गया था। इसके बाद **वेंगी के पूर्वी चालुक्यों** ने भी इस पर शासन किया था।
  - यह **काकतीय और विजयनगर साम्राज्य** के अधीन भी रहा था।

सांस्कृतिक स्थल

- **बौद्ध स्थल:** सालिहुंडम और दंतपुरी।
  - सालिहुंडम से बौद्ध धर्म सुमात्रा और अन्य पूर्वी देशों में फैला।
- **जैन धर्म स्थल:** तंगमय्याकोंडा और रोट्टावलासा गांव।
- **हिंदू मंदिर:** श्रीमुखलिंगम, श्रीकुर्मम और अरसाविल्ली।
- **नवपाषाण कालीन गुफाएं:** नंदी पहाड़ियां।

कलिंग राजवंश के बारे में

- **क्षेत्र:** आधुनिक **ओडिशा और आंध्र प्रदेश** के कुछ हिस्से।
- **मौर्य विजय: कलिंग युद्ध (261 ईसा पूर्व)** के बाद मौर्य सम्राट अशोक ने कलिंग पर कब्जा कर लिया था। **युद्ध के दौरान हुई क्रूरता को देखते हुए अशोक ने बौद्ध धर्म** अपना लिया था।

- **प्रमुख शासक:** खारवेल (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) यहां के एक प्रमुख शासक था। वह **जैन धर्म को सांस्कृतिक संरक्षण** देने, **गुफाओं (उदयगिरि और खंडगिरि) के निर्माण तथा हाथीगुम्फा अभिलेख** के लिए प्रसिद्ध है। यह अभिलेख खारवेल के शासनकाल का विवरण प्रदान करता है।

उदयगिरि और खंडगिरि गुफाओं के बारे में

- ये गुफाएं दो समीपवर्ती पहाड़ियों **(उदयगिरि और खंडगिरि)** में स्थित हैं, जिनका उल्लेख **हाथीगुम्फा अभिलेख में कुमारी पर्वत** के रूप में किया गया है।
- ये गुफाएं **कुमारी पर्वत श्रृंखला** में बनी हैं।
- ये **ओडिशा में शैल कर्तित गुफा परंपरा की सबसे प्राचीन** उदाहरण हैं।
- इनका निर्माण द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास **मेघवाहन वंश के राजा खारवेल ने जैन भिक्षुओं** के लिए कराया था।
- **उदयगिरि की गुफाएं हाथीगुम्फा अभिलेख** के लिए प्रसिद्ध हैं। इस अभिलेख में खारवेल द्वारा अर्जित सैन्य अभियानों की उपलब्धियां उत्कीर्ण हैं। यह अभिलेख **ब्राह्मी लिपि** में है।
- ज्ञातव्य है कि **मध्य प्रदेश में विदिशा के नजदीक उदयगिरि में अन्य गुफा समूह भी मौजूद हैं। ये गुप्त काल के दौरान निर्मित वैष्णव** गुफाएं हैं।

3.7.3. तेलंगाना में नए पुरातत्व स्थल (New Archaeological Sites in Telangana)

हाल ही में, पुरातत्वविदों ने **तेलंगाना में नए पुरातात्विक स्थलों** की खोज की है।

खोजे गए नए पुरातात्विक स्थलों के बारे में

- **ओरागुट्टा:** यह लौह युग का एक **महापाषाण** स्थल है।
- भद्राद्री कोठागुडम जिले के गुंडाला मंडल के **दमराटोगु में दो नए शैल-कला स्थल।**
- **देवरलबंद मुला:** यहां से केवल जानवरों के चित्र मिले हैं। मनुष्य या हथियार का कोई चित्र नहीं मिला है।
  - आमतौर पर इस क्षेत्र में विशेष प्रकार के महापाषाण स्मारक पाए जाते हैं, जिन्हें **'डोलमेनॉइड सिस्ट्स'** के नाम से जाना जाता है।
  - **डोलमेनॉइड सिस्ट्स कक्ष युक्त शवाधान संरचनाएं** हैं, जो अर्ध-भूमिगत हैं।
  - महापाषाण (मेगालिथ) के तीन मूल प्रकार हैं: कक्ष युक्त कब्रें, बिना कक्ष वाली कब्रें, तथा ऐसे महापाषाण जो शवाधान से संबंधित नहीं हैं।
  - उस समय के मानव अर्ध-खानाबदोश जीवन व्यतीत करते थे और किसी विशेष आरक्षित वन में स्थायी रूप से नहीं बसते थे।

3.7.4. फणीगिरी (तेलंगाना) {Phanigiri (Telangana)}

तेलंगाना के हेरिटेज विभाग ने **सूर्यापेट जिले (तेलंगाना) के फणीगिरी स्थल पर इक्ष्वाकु काल** से संबंधित सिक्कों का भंडार खोजा है।

फणीगिरी के बारे में

- फणीगिरी का अर्थ है- सांप के फन के आकार की पहाड़ी।
- यह एक **बौद्ध स्थल** है तथा **हैदराबाद** से लगभग 110 किलोमीटर दूर अवस्थित है।
- **उत्खनन कार्य के दौरान यहां से प्राप्त पुरावशेष हैं:** महास्तूप, चैत्य गृह, विहार, बोधिसत्वों की आदमकद स्टूको मूर्तियां, सातवाहन व इक्ष्वाकु काल के ब्राह्मी लिपि के अभिलेख (दूसरी-तीसरी शताब्दी ईस्वी) आदि।
- इस जगह से एक तोरण (सजावटी प्रवेशद्वार) की खोज की गई है, जिसके पैनल से पता चलता है कि यहां **महायान और हीनयान, दोनों बौद्ध संप्रदाय** साथ-साथ रहते थे।

 © Vision IAS

3.7.5. बाविकोंडा मठ (Bavikonda Monastery)

हाल के वर्षों में **बजट की कमी के चलते**, बाविकोंडा स्थल पर रख-रखाव और मरम्मत कार्य बेहतर तरीके से नहीं हुआ।

- यह **स्वदेश दर्शन योजना** के तहत "आंध्र प्रदेश में शालिहुंडम-थोटलकोंडा-बाविकोंडा-बोज्जनकोंडा-अमरावती-अनूपू" **बौद्ध सर्किट का हिस्सा** है।

बाविकोंडा बौद्ध मठ के बारे में

- बाविकोंडा **आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम** के पास स्थित है।
- 'बाविकोंडा' नाम का मतलब **कुओं की पहाड़ी** है। पहले इस स्थान पर कई कुएं थे जहां वर्षा का जल जमा होता था।
- बाविकोंडा मठ तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है।
    - इसमें एक थेरवाद (हीनयान बौद्ध धर्म) बौद्ध परिसर है जिसमें **महास्तूप, आचार्य विहार, चैत्य गृह, बुद्ध पद मंच और मन्नत स्तूप** जैसी संरचनाएं निर्मित हैं।

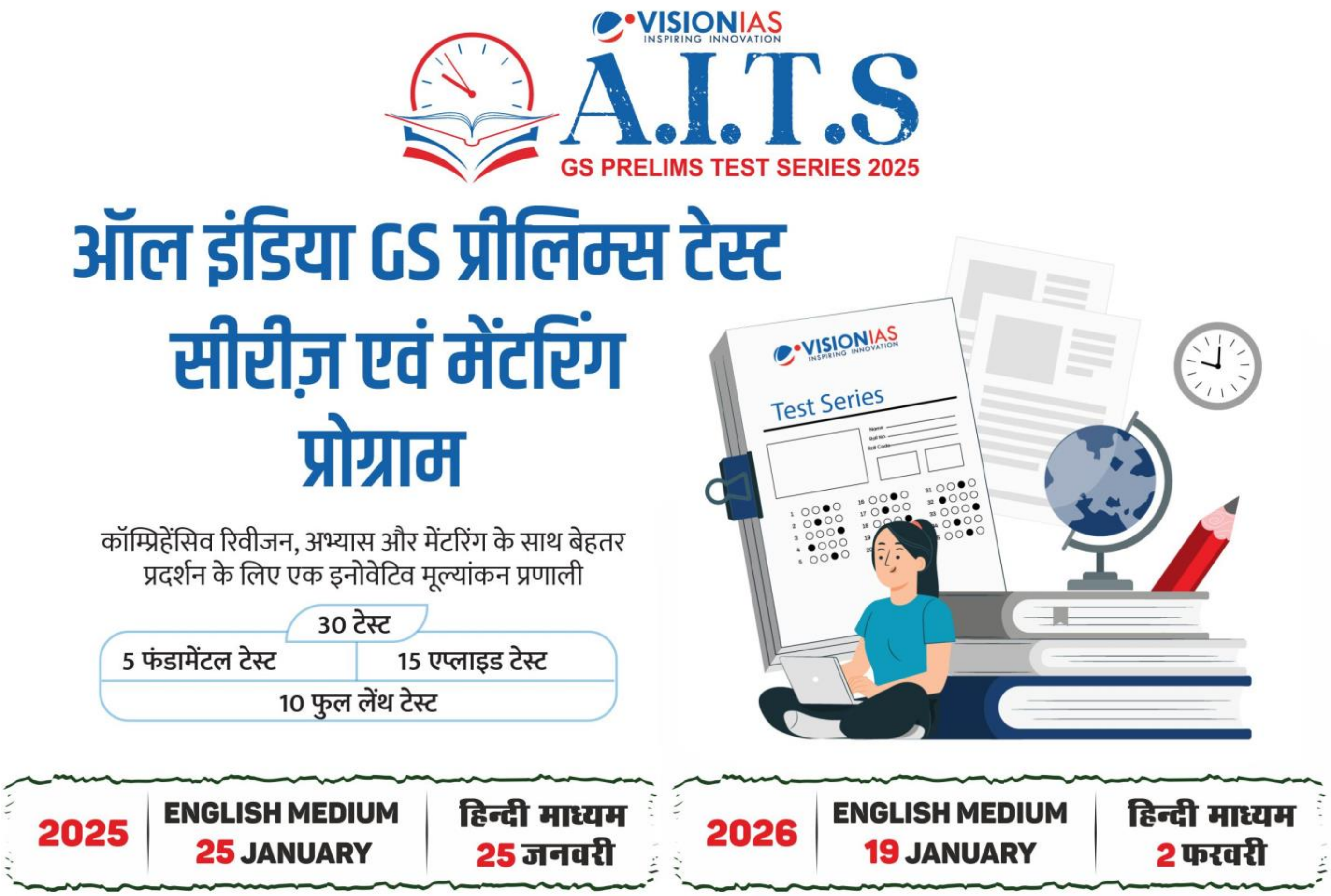

4. व्यक्तित्व (Personalities)

4.1. भगवान महावीर जैन (Bhagwan Mahavir Jain)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **प्रधान मंत्री** ने महावीर जयंती के अवसर पर **भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण महोत्सव** का उद्घाटन किया।

जैन धर्म के बारे में

- इसकी उत्पत्ति लगभग **ऋग्वैदिक काल** में हुई थी।
- क्रमिक रूप से **24 महान उपदेशकों (तीर्थंकरों)** द्वारा स्थापित।

- **प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे, 23वें पार्श्वनाथ**, तथा **24वें वर्धमान महावीर** थे।

- **जैन धर्म में संप्रदाय:** श्वेतांबर व दिगंबर

वर्धमान महावीर

- उनका जन्म **540 ई. पू. में वैशाली** (वर्तमान में उत्तरी बिहार) में हुआ था।

- उनके पिता **सिद्धार्थ ज्ञात्रिक कुल के प्रधान** थे। उनकी माता **त्रिशला** लिच्छवि राजकुमारी थीं।

- उन्होंने 30 वर्ष की आयु में गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था। उन्हें 42 वर्ष की आयु में **कैवल्य** या पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
- उन्होंने **कोशल, मगध, मिथिला, चंपा** आदि नगरों में जैन धर्म के उपदेशों का प्रसार किया था।

- 72 वर्ष की आयु में वर्तमान **राजगीर** के निकट **पावापुरी** में उनकी मृत्यु हुई थी।

जैन धर्म के सिद्धांत

पंचमहाव्रत

- **सत्य:** असत्य नहीं बोलना
- **ब्रह्मचर्य:** अविवाहित जीवन जीना
- **अहिंसा:** हिंसा नहीं करना
- **अपरिग्रह:** संपत्ति अर्जित नहीं करना
- **अस्तेय:** चोरी नहीं करना

जैन धर्म के त्रिरत्न

- सम्यक् श्रद्धा
- सम्यक् ज्ञान
- सम्यक् आचरण

जैन धर्म में ईश्वर में विश्वास किया जाता है, लेकिन उसका स्थान जिन से नीचे है।

- कर्म के सिद्धांत को माना जाता है तथा आत्मा के देहांतरण को मान्यता दी गई है।
- यह विश्वास किया गया है कि सर्वाधिक निर्जीव वस्तु में भी आत्मा का वास होता है।

प्रसिद्ध संगीतियां (परिषदें)

क्र.सं.	वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	उपलब्धियां
1.	300 ई. पू	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	भगवान महावीर के उपदेशों को **12 अंगों** में संकलित किया गया था।
2.	512 ई.	वल्लभी	देवृद्धिगनी	भगवान महावीर के उपदेशों को **11 अंगों** में व्यवस्थित रीति से संकलित किया गया था, क्योंकि उस समय तक 12वां अंग लुप्त हो गया था।

 © Vision IAS

4.2. देवी अहिल्याबाई होल्कर (Devi Ahilyabai Holkar)

सुर्ख़ियों में क्यों?

देवी अहिल्याबाई होल्कर (31 मई, 1725 - 13 अगस्त, 1795) की 300वीं जयंती के अवसर पर मालवा की होल्कर रानी को श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया।

देवी अहिल्याबाई होल्कर (1725 -1795) के बारे में

- **जन्म:** उनका जन्म **1725 में महाराष्ट्र के अहमदनगर के चोंडी गाँव** में हुआ था।
- **पिता का नाम:** मनकोजी राव शिंदे
- **पति का नाम:** खंडेराव होल्कर
- **ससुर का नाम:** मल्हार राव होल्कर (होल्कर वंश के संस्थापक)।
  - वे **पेशवा बाजी राव** के एक अधिकारी थे। उन्हें **चौथ और सरदेशमुखी वसूलने के लिए मालवा में तैनात** किया गया था।
- **मालवा की रानी:** वे अपने ससुर की मृत्यु (1766) और पति की मृत्यु (1767 में) के बाद मालवा की शासिका बनी थीं। उनके पति **1754 में कुंभेर के युद्ध** में मारे गए थे।
  - उन्होंने अपने दत्तक पुत्र **तुकोजी राव होल्कर** (मल्हार राव होल्कर के दत्तक पुत्र) को सेनापति नियुक्त किया था।
  - उन्होंने **मध्य प्रदेश में स्थित महेश्वर को होल्कर वंश की राजधानी** के रूप में स्थापित किया था।

प्रमुख योगदान

- **मंदिरों का पुनर्निर्माण:**
  - उन्होंने **उत्तर प्रदेश के वाराणसी में स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर** का भी पुनर्निर्माण करवाया था। यह मंदिर पवित्र **गंगा नदी के पश्चिमी तट** पर स्थित है और यह भी शिव के **बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक** है।
  - अरब सागर के किनारे गुजरात तट पर स्थित **सोमनाथ मंदिर को पहला ज्योतिर्लिंग** माना जाता है।
    - सोमनाथ मंदिर पर **महमूद गजनवी** (1024 ई.) ने हमला किया था। इसके बाद इस पर **दिल्ली के सुल्तानों** (1297 ई. और 1394 ई.) तथा **औरंगजेब** (1706 ई.) ने भी हमला किया था।
    - **सोमनाथ मंदिर का उल्लेख अल-बिरूनी** ने किया था।
- **कला को संरक्षण:** उन्होंने **संस्कृत विद्वान खुशाली राम और मराठी कवि मोरोपंत तथा शाहीर अनंतफंदी** को अपने दरबार में संरक्षण दिया था।
  - **मोरोपंत:** उन्होंने 'रामायण और महाभारत पर राजनीतिक टीका', 'पुराणों पर आधारित कई आख्यान' तथा 'आर्यभट्ट' और 'केकावती' जैसी रचनाएं लिखी थी।
  - **शाहीर अनंतफंदी:** वे **लावणी और पोवाडा** की रचना के लिए जाने जाते थे।
- **सामाजिक विकास:** उन्होंने **महिलाओं की शिक्षा व विधवा पुनर्विवाह** के लिए कार्य किया था तथा सती प्रथा एवं अस्पृश्यता जैसी **कुप्रथाओं का विरोध** किया था।
  - उन्होंने **भील और गोंड जनजातियों** तथा निचली जातियों को भी **मुख्यधारा में लाने के लिए प्रयास** किया था।
- **आर्थिक:** उन्होंने एक सुव्यवस्थित कर प्रणाली लागू की थी। उनके साम्राज्य में **महेश्वर और इंदौर व्यापार एवं वाणिज्य के प्रमुख केंद्र** बन गए थे।
  - ज्ञातव्य है कि **महेश्वर के "साड़ी और वस्त्र उत्पादों"** को हस्तशिल्प के मामले में भौगोलिक संकेतक (GI) टैग दिया गया है।

होल्कर राजवंश के बारे में

- **मराठा संघ:** होल्कर राजवंश मराठा संघ का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।
  - इसके अन्य प्रमुख राजवंशों में शामिल थे: **नागपुर के भोंसले, बड़ौदा के गायकवाड़ और ग्वालियर के सिंधिया।**
- **तीसरा आंग्ल-मराठा युद्ध:** होल्कर राजवंश के शासक **मल्हार राव द्वितीय (1811 से 1833)** ने तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-1819) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
  - **महिदपुर की लड़ाई में मल्हार राव द्वितीय की हार के बाद 1818 में मंदसौर की संधि पर हस्ताक्षर** किए गए। इस संधि के तहत **होल्कर और अंग्रेजों के बीच संबंधों को निर्धारित** किया गया था।

4.3. नाना जगन्नाथ शंकरसेठ (Nana Jagannath Shankar Seth)

सुर्ख़ियों में क्यों?

महाराष्ट्र मंत्रिमंडल ने रेल मंत्रालय से **मुंबई सेंट्रल स्टेशन** का नाम बदलकर **नाना जगन्नाथ शंकरसेठ** करने का आग्रह करने का फैसला किया है।

नाना जगन्नाथ शंकर सेठ

नाना जगन्नाथ शंकरसेठ के बारे में

- **नाना जगन्नाथ शंकरसेठ (1803-1865) का प्रारंभिक जीवन:**
  - **जन्म:** नाना जगन्नाथ शंकरसेठ का जन्म महाराष्ट्र के ठाणे जिले के मुरबाड में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था।
  - **पिता:** उनके पिता का नाम शंकर मुरकुटे था।
  - **माता:** उनकी माता का नाम भवानीबाई मुरकुटे था।
  - **आदर्श और प्रभाव:** वह व्यापारी और परोपकारी **सर जमशेदजी जीजीभॉय** से बहुत प्रेरित थे।

प्रमुख योगदान

- **मुंबई के वास्तुकार:** उन्होंने बॉम्बे में इमारतों, सड़कों और मार्गों की योजना बनाने के लिए प्रमुख परियोजनाओं का नेतृत्व किया।
- **शिक्षा संरक्षण:** वह शिक्षा के संरक्षक थे और उन्होंने स्कूल स्थापित करने के लिए **परिवार के स्वामित्व वाली भूमि दान की** थी। उन्होंने विशेष रूप से **बालिकाओं की शिक्षा** के लिए काम किया था।
  - उन्होंने **बॉम्बे नेटिव स्कूल** की स्थापना की थी। कालांतर में यही स्कूल **एलफिंस्टन कॉलेज** के रूप में विकसित हुआ।
- **सांस्कृतिक और विरासत:** उन्होंने **भायखला में डॉ. भाऊ दाजी लाड संग्रहालय** को बढ़ावा देने के साथ-साथ **भवानी शंकर मंदिर और राम मंदिर के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।**
- **रेलवे परियोजना:** वे उस समिति का हिस्सा थे, जो 16 अप्रैल, **1853 में बोरीबंदर और ठाणे के बीच चली भारत की पहली ट्रेन परियोजना** के विकास से संबंधित थी।
- **राजनीतिक योगदान:**
  - वे **बॉम्बे विधान परिषद में मनोनीत होने वाले पहले भारतीय** थे, और
  - वह **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ मुंबई के एक भारतीय सदस्य** भी थे।

विरासत और प्रभाव

- अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान **गंगाधर गाडगिल** ने उन्हें **"आधुनिक भारत का वास्तुकार"** कहा था।
- आर्थिक राष्ट्रवाद के उनके दृष्टिकोण ने भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में **दादाभाई नौरोजी** और **जस्टिस रानाडे** जैसे **स्वतंत्रता सेनानियों को प्रभावित किया।**

4.4. महर्षि दयानंद सरस्वती (Maharshi Dayanand Saraswati)

सुर्ख़ियों में क्यों?

केंद्र सरकार ने दयानंद सरस्वती की **200वीं जयंती** के उपलक्ष्य में साल भर तक चलने वाले समारोहों की निगरानी के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया।

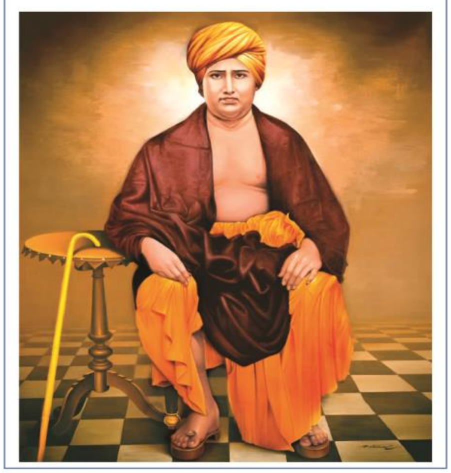

दयानंद सरस्वती (1824-1883) के बारे में

- वे एक **समाज सुधारक** थे। उनका जन्म **1824 में काठियावाड़ (गुजरात) के मोरबी** में हुआ था।
- **मूल नाम:** मूल शंकर
- उन्होंने 1860 में, **स्वामी विरजानन्द के सानिध्य में रहते हुए मथुरा में पाणिनि और पतंजलि की रचनाओं का अध्ययन** करना तथा उपदेश देना शुरू किया था।
- **साहित्यिक रचनाएं:**
  - **सत्यार्थ प्रकाश:** यह उनकी हिन्दी में एक रचना है।
  - **वेद भाष्य भूमिका:** यह वेदों पर उनकी टीका का परिचय है, तथा
  - **वेद भाष्य:** यह यजुर्वेद पर संस्कृत में एक वैदिक भाष्य है।

दयानंद सरस्वती का दर्शन

- **वैदिक विचारधारा:** उन्होंने **मानव निर्मित कर्मकांड और मूर्ति पूजा का विरोध** किया था। उन्होंने **वैदिक विचारधाराओं को पुनर्जीवित** करने की दिशा में काम किया था।
  - उन्होंने **वेदों की परम सत्ता को स्वीकार** किया था।
  - उनकी पुस्तक **"सत्यार्थ प्रकाश" में 'वैदिक सिद्धांतों की ओर वापसी'** पर जोर दिया गया है।
  - उन्होंने **"वेदों की ओर लौटो"** का नारा दिया था।
  - **धर्म का प्रचार:** उन्होंने किसी भी प्रकार के पक्षपात से मुक्त तथा सत्यनिष्ठा के प्रतीक के रूप में धर्म का प्रचार किया।
  - **जाति प्रथा:** उन्होंने दावा किया था कि जाति वंशानुगत नहीं बल्कि **व्यक्ति की प्रतिभा और स्वभाव** पर निर्धारित होती है।
    - हालांकि, उन्होंने **जाति संस्था का पूरी तरह से विरोध नहीं किया था, लेकिन उन्होंने इसके भीतर महत्वपूर्ण सुधारों** की वकालत की थी।
    - वे **छुआछूत की प्रथा के खिलाफ** थे और सभी जातियों के लिए **वैदिक शिक्षा की वकालत** करते थे।
- **महिला एवं शिक्षा:** दयानंद सरस्वती ने **बाल विवाह और विधवा महिलाओं के बहिष्कृत स्थिति में रहने का विरोध** किया था।
  - इसके अलावा, उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए एक अभियान भी चलाया था।
  - उनके अनुसार, शिक्षा का भार राजा/ राज्य को उठाना चाहिए। वे **अनिवार्य शिक्षा** के पक्ष में थे।
  - इससे शिक्षा प्रणाली में पूर्ण बदलाव की शुरुआत हुई थी। इसका उद्देश्य **भारतीय छात्रों को समकालीन अंग्रेजी शिक्षा के साथ-साथ वेदों के अध्ययन-अध्यापन** के लिए एक अद्यतित पाठ्यक्रम भी प्रदान करना था।
- **राजनीतिक दर्शन: दयानंद सरस्वती के राजनीतिक दर्शन के दो केंद्रीय विचार हैं-**
  - पहला **'प्रबुद्ध राजशाही'** का विचार है। यह एक अवधारणा है, जिसे उन्होंने **मनुस्मृति** से उधार लिया था। इसका अर्थ है यह एक ऐसी राजशाही है, जो पूरी तरह से **धर्म के पालन पर आधारित** है।
  - दूसरी, कुछ हद तक विरोधाभासी धारणा **निर्वाचित प्रतिनिधित्व, यानी लोकतंत्र** से संबंधित है।
- **सामाजिक आंदोलन:** उन्होंने **गोरक्षा आंदोलन और शुद्धि कार्यक्रम** शुरू किए थे।
  - शुद्धि आंदोलन का उद्देश्य **हिंदू धर्म छोड़कर इस्लाम और ईसाई धर्म अपना चुके लोगों को वापस हिंदू धर्म में लाना था।**
- **राष्ट्रीय आंदोलन:**
  - **स्वराज का विचार:** उन्हें **1876 में पहली बार स्वराज (स्व-शासन) शब्द** का उपयोग **"इंडिया फॉर इंडियंस"** के रूप में करने का श्रेय दिया जाता है। इसका आगे चलकर **लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी** जैसे नेताओं ने भी इस्तेमाल किया था।
  - उन्होंने धर्म आधारित तर्क देते हुए **अंग्रेजों की आलोचना की,** तथा विकल्प के रूप में प्राचीन भारतीय व्यवस्था के उदाहरण प्रस्तुत किए।
  - कई देशी राजाओं से बात करने के बाद, **उन्होंने उन्हें स्वदेशी के लिए प्रेरित** किया था।

आर्य समाज (1875) और वैदिक स्कूल

- 1875 में दयानंद सरस्वती ने **बॉम्बे में आर्य समाज** की स्थापना की थी। इसके संविधान को **लाहौर** में अंतिम रूप दिया गया था।
- यह एक **एकेश्वरवादी हिन्दू व्यवस्था** है, जो **आनुष्ठानिक कर्मकांडों और सामाजिक हठधर्मिताओं को नकारती** है।
- इसका मुख्य उद्देश्य **हिंदू धर्म को काल्पनिक मान्यताओं से दूर** ले जाना था। **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** आर्य समाज का नारा था। इसका अर्थ है, **"विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाते चलो" अर्थात संसार को मनुष्यों के रहने के लिए सभी तरीकों से सर्वोत्तम स्थान बनाना।**
- यह पहला हिन्दू संगठन है, जिसने हिन्दुत्व में **धर्मांतरण** का समावेश किया था।
- **आर्य समाज के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत, जो सार्वभौमिकता के विचार पर आधारित हैं।**
  - **शुद्ध ज्ञान का स्रोत ईश्वर है।**
  - **कार्यों का नैतिक औचित्य अनिवार्य है।**
  - **अज्ञानता के अंधकार को ज्ञान की किरणें अवश्य दूर करती हैं।**
- आर्य समाज ने बड़ी संख्या में **शैक्षणिक संस्थान** और **अनाथालय** खोले थे। **1886 में लाहौर में पहला दयानंद एंग्लो वैदिक (DAV) स्कूल** खोला गया था।
- 1892 में आर्य समाज का **गुरुकुल (रूढ़िवादी) और कॉलेज समूह (उग्र सुधारवादी)** में विभाजन हो गया था।
- रूढ़िवादी गुट के नेता **स्वामी श्रद्धानंद** थे और **उग्र सुधारवादी** गुट के नेता **लाला हंसराज** थे।
- यह विभाजन इस बात को लेकर हुआ था कि **किस भाषा को बढ़ावा** दिया जाए और **किस प्रकार का भोजन** परोसा जाए।

4.5. स्वामी विवेकानंद (Swami Vivekananda)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रधान मंत्री ने कन्याकुमारी (तमिलनाडु) में **विवेकानन्द रॉक मेमोरियल** और इसके नजदीक अवस्थित **शिलाओं पर उत्कीर्ण तिरुवल्लुवर प्रतिमा** स्थल की यात्रा की।

स्वामी विवेकानंद (1863-1902) के बारे में

प्रारंभिक जीवन

- **जन्म:** स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था।
- उनकी जयंती को **राष्ट्रीय युवा दिवस** के रूप में मनाया जाता है।
- **अभिभावक**
  - **पिता :** विश्वनाथ दत्त
  - **माता :** भुवनेश्वरी देवी
  - **आध्यात्मिक गुरु:** श्री रामकृष्ण
  - **प्रमुख शिष्या:** मार्गरेट नोबल (सिस्टर निवेदिता)

विवेकानंद रॉक मेमोरियल के बारे में

- इसका निर्माण 1970 में किया गया था। यह माना जाता है कि यह वही जगह है जहां **स्वामी विवेकानंद ने एक बार ध्यान किया था।**
- यह जगह **लेकेडिव सागर** से घिरी हुई है। यहां बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर मिलते हैं।
- यह भी माना जाता है कि यह वह शिला है जहां **देवी कन्याकुमारी ने भगवान शिव से प्रार्थना** की थी।

योगदान और विरासत

- **वेदांत दर्शन का प्रचार: उत्तर मीमांसा** को वेदांत कहा जाता है। इसमें **अद्वैत, विशिष्टाद्वैत** और **द्वैत** तीनों दर्शन सम्मिलित हैं।
- **शिकागो विश्व धर्म संसद:** 1893 में इस धर्म संसद में दिए गए उनके भाषण ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। वे बाद में "ईश्वरीय अधिकार-प्राप्त वक्ता" और "पश्चिमी दुनिया के लिए भारतीय ज्ञान के दूत" के रूप में लोकप्रिय हुए।

- **रामकृष्ण मिशन:** इसकी स्थापना 1897 में की गई थी। यह मिशन कई तरह के सामाजिक कार्यों- अस्पताल, स्कूल, कॉलेज संचालन आदि में संलग्न है।
- **वैज्ञानिक स्वभाव को बढ़ावा देना:** 1893 में, शिकागो धर्म संसद में जाते समय, उनकी मुलाकात जमशेदजी टाटा से हुई थी। उन्होंने जमशेदजी टाटा को भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) की स्थापना के लिए प्रेरित किया था। IISc की स्थापना 1909 में बैंगलोर में हुई थी।

4.6. श्री रतन नवल टाटा (Shri Ratan Naval Tata)

हाल ही में, प्रतिष्ठित भारतीय उद्योगपति एवं लोकोपकारक श्री रतन टाटा (1937-2024) का निधन हो गया।

उनके अनुकरणीय औद्योगिक नेतृत्व में उपलब्धियां

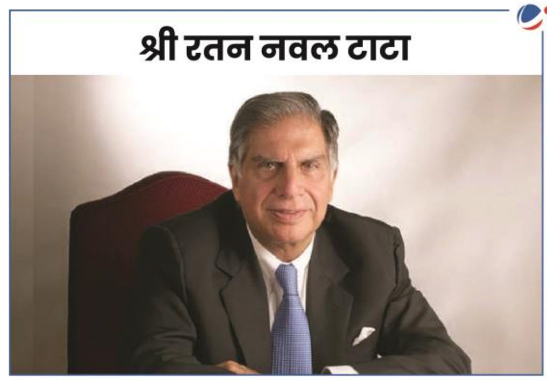

- इनके नेतृत्व में टाटा समूह का राजस्व **5 बिलियन डॉलर से बढ़कर 100 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया है।** यह समूह भारत में **सबसे बड़े नियोक्ताओं में से एक** है।
- उन्होंने **दुनिया** की सबसे किफायती कार **'टाटा नैनो'** लॉन्च की थी।
- **पेटा इंडिया** द्वारा रतन टाटा को उनकी **अविन्या कॉन्सेप्ट कार में वीगन (Vegan) इंटीरियर के उपयोग के लिए काऊ-फ्रेंडली फ्यूचर अवार्ड** से सम्मानित किया गया था। इस कॉन्सेप्ट का उद्देश्य **पर्यावरण संरक्षण और पशु कल्याण को बढ़ावा** देना था।
- **पुरस्कार:** पद्म भूषण (2000), पद्म विभूषण (2008), अर्न्स्ट एंड यंग एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर-लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड (2013) आदि।

5. पुरस्कार/सम्मान (Awards)

5.1. भारत रत्न (Bharat Ratna)

सुर्ख़ियों में क्यों?

पी.वी. नरसिम्हा राव, चौधरी चरण सिंह, एम.एस. स्वामीनाथन, लालकृष्ण आडवाणी और **कर्पूरी ठाकुर** को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया।

भारत रत्न के बारे में

- इसे भारत के **राष्ट्रपति** द्वारा व्यक्तियों को किसी भी क्षेत्र में **'उत्कृष्ट सेवा के लिए'** दिया जाता है।
- **नाम की सिफारिश:** किसी व्यक्ति को यह सम्मान देने की सिफारिश भारत के प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति से की जाती है। गौरतलब है कि इसके लिए **कोई औपचारिक सिफारिश करने की जरूरत नहीं** होती है।
- **सम्मान:** भारत रत्न प्राप्तकर्ता को सम्मान के रूप में **एक पदक** और राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक सनद (प्रमाण-पत्र) दी जाती है।
  - इस सम्मान के तहत **किसी प्रकार की मौद्रिक राशि नहीं** दी जाती है।
- **स्थापना:** भारत रत्न सम्मान की स्थापना 2 जनवरी, 1954 को **पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद** ने की थी।
- **विनियमन:** संविधान के **अनुच्छेद 18(1)** के अनुसार, इस सम्मान को प्राप्त करने वाला व्यक्ति **अपने नाम के आगे या पीछे या उपाधि के रूप** भारत रत्न शब्दावली नहीं जोड़ सकते।
  - हालांकि, सम्मान प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपने बायोडाटा, विजिटिंग कार्ड, लेटरहेड आदि में **"राष्ट्रपति द्वारा भारत रत्न से सम्मानित"** या "भारत रत्न सम्मान प्राप्तकर्ता" शब्दावली का इस्तेमाल कर सकता है।
- **भारत रत्न सम्मान प्राप्त करने वाले आरंभिक व्यक्ति:** पहली बार यह सम्मान **1954 में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन** और **डॉ. सी.वी. रमन** को दिया गया था।
  - यह सम्मान **दूसरे देशों के नागरिकों को भी** दिया जाता है। **मदर टेरेसा, खान अब्दुल गफ्फार खान और नेल्सन मंडेला** जैसे विदेशियों को भारत रत्न से सम्मानित किया जा चुका है।
- **अन्य संबंधित तथ्य:**
  - **आरंभ में यह सम्मान व्यक्ति के मरणोपरांत नहीं** दिया जाता था। हालांकि, **1966 में लाल बहादुर शास्त्री को यह सम्मान उनकी मृत्यु के उपरांत** दिया गया, **तब से मरणोपरांत व्यक्तियों को भी** यह सम्मान दिया जाने लगा।
  - 2014 में **सचिन तेंदुलकर** को भारत रत्न सम्मान दिया गया था। वे यह सम्मान प्राप्त करने वाले **सबसे कम उम्र के व्यक्ति और प्रथम खिलाडी (स्पोर्ट्सपर्सन)** थे।
  - प्रत्येक वर्ष **अधिकतम तीन पुरस्कार दिए जा सकते हैं।** हालांकि, अपवाद-स्वरूप **2024 और 1999 में** क्रमशः **पांच और चार** व्यक्तियों को भारत रत्न सम्मान प्राप्त हुआ।

भारत रत्न पदक का डिजाइन

- **आकार और लेख:** इस पदक का डिजाइन पीपल के पत्ते जैसा है। इसमें एक तरफ सूर्य की चमकदार आकृति के नीचे देवनागरी लिपि में 'भारत रत्न' अंकित है।
- **दूसरा भाग:** पदक के दूसरे भाग पर भारत का राजचिन्ह (अशोक स्तम्भ) उत्कीर्ण है तथा इसके नीचे देवनागरी लिपि में 'सत्यमेव जयते' लिखा हुआ है।
- **सामग्री:** भारत रत्न पदक पर लगा प्रतीक, सूर्य और किनारा प्लैटिनम से बने हैं, जबकि लेख चमकदार कांस्य से तैयार किया जाता है।
- **निर्माण:** इस पदक का निर्माण **कोलकाता की अलीपुर टकसाल** में किया जाता है।

© Vision IAS

5.2. नोबेल पुरस्कार (Nobel Prizes)

नोबेल पुरस्कार के बारे में

यह एक **अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार** है, जिसकी स्थापना **स्टॉकहोम (स्वीडन)** स्थित नोबेल फाउंडेशन ने की है। इन पुरस्कारों की स्थापना **अल्फ्रेड नोबेल** की अंतिम इच्छा यानी उनके **वसीयतनामे (1895)** के आधार पर हुई है।

नोबेल पुरस्कार

श्रेणियां	पुरस्कार देने वाली संस्था
भौतिकी	रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज
रसायन विज्ञान	रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज
अर्थशास्त्र	रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज
साहित्य	स्वीडिश एकेडमी, स्टॉकहोम, स्वीडन
चिकित्सा या फिजियोलॉजी	कारोलिंस्का इंस्टीट्यूट में नोबेल असेंबली, स्टॉकहोम (स्वीडन)
शांति पुरस्कार	नॉर्वेजियन नोबेल कमिटी

पुरस्कार विजेता को क्या मिलता है?

- नोबेल डिप्लोमा (विशिष्ट कलात्मक प्रस्तुति)
- नोबेल मेडल
- 10 मिलियन स्वीडिश क्रोनर की पुरस्कार राशि

नोबेल पुरस्कार 2024

- **साहित्य का नोबेल पुरस्कार: दक्षिण कोरियाई लेखिका हान कांग**
  - **प्रमुख कृतियां:** द वेजीटेरियन, द व्हाइट बुक, ह्यूमन एक्ट्स और ग्रीक लेसंस
- **नोबेल शांति पुरस्कार: जापानी संगठन निहोन हिडांक्यो**
  - **प्रमुख कार्य:** परमाणु हथियारों से मुक्त विश्व बनाने के प्रयास किया गया

नोट: अन्य नोबेल पुरस्कारों को संबंधित PT 365 डाक्यूमेंट्स में कवर किया गया है।

5.3. अन्य महत्वपूर्ण पुरस्कार/ सम्मान (Other Important Awards)

5.3.1. पद्म पुरस्कार (Padma Awards)

राष्ट्रपति ने नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में पद्म पुरस्कार प्रदान किए।

पद्म पुरस्कारों के बारे में

- पद्म पुरस्कार **भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों** में से एक हैं। इन्हें **1954 में स्थापित** किया गया था। इनकी घोषणा **हर साल गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या** पर की जाती है।
- **पद्म पुरस्कारों की तीन श्रेणियां हैं:**
    - **पद्म विभूषण:** असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए,
    - **पद्म भूषण:** उच्च स्तर की विशिष्ट सेवा के लिए, और
    - **पद्म श्री:** विशिष्ट सेवा के लिए।
- ये पुरस्कार **कला, चिकित्सा, साहित्य, शिक्षा और खेल** जैसे अलग-अलग विषयों एवं क्षेत्रों के तहत दिए जाते हैं।
- आम तौर पर ये पुरस्कार **मरणोपरांत नहीं** दिए जाते हैं। हालांकि, अत्यधिक योग्य होने की स्थिति में, सरकार व्यक्ति को मरणोपरांत पुरस्कार देने की घोषणा कर सकती है।
- यह पुरस्कार **कोई 'उपाधि' नहीं** है। इसलिए, यह पुरस्कार प्राप्त करने वाला व्यक्ति इस पुरस्कार का **अपने नाम के आगे या अंत में उपाधि के रूप में उपयोग नहीं** कर सकता है।

5.3.2. अनुभव पुरस्कार (Anubhav Awards)

7वां अनुभव पुरस्कार समारोह **विज्ञान भवन, नई दिल्ली** में आयोजित किया गया।

अनुभव पुरस्कार के बारे में

- यह **पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग** द्वारा प्रदान किया जाता है।
- यह **अनुभव लेखन,** अर्थात सेवानिवृत्त होने वाले/ सेवानिवृत्त केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों/ पेंशनभोगियों द्वारा '**अनुभव पोर्टल' पर अनुभवों के साझाकरण पर आधारित** है।
- **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य सेवानिवृत्त कर्मचारियों द्वारा साझा किए गए अनुभवों के आधार पर **भविष्य में सुशासन और प्रशासनिक सुधारों को बढ़ावा** देना है।

5.3.3. वीरता पुरस्कार (Gallantry Awards)

राष्ट्रपति ने स्वतंत्रता दिवस (2024) के अवसर पर सशस्त्र बलों और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (CAPFs) के जवानों के लिए **103 वीरता पुरस्कारों** को मंजूरी प्रदान की।

वीरता पुरस्कारों के बारे में

- **पुरस्कारों का वरीयता क्रम**: परमवीर चक्र, अशोक चक्र, महावीर चक्र, कीर्ति चक्र, वीर चक्र और शौर्य चक्र।
- **इन पुरस्कारों की घोषणा वर्ष में दो बार- गणतंत्र दिवस** के अवसर पर और **स्वतंत्रता दिवस** के अवसर पर की जाती है।
- **युद्धकालीन वीरता पुरस्कार- परमवीर चक्र, महावीर चक्र और वीर चक्र** की शुरुआत 1950 में की गई थी।
- **अशोक चक्र क्लास-I, क्लास-II और क्लास-III** 1952 में शुरू किए गए थे। 1967 में इनका नाम बदलकर क्रमशः **अशोक चक्र, कीर्ति चक्र और शौर्य चक्र** कर दिया गया।
- ये **शांतिकालीन वीरता पुरस्कार** हैं।

ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज (All India Test Series) : इस परीक्षा में अपने प्रदर्शन को बेहतर करने हेतु हर तीन में से दो चयनित अभ्यर्थियों द्वारा इसे चुना जाता रहा है। VisionIAS पोस्ट टेस्ट एनालिसिस ठोस सुधारात्मक उपाय उपलब्ध कराता है एवं प्रदर्शन में निरंतर सुधार सुनिश्चित करता है। उत्तर लेखन में सुधार एवं मार्गदर्शन के लिए Vision IAS के Innovative Assessment System™ द्वारा अभ्यर्थी को फीडबैक दिया जाता है।

- ऑल इंडिया सामान्य अध्ययन (GS Mains) टेस्ट सीरीज एवं मेंटरिंग प्रोग्राम
- ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज एवं मेंटरिंग प्रोग्राम
- CSAT टेस्ट सीरीज
- वैकल्पिक विषय टेस्ट सीरीज– दर्शनशास्त्र, भूगोल, राजनीति विज्ञान एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध, समाजशास्त्र
- संधान टेस्ट सीरीज
- ओपन टेस्ट (Open Test)
- Abhyaas– Abhyaas Prelims & Mains

मेंटरिंग कार्यक्रम – UPSC सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के दौरान किसी भी प्रकार की एकेडेमिक या गैर–एकेडे. मिक समस्या के समाधान एवं मार्गदर्शन के लिए मेंटर की भूमिका बढ़ गई है। इसलिए Vision IAS प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा दोनों के लिए मेंटरिंग प्रोग्राम लेकर आया है।

- दक्ष (Daksha): आगामी वर्षों में मुख्य परीक्षा देने वाले
- लक्ष्य (Lakshya): मुख्य परीक्षा देने वाले अभ्यर्थियों के लिए।
- लक्ष्य प्रीलिम्स एवं मेंस इंटीग्रेटेड प्रोग्राम।

करेंट अफेयर्स (Current Affairs)– सिविल सेवा परीक्षा में प्रायः प्रश्नों को करेंट अफेयर्स से जोड़कर पूछा जाता है। इसलिए Vision IAS द्वारा प्रतिदिन, साप्ताहिक और मासिक आधार पर करेंट अफेयर्स के अलग–अलग स्रोत अभ्यर्थियों को उपलब्ध करवाए जाते हैं। जिनमें टॉपिक के स्टैटिक के साथ करेंट अफेयर्स के टॉपिक में महत्वपूर्ण समाचार पत्रों, सरकारी प्रकाशनों एवं वेब साइट का विश्लेषण सम्मिलित होता है।

- मासिक मैगजीन
- वीकली फोकस
- न्यूज टुडे
- PT 365
- Mains 365

स्टडी मैटेरियल– सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी में अभ्यर्थियों को गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाने के लिए Vision IAS द्वारा विभिन्न मैटेरियल उपलब्ध कराए जाते हैं।

- क्लासरूम स्टडी मैटेरियल
- वैल्यू एडेड मैटेरियल
- मासिक मैगजीन, वीकली फोकस, न्यूज टुडे
- PT 365 एवं Mains 365
- केन्द्रीय बजट एवं आर्थिक सर्वेक्षण सारांश
- विगत वर्षों के प्रश्नों (PYQs) का विस्तृत विश्लेषण
- टॉपर्स कॉपी

Student Wellness Cell – देश की प्रतिष्ठित सेवा एवं उसकी भर्ती प्रक्रिया कई बार बोझिल हो जाती है, जिससे अभ्यर्थी चिंता, तनाव, अवसाद जैसी मानसिक समस्याओं का सामना करते हैं। जिसे ध्यान में रखकर Vision IAS द्वारा स्टूडेंट वेलनेस सेल की स्थापना की गई है। इसमें अभ्यर्थी प्रशिक्षित काउंसलर और प्रोफेशनल मनोविशेषज्ञ से मिलकर अपनी समस्या साझा करते हुए समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

5.3.4. राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार (National Film Awards)

साल 2022 के लिए **70वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों** की घोषणा की गई।

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों के बारे में

- इन पुरस्कारों को **1954** में स्थापित किया गया था। आरंभ में इन्हें **'स्टेट अवाड्र्स'** कहा जाता था।
- शुरुआती वर्षों में पुरस्कार के रूप में **2 राष्ट्रपति स्वर्ण पदक, 2 उत्कृष्ट प्रमाण-पत्र और क्षेत्रीय फिल्मों के लिए 12 रजत पदक** प्रदान किए जाते थे।
- इन पुरस्कारों का प्रबंधन **1973 से फिल्म समारोह निदेशालय** कर रहा है।
- **पुरस्कार निम्नलिखित 3 श्रेणियों में दिए जाते हैं:**
    - **फीचर फिल्म;**
    - **गैर-फीचर फिल्म;** और
    - **सिनेमा में सर्वश्रेष्ठ लेखन।**
- **मोस्ट फिल्म फ्रेंडली स्टेट पुरस्कार:** राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों के साथ-साथ यह पुरस्कार **भारत के उस राज्य को दिया जाता है, जिसने फिल्म उद्योग के विकास को आगे बढ़ाने में सहायता** प्रदान की हो।

5.3.5. यूनेस्को का प्रिक्स वर्साय पुरस्कार, 2023 (UNESCO'S Prix Versailles Award)

भारत का **सबसे बड़ा स्मारक और संग्रहालय,** 'स्मृतिवन भूकंप स्मारक संग्रहालय', **यूनेस्को के प्रिक्स वर्साय पुरस्कार** के लिए चुना गया।

यूनेस्को का प्रिक्स वर्साय पुरस्कार

- **पुरस्कार के बारे में:** यूनेस्को **2015 से प्रतिवर्ष** यह पुरस्कार प्रदान कर रहा है। इसके तहत विश्व स्तर पर सबसे बेहतरीन समकालीन विशेषताओं को दर्शाने वाले स्थापत्य को पुरस्कार दिया जाता है।
- **श्रेणियां:** इस पुरस्कार को **24 वैश्विक टाइटल्स** में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें **हवाई अड्डे, परिसर, यात्री स्टेशन, खेल, संग्रहालय, एम्पोरियम, होटल और रेस्तरां** शामिल हैं।
- **परियोजना का विनिर्देश:** परियोजनाएं **अभिनव, रचनात्मक, स्थानीय विरासत को दर्शाने वाली, पारिस्थितिक रूप से कुशल** और सामाजिक संपर्क और भागीदारी को बढ़ावा देने वाली होनी चाहिए।
    - पुरस्कार की **आधिकारिक सूची में शामिल स्थापत्य** इंटेलीजेंट सस्टेनेबिलिटी के सिद्धांतों का पालन करने वाले होते हैं। साथ ही, ये स्थापत्य परियोजनाएं **पारिस्थितिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों** को भी ध्यान में रखती हैं।
    - **पुरस्कार का महत्त्व:** पुरस्कार प्राप्त स्थापत्य **लिविंग परिवेश (Living environment) को खूबसूरत और बेहतर बनाने** की प्राथमिक भूमिका का उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं।
    - **अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय परियोजनाएं:** दिसंबर 2023 में **केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे, बेंगलुरु (कर्नाटक)** को यूनेस्को के 2023 प्रिक्स वर्साय से सम्मानित किया गया। साथ ही इसे 'दुनिया के सबसे खूबसूरत हवाई अड्डों' में से एक के रूप में भी नामित किया गया।

यूनेस्को विश्व धरोहर समिति के बारे में

UNESCO

- **उत्पत्ति:** इसे 1972 में आयोजित यूनेस्को के 17वें सत्र के दौरान **विश्व धरोहर कन्वेंशन (WHC)** के तहत स्थापित किया गया था।
- **उद्देश्य: "फाइव Cs"** जिसमें शामिल हैं- **Credibility (विश्वसनीयता); Conservation (संरक्षण); Capacity Building (क्षमता निर्माण); Communication (संचार);** और **Communities (समुदाय)**
- **मुख्य भूमिका:**
    - यह **किसी संपदा को विश्व धरोहर सूची में शामिल करने का अंतिम निर्णय** लेती है।
    - यह **विश्व धरोहर कोष** के उपयोग का तरीका निर्धारित करती है और सदस्य देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
    - यह विश्व धरोहर सूची में शामिल संपदाओं के संरक्षण की स्थिति पर रिपोर्ट की जांच करती है।
- **सदस्य:** कन्वेंशन के पक्षकार देशों में से **21 प्रतिनिधि** चुने जाते हैं। इन्हें आम सभा द्वारा छह वर्षों के लिए चुना जाता है। **भारत को 2021-2025 के लिए विश्व धरोहर समिति में सदस्य** चुना गया है।
- **प्रमुख भागीदार:**
    - **ICCROM:** सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को बढ़ावा।
    - **ICOMOS:** स्थापत्य और भूक्षेत्र (landscape) आधारित धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए जिम्मेदार।

स्मृतिवन भूकंप स्मारक संग्रहालय के बारे में

- **स्थापना: 2001 के गुजरात भूकंप पीड़ितों की याद में** निर्मित इस संग्रहालय का उद्घाटन 2022 में किया गया था।
    - 2001 के गुजरात में आए **भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 7.9 थी,** जिसका **केंद्र भुज** था।
- **स्थान:** यह स्मारक भुजियो डूंगर पहाड़ी (गुजरात) पर स्थित है, जहां पर भुजियो किला भी स्थित है, जिसे रोआ गोडजी ने 1723 में भुज की रक्षा के लिए बनवाया था। किले का नाम भुजंग नाग, सर्प मंदिर के नाम पर रखा गया है।
- **मियावाकी वन:** दुनिया के सबसे बड़े मियावाकी वनों में से एक वन इस संग्रहालय में स्थित है।
    - जापानी वनस्पतिशास्त्री अकीरा मियावाकी द्वारा विकसित मियावाकी पद्धति में तेजी से विकास और जैव विविधता को बढ़ावा देने के लिए **आस-पास विभिन्न प्रकार के देशज वृक्ष लगाए जाते हैं।**

© Vision IAS

5.3.6. दादा साहब फाल्के पुरस्कार (Dadasaheb Phalke Award)

2022 का दादा साहब फाल्के लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार प्रख्यात अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती को दिया गया।

दादा साहब फाल्के पुरस्कार के बारे में

- दादा साहब फाल्के पुरस्कार **सिनेमा के क्षेत्र में भारत का सर्वोच्च पुरस्कार** है।
- इसे हर साल **फिल्म महोत्सव निदेशालय** द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।
- इस पुरस्कार की **शुरुआत 1969** में भारतीय सिनेमा के जनक माने जाने वाले **दादा साहब फाल्के के जन्म शताब्दी वर्ष के सम्मान** में की गई थी।
- पुरस्कार प्राप्तकर्ता को **एक स्वर्ण कमल पदक, एक शॉल और नकद पुरस्कार (वर्तमान में 10 लाख रुपये)** मिलता है।
- **कुछ अन्य दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्राप्तकर्ता:** सत्यजीत रे (1985), अमिताभ बच्चन (2018), रजनीकांत (2021), वहीदा रहमान (2023) आदि।

6. सुर्ख़ियों में रही जनजातियां (Tribes in News)

सुर्ख़ियों में रही जनजातियां

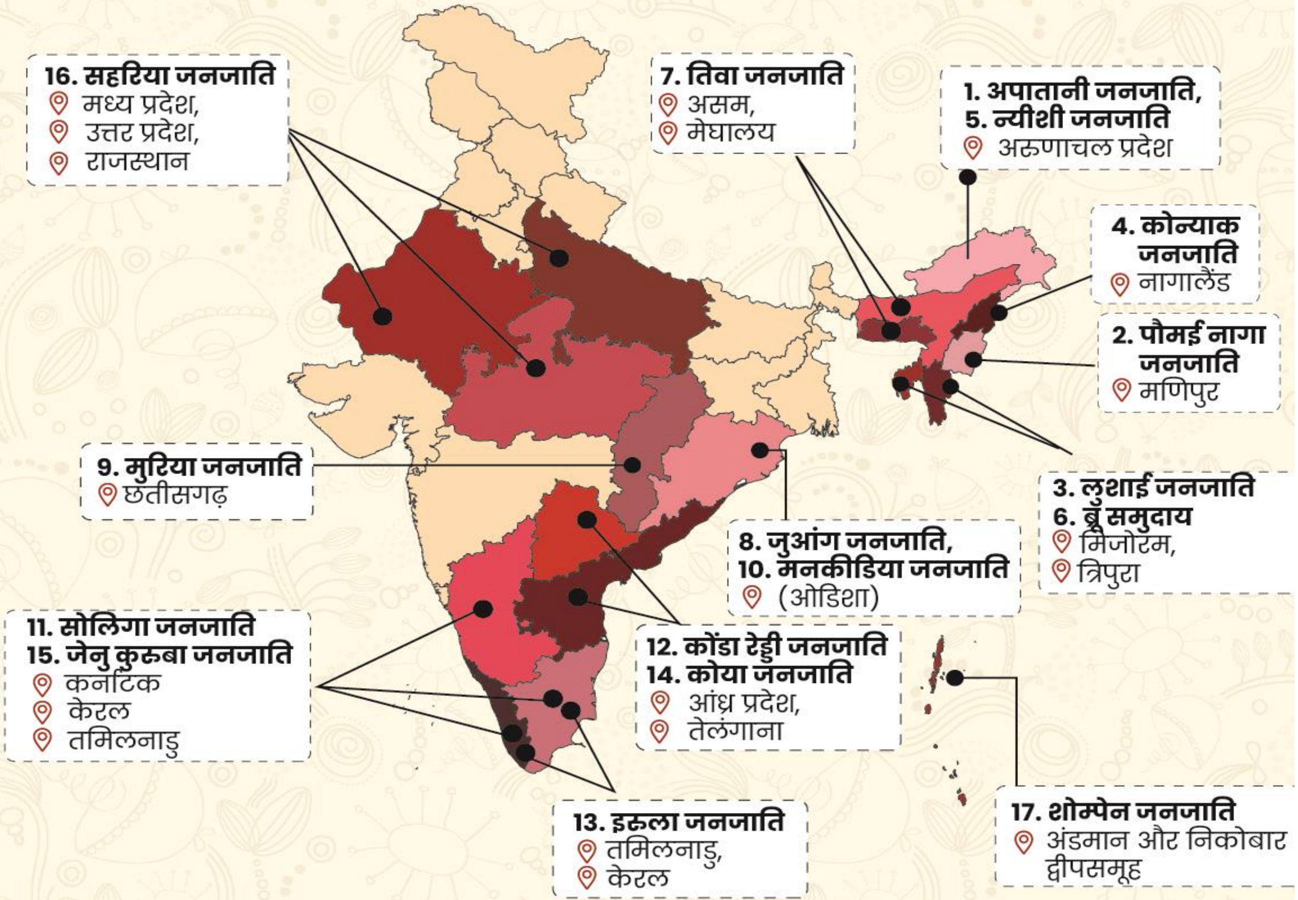

पूर्वोत्तर भारत की जनजातियां

1. अपातानी जनजाति

भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (ZSI) के शोधकर्ताओं ने ताले वन्यजीव अभयारण्य (अरुणाचल प्रदेश) से फ़ॉरेस्ट-ड्वेल्लिंग हॉर्न्ड फ्रॉग की एक नई प्रजाति की खोज की है।

- **इस नई प्रजाति का नाम अरुणाचल प्रदेश के प्रमुख अपातानी समुदाय के नाम पर "जेनोफ्रीस अपातानी" रखा गया है।**

अपातानी जनजाति के बारे में

- यह जनजाति जीरो घाटी में पाई जाती है। यह अपनी प्रभावी पारंपरिक ग्राम परिषद 'बुल्यान' के लिए जानी जाती है।
- इस जनजाति के क्षेत्र को **यूनेस्को की अस्थायी सूची में 'लिविंग कल्चरल लैंडस्केप'** के रूप में शामिल किया गया है। लिविंग कल्चरल लैंडस्केप का आशय ऐसे क्षेत्र से है, जहां मनुष्य और पर्यावरण परस्पर निर्भरता की स्थिति में एक साथ सामंजस्यपूर्ण रूप में अस्तित्वमान होते हैं।
- **प्रमुख त्यौहार:** ड्री और म्योक
- **मुख्य नृत्य:** दामिंडा और प्री नृत्य

© Vision IAS

2. पौमई नागा जनजाति

मणिपुर के सेनापति जिले के पुरुल गांव की पौमई नागा जनजाति ने अपने क्षेत्र में जंगली जानवरों और पक्षियों के शिकार, जाल बिछाने और मारने पर प्रतिबंध लगा दिया है।

पौमई नागा जनजाति के बारे में
- यह **मणिपुर** की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी **नागा जनजातियों में से एक है।**
- यह जनजाति **मणिपुर और नागालैंड** में निवास करती है।
- इस जनजाति के लोग **पौली (मिट्टी के बर्तन) और पौताई (पौ नमक)** उत्पादन के लिए जाने जाते हैं।
- **भाषा: पौला**

3. लुशाई जनजाति

मिजोरम के फौंगपुइ राष्ट्रीय उद्यान में एक दुर्लभ अर्ध-परजीवी स्थलीय पादप **(फेथिरोस्पर्मम लुशाइओरम/ Phtheirospermum lushaiorum)** पाया गया है।
- लुशाइओरम का नाम **मिजोरम की "लुशाई"** जनजाति के नाम पर रखा गया है।

लुशाई जनजाति के बारे में
- यह **कुकी-चिन जनजाति समूह** के अंतर्गत आने वाली एक जनजाति है। नस्लीय रूप से इन्हें **मंगोलॉयड मूल** के अंतर्गत माना जाता है।
- इनका मुख्य व्यवसाय **झूम और संतरे की खेती** है।
- लुशाई को **हेड हंटर समुदाय** के नाम से भी जाना जाता है।
- **बांस नृत्य (चेरौ-नृत्य)** इनका लोकप्रिय नृत्य है।

4. कोन्याक जनजाति

कोन्याक समुदाय की शीर्ष संस्था कोन्याक यूनियन ने गूगल मैप पर दिखाई गई "गलत सीमा रेखा" को सुधारने के लिए नागालैंड सरकार से हस्तक्षेप करने की मांग की है।

कोन्याक जनजाति के बारे में
- यह **मंगोलॉयड मूल** से संबंधित जनजातीय समूह है।
- **ईसाई धर्म** अपनाने से पहले वे प्रकृति के विविध रूपों की पूजा करते थे। इस प्रकार वे **"सर्वात्मवाद (Animism)"** का पालन करते थे।
- कोन्याक भाषा चीनी-तिब्बती भाषा कुल के साल उप-कुल की उत्तरी नागा उप शाखा से संबंधित है।
- कोन्याक जनजाति के लोगों को पहले 'हेड हंटर्स' के नाम से पुकारा जाता था।
- इस जनजाति में पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था प्रचलित है।

5. न्यीशी जनजाति

हाल ही में, **कबक यानो माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली अरुणाचल प्रदेश की न्यीशी जनजाति की पहली महिला** बन गई है।

न्यीशी जनजाति के बारे में
- इस जनजाति को पहले डफला के नाम से जाना जाता था। यह अरुणाचल प्रदेश का सबसे बड़ा नृजातीय समुदाय है।
- न्यीशी समाज न तो जाति व्यवस्था पर आधारित है और न ही वर्गों में विभाजित है।
- **इस जनजाति में बहुपत्नीत्व विवाह (Polygyny) का नियम प्रचलित है। यह समुदाय लोंगटे उत्सव (नए कृषि मौसम का प्रतीक) मनाता है।**
- यह समुदाय मानता है कि वे अबो तानी (पृथ्वी पर पहले इंसान की संतान) के वंशज हैं।
  - इस कारण से न्यीशी, आदी, गालो, अपातानी इत्यादि स्वयं को तानी जनजातीय समुदाय कहते हैं।

© Vision IAS

6. ब्रू समुदाय

त्रिपुरा में पहली बार ब्रू समुदाय ने लोक सभा चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

ब्रू समुदाय के बारे में

- **ब्रू** समुदाय को **रियांग** के नाम से भी जाना जाता है। यह समुदाय ऐतिहासिक रूप से **मिजोरम, त्रिपुरा और दक्षिणी असम** के कुछ हिस्सों में रहता आ रहा है।
  - **त्रिपुरा** में रियांग को **"विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG)"** के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- ये **मिजोरम की मिजो जनजाति** से नृजातीय रूप से भिन्न हैं।
  - गौरतलब है कि **1997 में मिजो जनजाति के साथ नृजातीय संघर्ष** के बाद 30,000 से अधिक **ब्रू मिजोरम से पलायन** कर गए थे। उन्हें त्रिपुरा के शरणार्थी शिविरों में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा था।
- 2020 में **केंद्र सरकार, त्रिपुरा और मिजोरम की सरकारों तथा ब्रू-रियांग प्रतिनिधियों** ने एक **चतुष्पक्षीय समझौते** पर हस्ताक्षर किए थे। इस समझौते में **त्रिपुरा में ब्रू शरणार्थियों को स्थायी रूप से बसाने** पर सहमति बनी थी।

7. तिवा जनजाति

हाल ही में, पूर्वोत्तर भारत की तिवा जनजाति ने अपना महत्वपूर्ण सांस्कृतिक उत्सव यांगली उत्सव मनाया।

- यह कुछ वर्षों में एक बार मनाया जाता है। यह अच्छी फसल पैदावार होने के लिए देवी लक्ष्मी को प्रसन्न करने हेतु मनाया जाता है।

तिवा जनजाति के बारे में

- **भौगोलिक निवास क्षेत्र:** यह एक नृजातीय समूह है, जो मुख्य रूप से **असम और मेघालय** के क्षेत्रों में निवास करती है। यह **अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और नागालैंड के कुछ हिस्सों** में भी पाई जाती है।
- **भाषा:** यह जनजाति **तिवा** (जिसे **लालुंग** भी कहा जाता है) भाषा बोलती है। यह **तिब्बती-बर्मन भाषा** परिवार से संबंधित है।
- **पारंपरिक परिधान: पुरुषों** के लिए **"सादोर"** (ऊपरी वस्त्र पर एक पट्टी) और **महिलाओं** के लिए **"मेखला चादर"।**

पूर्वी भारत की जनजातियां

8. जुआंग जनजाति

जिला स्तरीय समिति ने **ओडिशा के क्योंझर में रहने वाली जुआंग जनजाति को पर्यावास अधिकार** प्रदान किए।

- इसके अलावा, पर्यावास अधिकार प्राप्त करने वाली अन्य जनजातियों में **जाजपुर (ओडिशा) की जौंग; देवगढ़ (ओडिशा) की पौडी भुइयां; मध्य प्रदेश की भारिया PVTG तथा छत्तीसगढ़ की कमार PVTG और बैगा PVTG** आदि शामिल हैं।

जुआंग जनजाति (ओडिशा) के बारे में

- **मूलवासी: जुआंग पहाड़ी (थानिया) और मैदानी (भागुडिया)** के रूप में विभाजित है। यह समुदाय **क्योंझर की पहाड़ियों, अनुगुल के पल्लाहारा और ढेंकनाल के मैदान** में निवास करता है।
- **इतिहास:** मूल रूप से यह समुदाय **पटुआ** के नाम से जाना जाता है। पटुआ नाम दरअसल **स्कर्ट जैसी पत्तों की पारंपरिक पोशाक पहनने** के कारण प्रचलन में आया है।
- **व्यवसाय:** यह जनजाति मूल रूप से **स्थानांतरित खेती या तोइला चासा** के कार्य में संलग्न है। हालांकि, इनमें से कुछ अब **स्थायी कृषि** करने लगे हैं।
  - यह जनजाति **सजावटी कंघियां और तम्बाकू के डिब्बे** बनाने के कार्य में दक्ष है।

पर्यावास अधिकार

- पर्यावास अधिकार को **अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वनवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम,** 2006 के तहत उपबंधित किया गया था। इस कानून को **वन अधिकार अधिनियम (FRA)** के रूप में भी जाना जाता है।

© Vision IAS

9. मुरिया जनजाति

आंध्र प्रदेश के अल्लूरी सीताराम राजू जिले में **मुरिया जनजाति बीजों को संरक्षित** करने की पारंपरिक विधि '**डेडा**' का इस्तेमाल कर रही है।

डेडा पद्धति के बारे में
- इस विधि में **बीजों को पत्तियों** में लपेटा जाता है। इसके बाद **गोलाकार बंडल के रूप में कसकर बांधा** जाता है और **सियाली पत्तियों के साथ बुना** जाता है।
- **लाभ:** यह विधि **बीजों को कीटों और कीड़ों से बचाती** है। इसके अंतर्गत **बीजों को 5 साल तक संग्रहीत एवं उपयोग** किया जा सकता है।

मुरिया जनजाति के बारे में
- यह **छत्तीसगढ़ की गोंड जनजाति** का उप-समूह है। यह समुदाय **छत्तीसगढ़** राज्य में रहता है।
- इनका संबंध **बस्तर के मुरिया विद्रोह (1876)** से है। यह विद्रोह **बस्तर के दीवान गोपीनाथ कपरदास** के खिलाफ किया गया था।
- **रीति-रिवाज:**
  - **मृत स्तंभ (गुड़ी):** इसके तहत मृतकों को दफनाने के बाद 6 से 7 फीट ऊंची शिला रखी/ बनाई जाती है।
  - **घोटुल:** यह एक प्रकार की कुटीर है, जहां आदिवासी युवक और युवतियां अपना जीवनसाथी चुनते हैं।

10. मनकीडिया जनजाति

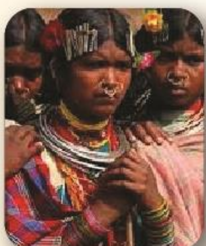

ओडिशा के मनकीडिया लोगों को अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 के तहत औपचारिक रूप से अधिवास अधिकार प्रदान किए गए हैं।

मनकीडिया जनजाति के बारे में
- यह **विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTGs)** में से एक है।
- यह **बिरहोर जनजाति** का एक अर्ध-घुमंतू वर्ग है।
- यह समुदाय **बंदरों को पकड़ने तथा छोटे पक्षियों एवं जीवों को जाल में फंसाने की अपनी कुशलता के लिए प्रसिद्ध है।**
- यह जनजाति पत्तों से बनी गुम्बदाकार झोपड़ियों में रहती है, जिन्हें **'कुंभ'** कहा जाता है।
- ये अपनी स्वयं की एक ऐसी भाषा बोलते हैं, जो **ऑस्ट्रो-एशियाई भाषा समूह की मुंडा शाखा से संबंधित है।**

दक्षिण दक्षिण भारत की जनजातियां

11. सोलिगा जनजाति

सोलिगा जनजाति एक अलग-थलग रहने वाला जनजातीय समुदाय है। यह जनजाति केवल कर्नाटक और तमिलनाडु विशेष रूप से बिलिगिरी रंगना पहाड़ियों और माले महादेश्वर पहाड़ियों में निवास करती है।
- **व्यवसाय और जीवनशैली:** वे जंगल के मौसमी चक्र के अनुरूप **खेती और शिकार** करते हैं।
- ये लोग **"सोलिगा"** बोलते हैं जो कि एक **द्रविड़ भाषा** है।
- उनके पारंपरिक त्यौहार **रोट्टी हब्बा, होसा रागी हब्बा, मारी हब्बा** एवं **गौरी हब्बा** आदि हैं।

अन्य जानकारी:
- **जैव विविधता एवं संरक्षण प्रयासों में सोलिगा समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका** को मान्यता देने के लिए, ततैये की एक नई प्रजाति, '**सोलिगा एकरिनाटा**' का नाम सोलिगा समुदाय के नाम पर रखा गया है।
- **सोलिगा वस्तुतः** टाइगर रिजर्व के अंदर रहने वाला **पहला ऐसा आदिवासी समुदाय** है, जिसे 2011 में वन पर कानूनी अधिकार प्रदान किया गया था।

12. कोंडा रेड्डी जनजाति

कोंडा रेड्डी जनजाति ने **भारतीय लॉरेल (Indian Laurel) वृक्ष से जुड़े अपने स्वदेशी ज्ञान को वन अधिकारियों के साथ साझा** किया।

कोंडा रेड्डी के बारे में
- इनकी बस्तियां **आंध्र प्रदेश में गोदावरी नदी** के किनारे पाई जाती हैं। यह आंध्र प्रदेश का **विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह** (PVTG) है।
- यह जनजाति **पोडू कृषि** करती है। यह एक प्रकार की **स्थानांतरण कृषि** है।

भारतीय लॉरेल (टर्मिनलिया टोमेंटोसा) वृक्ष के बारे में
- यह एक प्रकार का **पर्णपाती वृक्ष** है। यह **30 मीटर** तक बढ़ सकता है।
- **ग्रीष्मकाल** के दौरान यह अपने **तने में जल संचित करने की क्षमता** के लिए जाना जाता है।
- **रक्तस्राव (Haemorrhage), अल्सर, फ्रैक्चर** आदि के उपचार में इस पेड़ की **छाल और पत्तों** का उपयोग किया जाता **है।**
- यह **इंडियन सिल्वर ओक** के नाम से भी जाना जाता है। इसकी **लकड़ी का व्यावसायिक मूल्य बहुत अधिक है।**

13. इरुला जनजाति

इरुला जनजाति के लोगों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। यह जनजाति **सांप का विष निकालने और बेचने** के लिए लोकप्रिय है।
- इरुला समुदाय **भारत में एंटीडॉट्स के लिए उपयोग किए जाने वाले लगभग 80% विष की आपूर्ति करके लोक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका** निभाता है।

इरुला जनजाति के बारे में
- यह जनजाति **तमिलनाडु के PVTGs** में से एक है।
- यह जनजाति **तमिलनाडु के नीलगिरी क्षेत्र** में रहती है। **पूर्वज पूजा का इनके जीवन में विशेष महत्त्व** है।
- यह जनजाति **कर्नाटक और केरल** में भी निवास करती है।
- नृविज्ञान साहित्य के अनुसार, **इरुला भारत के सबसे प्राचीन आदिवासी समुदायों में से एक** है। इनका संबंध **नेग्रिटो प्रजाति (अफ्रीका से विस्थापित)** से बताया जाता है।
- ये **इरुला भाषा** बोलते हैं। यह भाषा **तमिल लिपि में लिखी** जाती है।

14. कोया जनजाति

आंध्र प्रदेश में महुआ शराब पर स्पेशल एनफोर्समेंट ब्यूरो के छापे ने **कोया जनजाति को निशाना** बनाया है। गौरतलब है कि महुआ शराब बनाना कोया जनजाति की पारंपरिक प्रथाओं का हिस्सा रहा है। इसलिए, एनफोर्समेंट ब्यूरो के छापे को कोया समुदाय की पारंपरिक प्रथाओं के खिलाफ माना जा रहा है।
- **महुआ एक उष्णकटिबंधीय** वृक्ष है। इस वृक्ष को कोया जनजाति **पवित्र** मानती है। इसके **फूलों का उपयोग शराब बनाने** में किया जाता है।

कोया जनजाति के बारे में
- **निवास स्थान: ये गोदावरी जिले (आंध्र प्रदेश)** के उत्तर की ओर तथा **मलकानगिरी जिले (ओडिशा)** में पहाड़ियों एवं वनों में रहते हैं।
- **व्यवसाय:** परंपरागत रूप से, कोया **चरवाहे और स्थानांतरित कृषक** रहे हैं। हालांकि, अब उन्होंने **स्थायी खेती करना शुरू** कर दिया है।

संस्कृति:
- ये **कोया भाषा** बोलते हैं, जो **द्रविड़ भाषा** परिवार से संबंधित है।
- कोया समुदाय कई वार्षिक धार्मिक त्यौहार जैसे- **बिज्जा पांडु, कोडता पांडु, बिमुद पांडु** आदि मनाता है।

© Vision IAS

15. जेनु कुरुबा जनजाति

हाल ही में, पश्चिमी घाट में रहने वाली जेनु कुरुबा जनजाति सुर्ख़ियों में रही।

जेनु कुरुबा जनजाति के बारे में

- **भौगोलिक निवास:** यह जनजाति **"हादी"** नामक छोटी बस्तियों में रहती है। यह मुख्य रूप से **कर्नाटक, केरल व तमिलनाडु** में निवास करती है।
  - इस समुदाय के लोग **नागरहोल और बांदीपुर टाइगर रिज़र्व** जैसे वनों में भी निवास करते हैं।
- **सांस्कृतिक व आर्थिक गतिविधियां:** यह पारंपरिक रूप से **शहद एकत्रित** करने के लिए विख्यात है। यह **गौण वनोपज** भी एकत्र करती है।
- **भाषा:** यह जनजाति **जेनु नुदी भाषा** बोलती है। यह भाषा **कन्नड़** के समान है।

उत्तर-पश्चिमी भारत की जनजातियां

16. सहरिया जनजाति

हाल ही में राजस्थान के बारां जिले में सहरिया जनजाति के 100 से अधिक बच्चों के कुपोषित होने के मामले सामने आए हैं।

सहरिया जनजाति के बारे में

- सहरिया उन **PVTGs में से एक है, जो मुख्यतः मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान** में निवास करते हैं।
- सहरिया लोग **गांव में अलग-अलग बस्तियों** में रहते हैं, जिन्हें **सहराना** कहा जाता है।
- **आर्थिक गतिविधियां:** कृषि (मुख्यतः वर्षा आधारित), गौण वनोपज का संग्रहण आदि।

अंडमान और निकोबार की जनजातियां

17. शोम्पेन जनजाति

शोम्पेन जनजाति ने पहली बार लोक सभा चुनाव में वोट डाला है।

शोम्पेन जनजाति के बारे में

- यह **विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह** (PVTG) है।
- यह जनजाति **ग्रेट निकोबार द्वीप** के सघन उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों में निवास करती है।
- यह जनजाति **मंगोलॉइड नृजातीय समूह** से संबंधित है।
- 2011 की जनगणना के अनुसार शोम्पेन जनजाति की **अनुमानित जनसंख्या** 229 है।
- वे **शिकारी और खाद्य संग्राहक** हैं। वे जंगली सूअर, अजगर, मॉनिटर छिपकली, मगरमच्छ आदि का शिकार करते हैं।

फाउंडेशन कोर्स सामान्य अध्ययन 2026
▸ प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
DELHI: 4 फरवरी, 11 AM | JAIPUR: 18 फरवरी | JODHPUR: 3 दिसंबर | प्रवेश प्रारम्भ BHOPAL | LUCKNOW
Scan the QR CODE to download VISION IAS App. Join official telegram group for daily MCQs & other updates.
/visionias.upsc /c/VisionIASdelhi /c/VisionIASdelhi /t.me/s/VisionIAS_UPSC
DELHI: HEAD OFFICE: 1st floor, Apsara Arcade, Near Gate-7 Karol Bagh Metro Station, 1/8 b, Pusa Road, Karol Bagh, Delhi – 110005 | CONTACT: 8468022022, 9019066066
AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | CHANDIGARH | GUWAHATI | HYDERABAD | JAIPUR | JODHPUR | LUCKNOW | PRAYAGRAJ | PUNE | RANCHI

7. विविध (Miscellaneous)

7.1. तीर्थयात्री कॉरिडोर परियोजनाएं (Pilgrim Corridor Projects)

सुर्ख़ियों में क्यों?

केंद्रीय बजट 2024-25 में घोषणा की गई कि **बिहार के गया में विष्णुपद मंदिर और बोधगया में महाबोधि मंदिर के लिए कॉरिडोर परियोजना शुरू की जाएगी।**

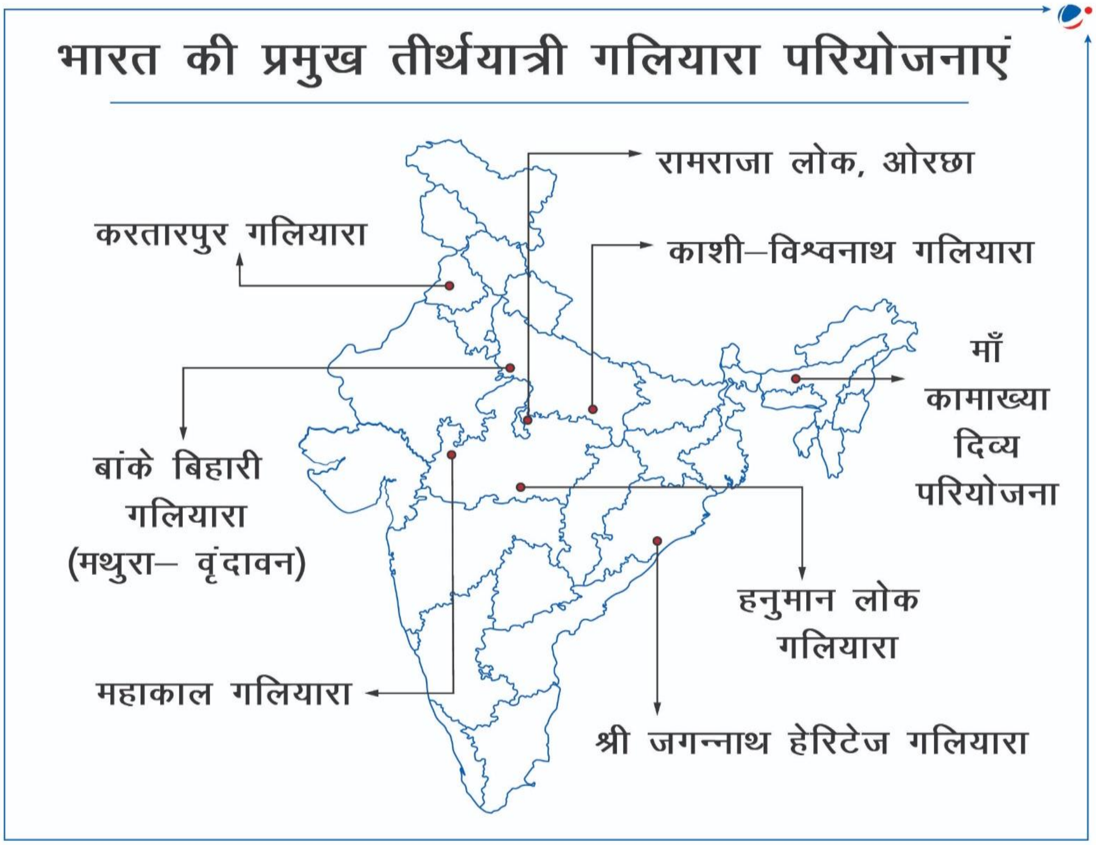

अन्य संबंधित तथ्य

- **विष्णुपद मंदिर और बोधगया में महाबोधि मंदिर** एक-दूसरे से **लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर** स्थित हैं।
- **विष्णुपद और महाबोधि मंदिर** को उत्तर प्रदेश के **काशी विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर की तर्ज पर** विकसित किया जाएगा।
- **काशी विश्वनाथ कॉरिडोर** की आधारशिला 2019 में रखी गई थी। इसे **श्री काशी विश्वनाथ धाम के नाम** से भी जाना जाता है।
- इस कॉरिडोर का निर्माण श्री काशी विश्वनाथ मंदिर को गंगा नदी के तट से जोड़ने के लिए एक सुलभ मार्ग उपलब्ध कराने के लिए किया गया है।

तीर्थयात्री कॉरिडोर परियोजनाओं के बारे में

- **संरक्षण और जीर्णोद्धार:** उदाहरण के लिए- **काशी विश्वनाथ कॉरिडोर** परियोजना के तहत मंदिर के आस-पास के क्षेत्र का विस्तार किया गया। साथ ही, शीतला माता मंदिर, श्री राम मंदिर सहित अन्य लघु आकार के मंदिरों का जीर्णोद्धार किया गया।
- **विकास और विरासत का अद्भुत संयोग:** उदाहरण के लिए- महाकाल लोक कॉरिडोर में **'शिव पुराण'** की कथा को प्रदर्शित करने वाले भित्ति चित्र उत्कीर्ण हैं।
- **ये कॉरिडोर तीर्थयात्रियों को सुखद एहसास प्रदान करते हैं।**
- **पर्यटन और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा:** आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 के अनुसार, भारत ने पर्यटन से 2.3 लाख करोड़ से अधिक की विदेशी मुद्रा अर्जित की है। यह एक साल में 65.7% की वृद्धि है।

विष्णुपद मंदिर के बारे में

- **स्थान:** यह मंदिर **बिहार के गया में फल्गु नदी के तट** पर स्थित है।
- **प्रमुख देवता:** यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। मंदिर परिसर में बेसाल्ट पत्थर पर भगवान विष्णु के पदचिह्न बने हुए हैं, जिन्हें धर्मशिला के नाम से भी जाना जाता है।

© Vision IAS

- **पदचिह्न को चार प्रतीकों-** शंख (शंख), पहिया (चक्र), गदा, कमल (पद्म) द्वारा चिह्नित किया गया है।
- हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह पदचिह्न उस जगह का प्रतीक है जहां भगवान विष्णु ने राक्षस गयासुर के सिर पर अपना पैर रखकर उसे वश में किया था।
- इस पवित्र स्थल का **उल्लेख महाभारत और रामायण** में भी मिलता है। ऐसी मान्यता है कि इस जगह भगवान राम ने अपने पिता दशरथ के लिए पिंडदान किया था।
- **जीर्णोद्धार:** वर्तमान संरचना का जीर्णोद्धार 1787 में **इंदौर की महारानी देवी अहिल्याबाई** ने करवाया था।

महाबोधि मंदिर परिसर

- **अवस्थिति:** बोधगया (बिहार)
- **वैश्विक मान्यता:** यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल
- **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:**
    - इस स्थल पर पहला मंदिर **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक** ने बनवाया था।
    - वर्तमान मंदिर संरचना, **गुप्त काल के अंत से 5वीं या 6ठी शताब्दी** की है। यह ईंट से निर्मित सबसे पुराने बौद्ध मंदिरों में शामिल है।

- **मुख्य मंदिर:**
    - यह मंदिर भारत की क्लासिकल **स्थापत्य शैली में निर्मित है**। मंदिर का **शिखर (टॉवर) घुमावदार है**। इसके शीर्ष पर आमलक और कलश है।
        - इस मंदिर का निर्माण न तो पूर्ण रूप से **नागर शैली** में हुआ है और न ही पूर्ण रूप से **द्रविड़ शैली** में हुआ है।
        - वास्तव में यह नागर शैली में निर्मित मंदिर की तरह ऊपर की ओर संकरा है, लेकिन यह द्रविड़ मंदिर की शैली की तरह बिना मुड़े (पिरामिडनुमा) ऊपर उठता है।
    - मंदिर में दो प्रवेश द्वार हैं। **एक पूर्व की तरफ है और दूसरा उत्तर दिशा की ओर** है।
    - इसमें **हनीसकल और गीज डिजाइन से सुसज्जित मोल्डिंग सहित निचला तहखाना** भी है। इसके ऊपर बुद्ध की छवियों वाली आलों की एक श्रृंखला है।
- **वज्रासन (हीरे का सिंहासन):**
    - यह पॉलिशदार बलुआ पत्थर का प्लेटफार्म है। यह वह जगह है जहां भगवान बुद्ध ने बैठकर ध्यान किया था।
    - इसे मूल रूप से सम्राट अशोक ने उस स्थल पर बनवाया था जहां भगवान बुद्ध ने बैठकर ध्यान किया था।
- **सात पवित्र स्थल:**
    - **पवित्र बोधि वृक्ष:** यह मंदिर के पश्चिमी भाग में स्थित है। यह उस वृक्ष की पीढ़ी का माना जाता है जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।
    - **अन्य पवित्र स्थल:** अनिमेषलोचन चैत्य (प्रार्थना कक्ष), रत्नचक्र (आभूषण युक्त एम्बुलेटरी), रत्नघर चैत्य, अजपाल निग्रोध वृक्ष (इसके नीचे बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के पांचवें सप्ताह ध्यान किया और ब्राह्मणों के प्रश्नों का उत्तर दिया), कमल तालाब, और राजयत्न वृक्ष।
    - **महात्मा बुद्ध ने स्वयं** बौद्ध 'धम्म यात्रा' के लिए **चार सबसे महत्वपूर्ण स्थानों का उल्लेख किया था**। ये स्थान हैं- **लुंबिनी** (जहां उनका जन्म हुआ था); **बोधगया** (जहां उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था); **सारनाथ** (जहां उन्होंने अपना पहला उपदेश दिया था); और **कुशीनगर** (जहां उन्हें महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था)।

संस्कृति और विरासत के संरक्षण के लिए शुरू की गई अन्य पहलें

- **प्रसाद (PRASHAD) योजना:** इसके तहत धार्मिक पर्यटन के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए देश भर में तीर्थ स्थलों को विकसित करने और उनकी पहचान सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- **हृदय (HRIDAY) योजना:** शहरी नियोजन, आर्थिक संवृद्धि और विरासत संरक्षण को समावेशी तरीके से एक–दूसरे के साथ संयोजित करने हेतु।
- **स्वदेश दर्शन योजना:** इसे देश में थीम आधारित पर्यटन सर्किटों के विकास के लिए शुरू किया गया है।
- **अडॉप्ट ए हेरिटेज 2.0:** इसके तहत स्मारकों के संरक्षण के लिए कॉर्पोरेट हितधारकों के साथ सहयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- **पर्वतमाला परियोजना:** धार्मिक और पर्यटन स्थलों के नजदीक तक कनेक्टिविटी को बढ़ावा देना।
- **काशी तमिल संगमम:** यह पहल तमिलनाडु और काशी (शिक्षा का प्राचीन केंद्र) के बीच सदियों पुराने संबंधों का उत्सव मनाने और उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए शुरू की गई है।

7.2. श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर (Kartarpur Sahib Corridor)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत और पाकिस्तान ने **श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर पर समझौते की वैधता को अगले पांच वर्षों की अवधि के लिए बढ़ाने पर सहमति** व्यक्त की है।

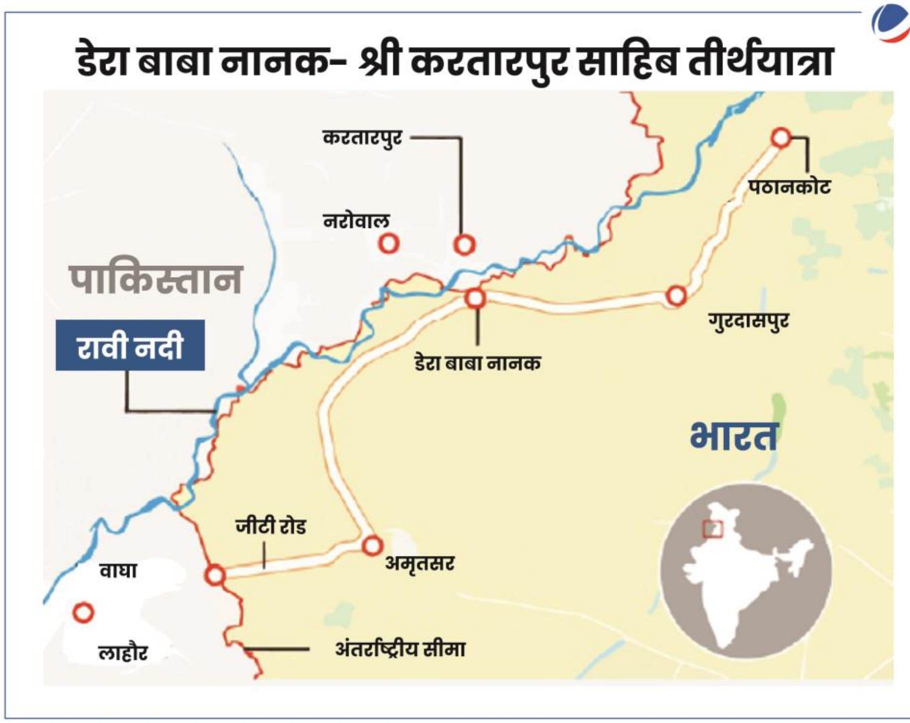

डेरा बाबा नानक - श्री करतारपुर साहिब तीर्थयात्रा के बारे में

- गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब पाकिस्तान के नारोवाल जिले में स्थित है। यह **भारत के पंजाब के गुरदासपुर जिले के ऐतिहासिक शहर डेरा बाबा नानक के पास भारत-पाकिस्तान सीमा से लगभग 4.5 किलोमीटर दूर है।**
    - **करतारपुर गांव, रावी नदी के पश्चिमी तट** पर स्थित है।
    - **गुरुद्वारा डेरा बाबा नानक** रावी नदी के **पूर्वी तट** पर है।

श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर पर समझौते के बारे में

- श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर समझौते पर मूल रूप से **2019** में हस्ताक्षर किए गए थे और यह **5 वर्षों के लिए वैध** था। इसलिए, इसे नवीनीकृत किया गया है।

© Vision IAS

- इस समझौते के तहत, भारतीय तीर्थयात्रियों और **ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया (OCI) कार्डधारकों** को भारत से पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारा दरबार साहिब करतारपुर तक **वर्ष भर दैनिक आधार पर वीजा-मुक्त यात्रा का प्रावधान** किया गया है।
  - हालांकि, **पाकिस्तानी सिखों को इस गलियारे का प्रयोग करने की अनुमति नहीं है।** वे भारतीय वीज़ा प्राप्त किए बिना भारत में डेरा बाबा नानक तक नहीं जा सकते हैं।
- गुरुद्वारा दरबार साहिब करतारपुर जाने वाले **सभी तीर्थयात्रियों को उसी दिन भारत वापस लौटना होता है।**
- **पाकिस्तान** प्रत्येक तीर्थयात्री से प्रत्येक यात्रा के लिए **20 अमेरिकी डॉलर** वसूलता है।
- इस समझौते के तहत, **इस गलियारे से यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों की आस्था पर कोई प्रतिबंध नहीं** है।

महत्वपूर्ण सिख तीर्थ स्थल

- **गुरुद्वारा श्री जन्म स्थान** (ननकाना साहिब, पाकिस्तान)- गुरु नानक का जन्म स्थान
- **गुरुद्वारा बेर साहिब** (सुल्तानपुर लोधी, पंजाब)
- **श्री अकाल साहिब तख्त** {श्री हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) अमृतसर}
- **तख्त श्री केशगढ़ साहिब** (आनंदपुर साहिब, पंजाब)
- **तख्त श्री दमदमा साहिब** (तलवंडी साबो, पंजाब)
- **तख्त श्री पटना साहिब** (बिहार)
- **तख्त श्री हजूर साहिब** (नांदेड़, महाराष्ट्र)

करतारपुर साहिब गलियारे का महत्त्व

- **सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व:**
  - करतारपुर **गुरु नानक देव जी का अंतिम विश्राम स्थल** था। इस स्थान पर उन्होंने अपने जीवन के अंतिम 18 वर्ष बिताए थे।
    - ऐसा माना जाता है कि **गुरु नानक ने सिखों के पवित्र ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब के कई शबदों की रचना** करतारपुर में की थी।
    - **गुरु का लंगर नामक सामुदायिक भोजन** भी करतारपुर में ही शुरू किया गया था, जो सिख परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
  - **गुरु नानक देव ने सबसे पहले यहां सिख धर्म के तीन नियमों का पालन किया था:**
    - **किरत करो** (ईमानदारी से मेहनत करके आजीविका कमाना); **वंड छको** (धन, संपत्ति और प्रतिभा को जरूरतमंदों के साथ बांटो) और **नाम जपो** (पाठ, जप और कीर्तन के माध्यम से ध्यान) को मुक्ति का मार्ग माना जाता है।

7.2.1. सुर्ख़ियों में रही अन्य सरकारी पहलें (Other Government Initiatives in News)

7.2.1.1. कस्तूरी कॉटन भारत (Kasturi Cotton Bharat)

वस्त्र मंत्रालय ने भारत में **सभी कपास ओटाई करने वालों को 'कस्तूरी कॉटन भारत' ब्रांड की कपास का उत्पादन करने का अधिकार** दिया है।

- कस्तूरी कॉटन भारत में उत्पादित **प्रीमियम गुणवत्ता वाली कपास है, जो 100% ट्रेसेब्लिटी और प्रमाणीकरण से युक्त** है। साथ ही, आपूर्ति श्रृंखला में **'कस्तूरी कॉटन भारत'** की ट्रेसेब्लिटी के लिए ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है।

'कस्तूरी कॉटन भारत' के बारे में

- यह **वस्त्र मंत्रालय, भारतीय कपास निगम, व्यापारिक निकायों और औद्योगिक समूहों** की एक संयुक्त पहल है।
- **उद्देश्य:** भारतीय कपास की **ब्रांडिंग, ट्रेसेब्लिटी और प्रमाणन** की पूरी जिम्मेदारी लेकर **स्व-विनियमन के सिद्धांत** पर कार्य करना, ताकि इसकी वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाया जा सके और एक स्थायी कॉटन इकोसिस्टम बनाया जा सके।
- **कार्यान्वयन एजेंसी:** सूती वस्त्र निर्यात संवर्धन परिषद (TEXPROCIL)।

7.2.1.2. प्रोजेक्ट परी/ PARI (पब्लिक आर्ट ऑफ इंडिया) {Project Pari (Public Art of India)}

संस्कृति मंत्रालय ने यूनेस्को की **46वीं विश्व धरोहर समिति की बैठक के लिए प्रोजेक्ट PARI** शुरू किया है।

- प्रोजेक्ट PARI के तहत पहला आयोजन **दिल्ली** में हुआ।

प्रोजेक्ट PARI के बारे में

- इसे **ललित कला अकादमी और राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय** द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। ललित कला अकादमी **केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्था है।**
- **उद्देश्य:** शहरी परिदृश्यों में लोक प्रतिष्ठानों के माध्यम से कला के लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा देना। यह लोकतंत्रीकरण ऐसे परिदृश्यों को सुगम्य दीर्घाओं में बदल देगा।
- देशभर से **150 से अधिक दृश्य कला से जुड़े कलाकार दिल्ली में पेंटिंग, भित्ति चित्र, मूर्तियां जैसी कलाकृतियां बनाएंगे।**
- इनमें **थांगका पेंटिंग (सिक्किम/ लद्दाख), चेरियल पेंटिंग (तेलंगाना), बणी ठणी पेंटिंग (राजस्थान), अल्पना कला (त्रिपुरा)** आदि शामिल हैं।

7.2.1.3. पर्यटन मित्र और पर्यटन दीदी पहल (Paryatan Mitra and Paryatan Didi Initiative)

पर्यटन मंत्रालय ने राष्ट्रीय दायित्वपूर्ण पर्यटन पहल के रूप में **पर्यटन मित्र और पर्यटन दीदी** की शुरुआत की। इस पहल को देश के **50 पर्यटन स्थलों** में शुरू किया गया है।

पर्यटन मित्र और पर्यटन दीदी पहल के बारे में

- **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य **पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों के समग्र अनुभव को बेहतर बनाना** है। इसके लिए पर्यटकों को "आतिथ्य-प्रेमी" लोगों से मिलवाया जाएगा। ये लोग पर्यटन स्थलों के 'दूत' और 'कहानीकार' के रूप में कार्य करेंगे।
    - यह कार्य **उन सभी व्यक्तियों को पर्यटन संबंधी प्रशिक्षण और जागरूकता प्रदान करके किया जा रहा है,** जो किसी पर्यटन स्थल पर पर्यटकों के साथ बातचीत एवं संवाद करते हैं।
- **विज़न: अतुल्य भारतीयों के माध्यम से अतुल्य भारत** का अनुभव करने के लिए सभी का स्वागत-सत्कार करना।
- इसमें खाद्य पर्यटन, शिल्प पर्यटन जैसे पर्यटन-संबंधी नए उत्पादों और अनुभवों को विकसित करने के लिए **महिलाओं एवं युवाओं के प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया गया है।**

7.2.1.4. भौगोलिक संकेतक (GI) टैग {Geographical Indications (GI) Tags}

चेन्नई स्थित भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री ने भारत के अलग-अलग राज्यों के कई **उत्पादों को GI टैग प्रदान** किया।

भौगोलिक संकेतक (GI) टैग

- यह एक प्रकार का ऐसा संकेतक है, जो किसी उत्पाद की पहचान उसकी विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति से जोड़ता है। विश्व व्यापार संगठन (WTO) **के सदस्यों के अधिकार क्षेत्र या उनके राज्यों/ प्रांतों के भीतर किसी स्थानीय इलाके के उत्पादों को GI टैग दिया** जा सकता है।
- यह **ट्रिप्स (TRIPS)** समझौते में परिभाषित है।
- **एक भौगोलिक संकेतक 10 वर्ष की अवधि के लिए पंजीकृत होता है।** पंजीकरण अवधि को समय-समय पर एक बार में आगे 10 वर्ष की अवधि के लिए नवीनीकृत किया जा सकता है।
- इसके धारक को **किसी तीसरे पक्ष के गैर-मानकीकृत उत्पाद के लिए उक्त संकेतक का इस्तेमाल करने से रोकने में सक्षम बनाता है।**
- **एक संरक्षित भौगोलिक संकेतक धारक को किसी अन्य व्यक्ति को उसी तकनीक का उपयोग करके उत्पाद बनाने से रोकने में सक्षम नहीं बनाता है,** जिसका निर्धारण उस संकेतक के मानकों में किया गया है।

भारत में संबंधित कानून

- माल का भौगोलिक संकेतक (रजिस्ट्रीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999.
- माल का भौगोलिक संकेतक (विनियमन और संरक्षण) नियम, 2002

तंत्र

- **भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्रार: उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT)** के तहत पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्रार:
    - यह रजिस्ट्रार **भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री (GIR)** के कामकाज की निगरानी करता है।
    - GIR का क्षेत्राधिकार अखिल भारतीय है।

© Vision IAS

GI टैग

उत्तर प्रदेश

पिलखुआ हैंड ब्लॉक प्रिंट

प्राकृतिक डाई का उपयोग करते हुए **वस्त्रों और लकड़ियों पर पारंपरिक ब्लॉक प्रिंटिंग।**

बनारस धातु ढलुआ शिल्प (मेटल कास्टिंग क्राफ्ट)

बनारस **ढलुआ धातुओं की जटिल और कई प्रकार की डिज़ाइन** के लिए प्रख्यात है।

बरेली के बांस-बेंत

हाथ की कारीगरी से बांस एवं बेंत से कई घरेलू **सामान एवं फर्नीचर** बनाए जाते हैं।

थारू एंब्रॉयडरी (कढ़ाई)

इसमें **रंग-बिरंगे धागों से कढ़ाई** की जाती है जो थारू संस्कृति को परिलक्षित करती है।

बरेली जरी जरदोजी

कढ़ाई के लिए **सोने या चांदी के तार, जिसे जरी** कहा जाता है, का उपयोग कपड़ों को आकर्षक बनाया जाता है।

बनारस तिरंगी बर्फी

तिरंगी बर्फी बनाने के लिए **केसरिया रंग के लिए केसर, हरे रंग के लिए पिस्ता और बीच के सफेद रंग में खोए की सफेदी व काजू का प्रयोग** किया जाता है।

असम

बोडो नारजी

जूट के पत्तों (कोरकोरस कैप्सूलरिस) से बना एक **अर्द्ध-किण्वित खाद्य** है।

बोडो अरोनाई

यह पारंपरिक बोडो बुनाई है जो अपने **जीवंत रंगों और जटिल डिजाइन के लिए** जानी जाती है।

बोडो नेफाम

यह दो-तीन महीनों तक पूरी तरह बंद कंटेनर में एनारोबिक रूप से तैयार की गई **किण्वित मछली से बना एक व्यंजन** है।

बोडो ओंडला

यह चावल के **पाउडर से बनी करी** है, जिसे स्वादिष्ट बनाने के लिए लहसुन, अदरक, नमक और एल्कली मिलाए जाते हैं।

बोडो ग्वखा - ग्वखी

स्थानीय तौर पर इसे 'ग्वका ग्वखी' कहा जाता है। यह बोडो समुदाय का एक पारंपरिक व्यंजन है, जो **बिविसागु उत्सव के दौरान अलग-अलग प्रकार की जड़ी-बूटियों और सब्जियों से** बनाया जाता है।

बोडो जौ गोरान

यह बोडो समुदाय का एक पारंपरिक पेय है, जो चावल से बनाया जाता है। इसमें **अल्कोहल की मात्रा सबसे अधिक (लगभग 16.11%)** होती है।

बोडो जौ गिशी

यह **किण्वित चावल से निर्मित पारंपरिक मादक पेय** है।

बोडो मैबरा जौ बिडवी

यह चावल से बना एक और पारंपरिक पेय है, जिसे बोडो समुदाय पवित्र मानते हैं। इसे आमतौर पर **आतिथ्य और सत्कार** के प्रतीक के रूप में परोसा जाता है। यह अधपके चावल (माईरोंग) को कम पानी में किण्वित करके और उसमें 'अमाओ' (खमीर का एक स्रोत) मिलाकर तैयार किया जाता है।

नोट: बोडो समुदाय की मान्यता है कि चावल से बना यह पेय **भगवान शिव की देन** है। इसका **औषधि के रूप में सेवन** किया जाता है।

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह

निकोबारी डोंगी-होदी शिल्प

यह **खोखले पेड़ के तने से बनी पारंपरिक डोंगी** है।

निकोबारी चटाई

यह **प्राकृतिक रेशों से बुनी गई एक चटाई** है, जिसे बैठने और सोने के लिए उपयोग किया जाता है।

अंडमान करेन मूसली चावल

यह **सुगंधित चावल की एक विशेष किस्म** है, जिसे करेन समुदाय द्वारा उगाया जाता है।

निकोबारी तवी-ए-नगाइच (वर्जिन नारियल तेल)

पारंपरिक तरीके से निकाला गया **शुद्ध नारियल तेल,** जिसका इस्तेमाल **खाना पकाने और सेहतमंद रहने** के लिए किया जाता है।

न्गुअत-कुक'- 'खवथा' नारियल

यह निकोबार में उगाई जाने वाली **नारियल की एक अनूठी किस्म** है। इसका सेवन स्वस्थ रहने के लिए किया जाता है।

पडौक वुड क्राफ्ट

इस शिल्प में **पडौक वृक्ष** की लकड़ी का उपयोग किया जाता है, जो अपनी **गहरे लाल रंग** की लकड़ी के लिए प्रसिद्ध है।

निकोबारी हट

ये स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों से बनी पारंपरिक झोपड़ियां हैं। ये झोपड़ियां यहां के देशज लोगों के डिज़ाइन को दर्शाती हैं।

गुजरात

कच्छ अजरख

ये ब्लॉक-प्रिंटेड वस्त्र हैं, जिन पर डाई का उपयोग करके **ज्यामितीय आकार और फूलों के पैटर्न** बनाए जाते हैं।

CSAT

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

क्रैश कोर्स प्रीलिम्स 2025

(इसका उद्देश्य मूलभूत अवधारणाओं को रिवाइज करना और उन्हें सुदृढ़ करना, समस्या–समाधान क्षमताओं को बढ़ाना, विश्लेषणात्मक कौशल को बेहतर बनाना, समालोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना और प्रारंभिक परीक्षा 2025 के लिए समझ कौशल में सुधार करना है।)

प्रारंभ

English Medium	हिन्दी माध्यम
21 January, 1 PM	30 January, 1 PM

(Offline/Online)

7.3. सुप्रीम कोर्ट में नया ध्वज, प्रतीक चिन्ह और न्याय की देवी की नई प्रतिमा (New Flag, Insignia and Lady Justice at Supreme Court)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत की राष्ट्रपति ने सुप्रीम कोर्ट के नए ध्वज और प्रतीक चिह्न का अनावरण किया। वहीं, भारत के मुख्य न्यायाधीश ने सुप्रीम कोर्ट में 'न्याय की देवी' (लेडी ऑफ जस्टिस) की नई प्रतिमा का अनावरण किया।

'न्याय की देवी' की प्रतिमा के बारे में

- **उत्पत्ति: ग्रीक और रोमन माइथोलॉजी**
  - प्रथम रोमन सम्राट ऑगस्टस ने **देवी जस्टिटिया (Justitia)** के रूप में न्याय की पूजा शुरू की थी।
- **चित्रण:** एक हाथ में तराजू और दूसरे हाथ में तलवार।
- **पुनर्जागरण (Renaissance) काल (14वीं शताब्दी) के दौरान आंखों पर पट्टी बांधने का प्रचलन शुरू हुआ:** इसे तब न्यायिक प्रक्रिया के भ्रष्ट होने और कानून के अंधे होने पर व्यंग्य के रूप में समझा जाता था।
- **प्रबोधन (Enlightenment) काल (17वीं-18वीं शताब्दी):** आधुनिक काल में माना जाने लगा कि आंख पर पट्टी दर्शाती है कि कानून की नजर में सब बराबर हैं और यह कानून के अंधे होने का संकेत देती है।
  - अंग्रेजों ने भारत में लेडी जस्टिस की प्रतिमा स्थापित करने की शुरुआत की। इस पारंपरिक मूर्ति को पहली बार **1872 में कलकत्ता हाई कोर्ट** में स्थापित किया गया था।

'न्याय की देवी' की नई प्रतिमा का महत्त्व

- **उपनिवेशवाद से मुक्ति:** नई प्रतिमा ब्रिटिश काल की विरासत को पीछे छोड़ने की कोशिश है।
- **भारतीय परिधान:** न्याय की देवी की मूर्ति पश्चिमी परिधानों की बजाय **साड़ी पहने हुए** दिखाई गई है।
- **नई मूर्ति की आंखों से पट्टी हटा दी गई:** नई मूर्ति दर्शाती है कि **कानून अंधा नहीं है और उसकी नजर में सभी बराबर हैं।**
  - खुली आंखें समाज के भीतर जटिलता और भेदभाव के बारे में ज्ञान का भी प्रतीक है।
- **नई प्रतिमा में तलवार की जगह भारतीय संविधान:**
  - संविधान की सर्वोच्चता और हमारे न्यायशास्त्र में इसके महत्त्व का प्रतीक है।
  - भारत में न्याय हिंसा या बल की बजाय संवैधानिक सिद्धांतों पर आधारित है।
- मूर्ति के **दाएं हाथ में तराजू बरकरार रखा गया:** यह दर्शाता है कि न्यायालय किसी नतीजे पर पहुंचने से पहले **दोनों पक्षों के तथ्यों और तर्कों को देखता एवं सुनता है।**

सुप्रीम कोर्ट का नया ध्वज	सुप्रीम कोर्ट का नया प्रतीक चिन्ह

सुप्रीम कोर्ट के नए ध्वज और प्रतीक चिन्ह के बारे में
- **संकल्पना: राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली** द्वारा।
- **ध्वज की विशेषताएं:** अशोक चक्र (शीर्ष पर) प्रतिष्ठित सर्वोच्च न्यायालय भवन (मध्य में) और संविधान की पुस्तक (नीचे)।
- प्रतीक चिन्ह पर **'भारत का सर्वोच्च न्यायालय' (रोमन में)** और **'यतो धर्मस्ततो जयः' (देवनागरी लिपि में)** अंकित है।
    - **यतो धर्मस्ततो जयः** एक संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है **"जहाँ धर्म है वहाँ जय (जीत) है।"**

7.4. सुर्ख़ियों में रही ऐतिहासिक घटनाएं (Historical Events in News)

7.4.1. वायकोम सत्याग्रह (Vaikom Satyagraha)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत में **वायकोम सत्याग्रह की 100वीं वर्षगांठ** मनाई गई।

वायकोम सत्याग्रह से संबंधित नेता एवं समर्थन

- **वायकोम सत्याग्रह का नेतृत्व टी.के. माधवन, के.पी. केशव मेनन और के. केलप्पन** जैसे अग्रणी एवं अनुभवी नेताओं ने किया था। **के. केलप्पन** को **केरल के गांधी** के नाम से भी जाता है।
    - मंदिर प्रवेश का मुद्दा सबसे पहले एझावा नेता **टी.के. माधवन** ने 1917 में अपने अखबार **'देशाभिमानी'** के संपादकीय में उठाया था।
    - 1921 में, **टी.के. माधवन के नेतृत्व में त्रावणकोर कांग्रेस कमेटी ने मंदिर में प्रवेश पर लगे प्रतिबंध** को हटाने के लिए एक अभियान चलाया।
    - **1923 में कांग्रेस के काकीनाडा अधिवेशन में**, केरल प्रांतीय कांग्रेस समिति ने **अस्पृश्यता-विरोध को एक प्रमुख मुद्दे के रूप में अपनाने के लिए एक संकल्प अपनाया** था।
- केरल के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी **जॉर्ज जोसेफ** ने केशव मेनन की अनुपस्थिति में मंदिर प्रवेश सत्याग्रह का नेतृत्व किया था।
- **ई. वी. रामास्वामी नायकर (पेरियार) वायकोम सत्याग्रह के प्रमुख नेताओं में शामिल** थे। इन्हें **'वायकोम वीरार'** भी कहा जाता है। नायकर ने स्वयंसेवकों को संगठित किया और अपने भाषणों के जरिए जनता का समर्थन प्राप्त किया। गौरतलब है कि वायकोम सत्याग्रह में गिरफ्तार किए गए सभी व्यक्तियों में से **केवल पेरियार को ही कठोर कारावास की सजा दी गई थी।**
- इस सत्याग्रह में **महात्मा गांधी ने 1921 में भाग** लिया। इस दौरान गांधीजी ने मंदिर में प्रवेश के लिए माधवन के नेतृत्व में एक जन आंदोलन का समर्थन किया था।
- **श्री नारायण गुरु, मन्नातु पद्मनाभन, ई. वी. रामास्वामी नायकर** आदि ने भी इस आंदोलन का समर्थन किया।
- **नागम्मई (पेरियार की पत्नी), कन्नम्मल जैसी महिला आंदोलनकारियों ने महिलाओं को सशक्त बनाने** में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं थीं।

वायकोम सत्याग्रह के बारे में

- यह **मंदिर में प्रवेश** के लिए शुरू किया गया एक **ऐतिहासिक अहिंसक सत्याग्रह** था। यह सत्याग्रह **30 मार्च, 1924 को त्रावणकोर** रियासत (वर्तमान **केरल**) के एक शहर वायकोम में शुरू हुआ था।
- यह सत्याग्रह **हिंदू धर्म** में **"निम्न समझे जाने वाली जातियों"** को **वायकोम के भगवान महादेव मंदिर में** प्रवेश नहीं देने के खिलाफ शुरू हुआ था।
- निम्न समझे जाने वाली जातियों, विशेषकर एझावा को सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ रहा था। इसी वजह से यह सत्याग्रह आरंभ हुआ था।
- खादी वस्त्र और खादी टोपी पहनकर **गोविंद पणिक्कर (नायर), बहुलेयन (एझावा) और कुंजप्पु (पुलाया) ने** मंदिर में प्रवेश के **निषेधाज्ञा का उल्लंघन** किया।
    - **पंजाब के अकालियों ने सत्याग्रहियों को भोजन उपलब्ध** कराया।
    - **ईसाई और मुस्लिम नेताओं ने भी सत्याग्रह का समर्थन** किया
- **604 दिनों तक चला: गांधी और त्रावणकोर** के तत्कालीन **पुलिस आयुक्त डब्ल्यू.एच पिट के** बीच विचार-विमर्श के बाद **30 नवंबर, 1925 को वायकोम सत्याग्रह** आधिकारिक तौर पर वापस ले लिया गया।

© Vision IAS

वायकोम सत्याग्रह के परिणाम

- **कानूनी सुधार और पहलें:**
  - **सत्याग्रह से बने दबाव के बाद** निम्न समझे जाने वाली जातियों के लिए **मंदिर प्रवेश उद्घोषणा 1936** जारी की गई। यह निम्न समझे जाने वाली जातियों के मंदिरों में प्रवेश देने के इतिहास में एक ऐतिहासिक कानूनी जीत थी।
  - **त्रावणकोर लोक सेवा आयोग** की स्थापना भी की गई, ताकि सरकारी रोजगारों (भूमिकाओं) में निष्पक्षता सुनिश्चित की जा सके।
  - वायकोम सत्याग्रह ने **गांधीजी और पेरियार के बीच मतभेद को भी उजागर** किया।
    - जहां **गांधीजी ने वायकोम सत्याग्रह को हिंदू सुधारवादी आंदोलन** के रूप में देखा, वहीं पेरियार ने इसे "जाति-आधारित अत्याचारों के खिलाफ लड़ाई" के रूप में देखा।
    - दरअसल **पेरियार इस सत्याग्रह से मिली आंशिक सफलता** से खुश नहीं थे, क्योंकि मंदिर तक जाने वाली चार सड़कों में से केवल 3 सड़कें सभी जातियों के लिए खोली गई थीं। कुछ महीनों बाद पेरियार ने **कांग्रेस की सदस्यता भी त्याग दी**।

भारत में अन्य जातीय-आंदोलन

वर्ष	आंदोलन	नेतृत्वकर्ता	विवरण
1873	सत्यशोधक आंदोलन	ज्योतिबा फुले	ब्राह्मणवादी प्रभुत्व के विरुद्ध निम्न जातियों, अछूतों और विधवाओं की मुक्ति का आंदोलन
1916	जस्टिस पार्टी आंदोलन	टी.एम. नायर, पी. त्यागराज चेट्टी, सी.एन मुदलियार	सरकारी नौकरी, शिक्षा और राजनीति में ब्राह्मणवादी वर्चस्व के खिलाफ आंदोलन
1924	डिप्रेस्ड क्लासेज मूवमेंट	बी. आर. अम्बेडकर	दलित वर्गों का उत्थान, अस्पृश्यता के विरुद्ध आवाज, 'बहिष्कृत भारत' नामक मराठी समाचार पत्र का प्रकाशन (1927)
1925	आत्मसम्मान आंदोलन (सेल्फ-रिस्पेक्ट मूवमेंट)	ई. वी. रामास्वामी नायकर (पेरियार)	जाति व्यवस्था और ब्राह्मण वर्चस्व के खिलाफ आंदोलन, 'कुडी अरासु' पत्रिका का प्रकाशन (1910)

7.4.2. हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (Hindustan Republican Association: HRA)

सुर्ख़ियों में क्यों?

उत्तर प्रदेश सरकार ने **9 अगस्त को 'काकोरी ट्रेन कांड' का शताब्दी वर्ष** मनाने के लिए साल भर चलने वाले समारोह का उद्घाटन किया। ज्ञातव्य है कि इस कांड में **हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA)** के सदस्य शामिल थे।

काकोरी ट्रेन कांड के बारे में

- **तिथि:** काकोरी ट्रेन कांड को **9 अगस्त, 1925** को अंजाम दिया गया था। इसके तहत HRA के कुछ क्रांतिकारियों ने उत्तर प्रदेश के काकोरी गांव के नजदीक ब्रिटिश खजाने को ले जा रही ट्रेन को लूट लिया था।
- **उद्देश्य:** इस लूट का उद्देश्य क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए धन की कमी को दूर करना था।
- **प्रमुख क्रांतिकारी:** राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह, राजेंद्र लाहिड़ी, सचिंद्र बख्शी और अन्य।
- **काकोरी षड्यंत्र केस**
  - राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेंद्र नाथ लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह को फांसी की सजा सुनाई गई।
  - शेष क्रांतिकारियों में से कुछ को सेलुलर जेल निर्वासित कर दिया तथा कुछ को लंबी अवधि तक के कारावास की सजा सुनाई गई।

लाहौर षड्यंत्र केस का क्रांतिकारियों द्वारा राष्ट्रीय हित के लिए उपयोग

- क्रांतिकारियों ने अदालत का उपयोग न केवल अपने बचाव के लिए**, बल्कि एक राष्ट्रीय मंच** के रूप में भी किया। **अदालत** की कार्यवाही के दौरान, क्रांतिकारियों ने **ब्रिटिश शासन की नीतियों, विशेष रूप से उनके दमनकारी कानूनों और जनता के शोषण की कड़ी आलोचना** की।
- उन्होंने राजनीतिक कैदियों के लिए जेल में **बेहतर परिस्थितियों और अधिकारों की मांग के लिए भूख हड़ताल** की।
- इस दौरान **63 दिनों की भूख हड़ताल करने के कारण जतिन दास की 13 सितंबर, 1929 को मृत्यु** हो गई थी। इस खबर से देशभर में आक्रोश की लहर फैल गई थी।
- अंततः **भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को 23 मार्च, 1931 को फांसी** दे दी गई थी।

7.4.3. रंगभेद व्यवस्था (Apartheid System)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव वाली "रंगभेद (Apartheid)" नीति की समाप्ति की 30वीं वर्षगांठ मनाई गई।

रंगभेद व्यवस्था के बारे में

- **रंगभेद व्यवस्था के बारे में:** यह **दक्षिण अफ्रीका में लागू की गई विशिष्ट नस्लीय भेदभाव वाली कानूनी व्यवस्था** थी। यह नीति श्वेत यूरोपीय लोगों ने **अश्वेत (काले अफ्रीकी, मिश्रित नस्ल और भारतीय)** लोगों को अपने से हीन मानकर उन पर लागू की थी।
- दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद नीति को 1948 में औपचारिक रूप दिया गया था। हालांकि, रंगभेद की नीति की नींव वहां की पिछली औपनिवेशिक सरकारों ने 19वीं और 20वीं सदी के पूर्वार्ध में अलग-अलग कानून पारित करके रख दी थी।
  - पारित किए गए कानूनों के माध्यम से काले लोगों को **श्वेत लोगों और मिश्रित लोगों (कलर्ड)** के क्षेत्रों में जाने से प्रतिबंधित कर दिया गया।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों को तीन समूहों में विभाजित किया गया था:

- **गिरमिटिया भारतीय मजदूर:** ये लोग उत्तर प्रदेश, बिहार और दक्षिण भारत से थे। ये लोग 1890 के बाद गन्ने के बागानों में काम करने के लिए दक्षिण अफ्रीका आये थे।
- **व्यापारी**- इनमें से अधिकांश मेमन मुसलमान थे, जो मजदूरों के साथ चले आए थे।
- **पहले गिरमिटिया रहे मजदूर:** ये अपना अनुबंध समाप्त होने के बाद अपने बच्चों के साथ दक्षिण अफ्रीका में ही बस गए थे।

© Vision IAS

रंगभेद विरोधी आंदोलन (Anti-Apartheid Movement: AAM)

- यह 20वीं सदी का **पहला सफल अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन** था।
- **रंगभेद विरोधी आंदोलन के उद्देश्य:** दक्षिण अफ्रीका में **नस्लीय रंगभेद आधारित शासन को अस्थिर करने के लिए आंतरिक अभियान** चलाना और रंगभेद समर्थक शासन पर प्रतिबंध लगाने के लिए अन्य देशों में अभियान चलाना।
- **प्रभाव:** 1990 तक रंगभेद कानून निरस्त कर दिए गए, मंडेला को जेल से रिहा कर दिया गया (1990), और 1994 में वे दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बन गए।

दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद विरोधी संघर्ष में भारत का योगदान

- **महात्मा गांधी:**
  - गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में **पहला उपनिवेशवाद विरोधी और नस्लीय भेदभाव विरोधी आंदोलन** शुरू किया था। इसके अलावा, उन्होंने **1894 में नेटाल इंडियन कांग्रेस** की स्थापना की और **1903 में समाचार-पत्र 'इंडियन ओपिनियन'** प्रकाशित किया।
  - 1906 में गांधी के नेतृत्व में हजारों सत्याग्रहियों ने **पंजीकरण प्रमाण-पत्र (भारतीयों के लिए सदैव इसे अपने साथ फिंगरप्रिंट सहित रखना अनिवार्य था) रखने की अनिवार्यता का प्रावधान करने वाले 1906 के कानून का बहिष्कार** किया।
  - गांधीजी ने डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में **फीनिक्स आश्रम** की स्थापना की एवं 1915 में गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौट आए।
- **यूसुफ मोहम्मद दादू:** वह **गैर-यूरोपीय संयुक्त मोर्चा और कम्युनिस्ट पार्टी** के संस्थापक लीडर थे। उन्होंने तत्कालीन समय में इस संगठन को एक गुप्त संगठन के रूप में पुनर्जीवित किया।
- **भारत सरकार की भूमिका:** भारत दुनिया का ऐसा **पहला देश था जिसने 1946 में दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद सरकार के साथ व्यापारिक संबंध समाप्त कर लिए** थे।
  - इसके अलावा, भारत दुनिया का ऐसा पहला देश था जिसने **1946 में दक्षिण अफ्रीका में चल रही रंगभेद की समस्या को संयुक्त राष्ट्र** में उठाया।
  - अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस ने 1960 के दशक से **नई दिल्ली में एक प्रतिनिधि कार्यालय** स्थापित कर रखा था। भारत ने भी रंगभेद विरोधी आंदोलन का समर्थन जारी रखने के लिए अफ्रीका/ AFRICA फंड में सक्रिय रूप से सहयोग किया।

दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद विरोधी संघर्ष में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका

- 1946 में **एशियाई भूमि स्वामित्व अधिनियम** बनाया गया था। इसमे **भारतीयों के भूमि स्वामित्व को प्रतिबंधित कर दिया और भारतीयों को अलग-थलग क्षेत्र में कर दिया गया।** इसके बाद संयुक्त राष्ट्र को अपील की गई।
- **संयुक्त राष्ट्र द्वारा उठाए गए कुछ महत्वपूर्ण कदमों में शामिल हैं:**
  - **संयुक्त राष्ट्र** ने दक्षिण अफ्रीका पर **राजनयिक और आर्थिक प्रतिबंध लगाए।** 1971 के संकल्प में रंगभेद को "मानवता के खिलाफ अपराध" घोषित किया।
  - **रंगभेद के खिलाफ प्रतिरोध को वैध बनाना:**
    - संयुक्त राष्ट्र ने **1963 में रंगभेद के खिलाफ एक विशेष समिति** और **1976 में रंगभेद के खिलाफ एक केंद्र** की स्थापना की।
    - 1973 में, **संयुक्त राष्ट्र महासभा** ने **"रंगभेद के अपराध की रोकथाम और दंड पर अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन" को मंजूरी** प्रदान की।
    - संयुक्त राष्ट्र महासभा ने **1974 में दक्षिण अफ्रीका की सदस्यता निलंबित** कर दी। बाद में लोकतांत्रिक सरकार गठन के बाद 1994 में उसकी सदस्यता बहाल कर दी गई।

नेल्सन मंडेला (1918-2013)

- **प्रारंभिक जीवन:**
  - उनका जन्म 1918 में **दक्षिण अफ्रीका के ईस्टर्न केप** में हुआ था।
  - वे **थेम्बू प्रमुख (पारंपरिक नेता) के पुत्र** थे।
- **राजनीतिक जीवन और संघर्ष:**
  - मंडेला **"रंगभेद विरोधी आंदोलन" के प्रतीक** थे। वे 1994 में दक्षिण अफ्रीका के लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित पहले राष्ट्रपति बने थे।

- वे 1944 में अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस (ANC) में शामिल हुए थे और ANC यूथ लीग के गठन में मदद की। मंडेला ने **रंगभेद कानून के खिलाफ ANC के अहिंसक विरोध का नेतृत्व किया।**
- उन्हें 1964 (रिवोनिया ट्रायल) में **आजीवन कारावास की सजा** सुनाई गई। उन्हें 27 साल बाद 1990 में जेल से रिहा किया गया।

- **मंडेला का दर्शन:**
  - उन्हें 'दक्षिण अफ्रीका का गांधी' भी कहा जाता है। वे गांधी जी की शिक्षाओं के प्रबल अनुयायी थे।
- **पुरस्कार और विरासत:**
  - उन्हें **1993 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित** किया गया।
  - जेल से रिहा होने के बाद भारत ने उन्हें शांति प्रयासों के लिए 1990 में भारत रत्न से सम्मानित किया। इसके अलावा, उन्हें **अंतर्राष्ट्रीय गांधी शांति पुरस्कार** 2000 से भी सम्मानित किया गया।
  - संयुक्त राष्ट्र हर साल **18 जुलाई को 'अंतर्राष्ट्रीय नेल्सन मंडेला दिवस'** मनाता है।

नेल्सन मंडेला

7.5. अन्य महत्वपूर्ण घटनाक्रम (Other Important Events)

7.5.1. संथाल विद्रोह (Santhal Revolt)

संथाल विद्रोह के शहीदों की स्मृति में हर साल **30 जून को हूल दिवस** मनाया जाता है।

संथाल विद्रोह (1855-1856) के बारे में

- **इस विद्रोह के नेता थे- सिद्धो, कान्हो, चांद और भैरव** तथा साथ में **फूलो और झानो** नामक दो बहनें।
- **विद्रोह का स्थान:** राजमहल की पहाड़ियां (वर्तमान झारखंड)।
- **कारण:** ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों और स्थानीय साहूकारों द्वारा संथालों का शोषण एवं उत्पीड़न।
- **कार्ल मार्क्स** ने अपनी पुस्तक **"नोट्स ऑन इंडियन हिस्ट्री"** में संथाल विद्रोह को **"भारत की पहली संगठित जन क्रांति"** बताया था।
- इस विद्रोह के दमन के बाद अंग्रेजों ने **संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम, 1876** बनाया था। इस कानून के तहत-
  - **'संथाल परगना'** नामक एक अलग प्रशासनिक क्षेत्र बनाया गया।
  - **संथाल आदिवासियों की भूमि को गैर-संथाल लोगों को बेचना गैर-कानूनी** बना दिया गया था।

7.5.2. ओडिशा का अकाल, 1866 (Odisha Famine of 1866)

इस अकाल ने ओडिशा के लोगों को बुरी तरह से प्रभावित किया था। इस अकाल की वजह से **ओडिशा की लगभग एक तिहाई आबादी समाप्त** हो गई थी।

ओडिशा अकाल के बारे में

- इसे **'ना-अंका दुर्भिक्ष्य'** के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि यह **गजपति दिव्यसिंह देव के नौवें शासनकाल** के दौरान हुआ था।
- **अकाल का कारण:** ब्रिटिश शासन की लापरवाही, प्राकृतिक आपदाएं, आर्थिक शोषण, आदि।
- यह अकाल ओडिशा डिवीजन के आयुक्त **थॉमस एडवर्ड रावेनशॉ** के कार्यकाल के दौरान आया था।
- **अकाल के परिणाम:**
  - अकाल के बाद **हुगली नदी (पश्चिम बंगाल) को मताई नदी (ओडिशा) से जोड़ने वाली पुरी कैनाल या कोस्ट कैनाल** का निर्माण किया गया था।
  - थॉमस एडवर्ड रावेनशॉ ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय भाषा आधारित कई स्कूलों की स्थापना की और **ओडिया भाषा में शिक्षा पर जोर** दिया। **कटक जिला स्कूल को रावेनशॉ कॉलेज** नाम दिया गया।

© Vision IAS

7.5.3. सारागढ़ी का युद्ध, 1897 (Battle of Saragarhi, 1897)

12 सितंबर को सारागढ़ी के युद्ध की 127वीं वर्षगांठ मनाई गई।

सारागढ़ी के युद्ध (12 सितंबर, 1897) के बारे में

- यह युद्ध **ब्रिटिश सरकार (36वीं सिख रेजिमेंट के 21 सैनिक)** और **8,000 से अधिक अफरीदी और ओरकजई जनजातीय लड़ाकों** के बीच लड़ा गया था।
- यह युद्ध **उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत के सारागढ़ी में तिराह अभियान के दौरान लड़ा** गया था।
- सारागढ़ी एक महत्वपूर्ण संचार चौकी थी। यह **पाकिस्तान के कोहाट में समाना रेंज पर स्थित एक अनूठा** गांव था।
- युद्ध में सिख सैनिकों का नेतृत्व **हवलदार ईशर सिंह** ने किया था। ईशर सिंह ने युद्ध में असाधारण साहस का परिचय दिया और **अंतिम क्षण तक लड़ने का फैसला** किया।
- सभी 21 सिखों को **मरणोपरांत इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट** से सम्मानित किया गया था। यह उस समय भारतीय सैनिकों को दिया जाने वाला **सर्वोच्च ब्रिटिश वीरता पुरस्कार था।**

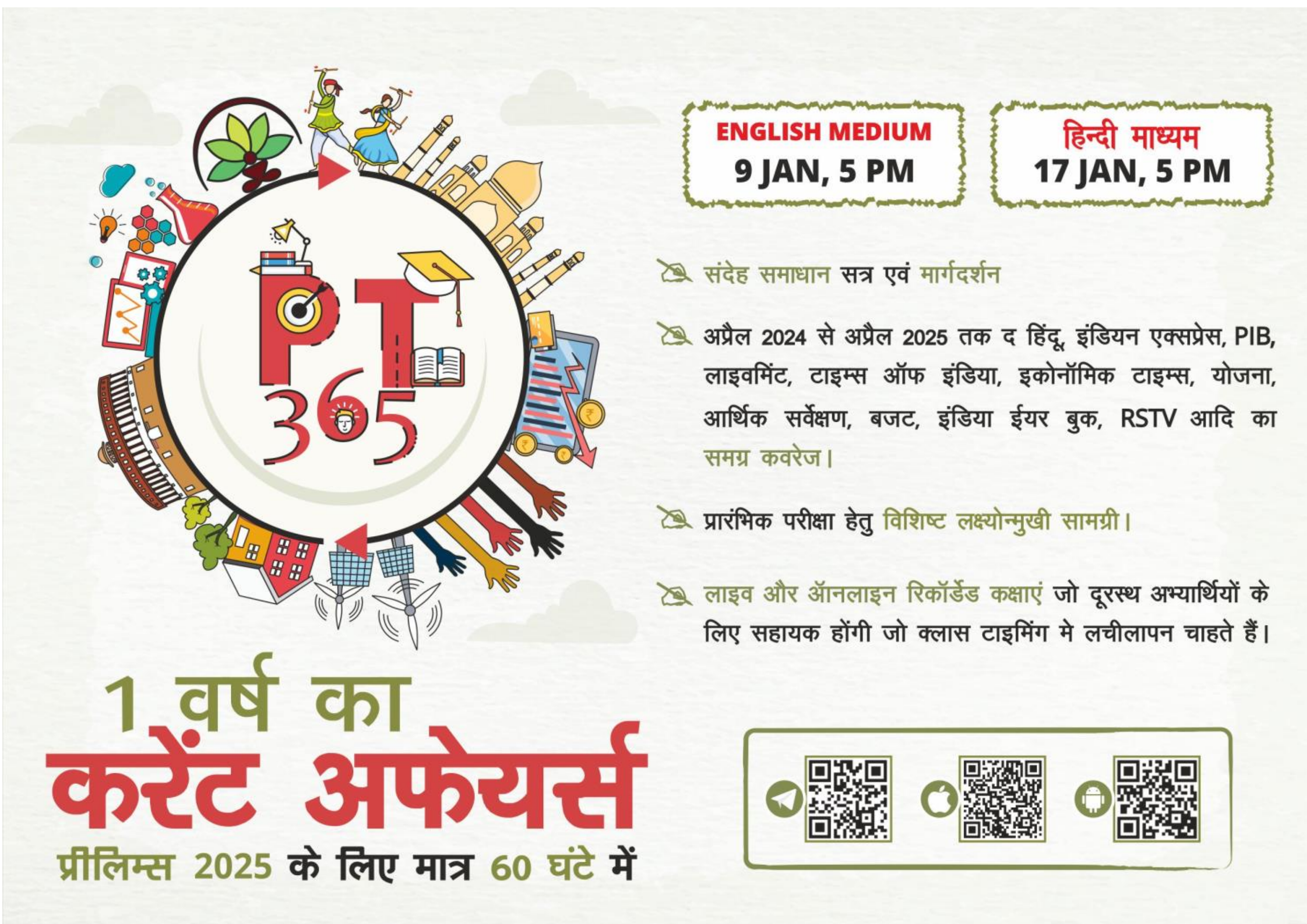

7.6. सुर्ख़ियों में रहे त्यौहार (Festivals in News)

सुर्ख़ियों में रहे त्यौहार

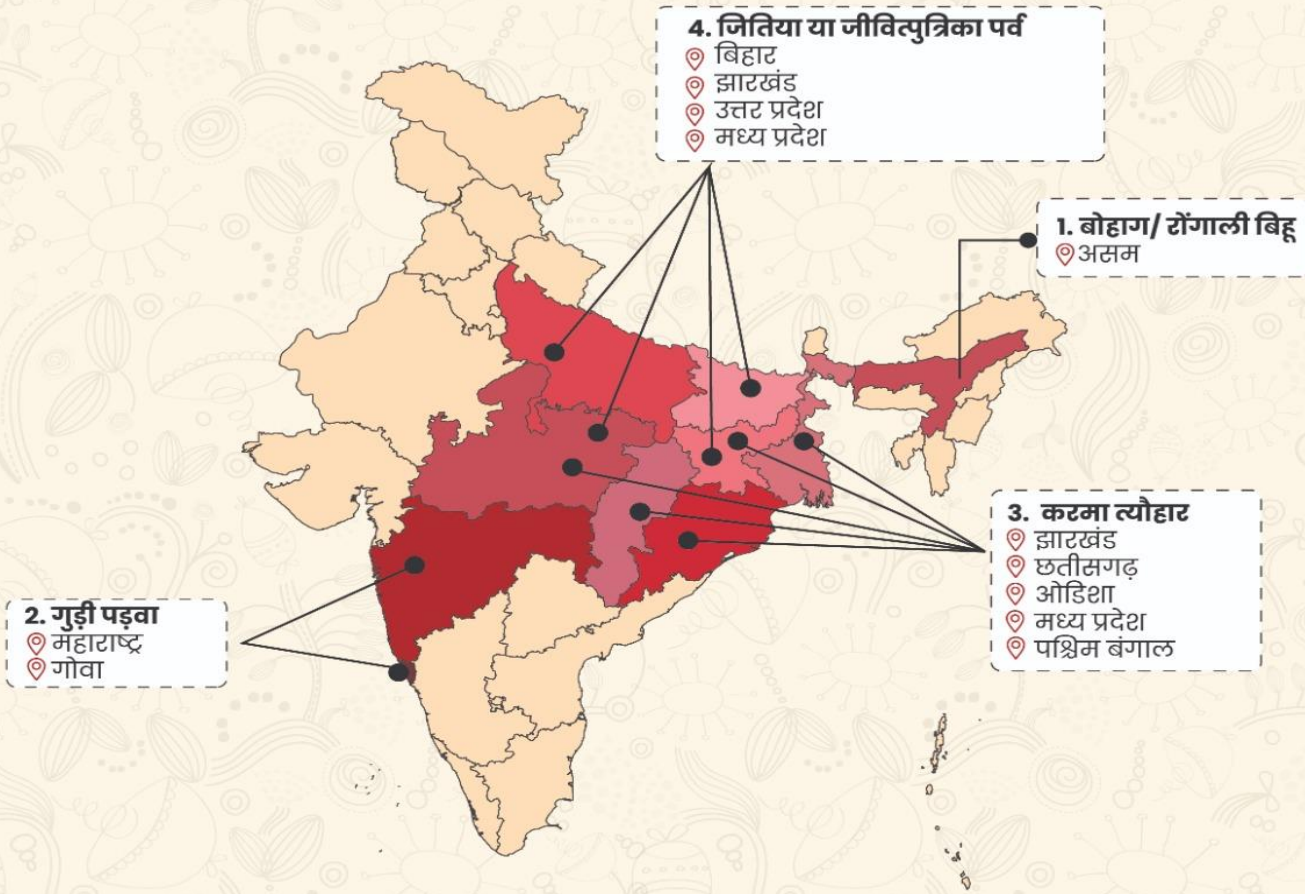

1. बोहाग/ रोंगाली बिहू

असम में बोहाग/ रोंगाली बिहू त्यौहार मनाया गया।

बोहाग/ रोंगाली बिहू के बारे में

- इस त्यौहार को **अप्रैल माह के मध्य** में मनाया जाता है। यह **असमिया नववर्ष** की शुरुआत और **बसंत ऋतु** के आगमन का प्रतीक है।
- यह त्यौहार **सात दिनों तक** मनाया जाता है। त्यौहार की शुरुआत (प्रथम दिन) **गोरू बिहू** से होती है। इसके बाद **मानुह बिहू, गोसाई बिहू** आदि मनाए जाते हैं।

बोहाग/ रोंगाली बिहू के समान अन्य राज्यों में मनाए जाने वाले त्यौहार हैं- **बैशाख (पंजाब), पुथांडु (तमिलनाडु), विशु (केरल), पहला बैशाख (पश्चिम बंगाल) आदि।**

2. गुड़ी पड़वा

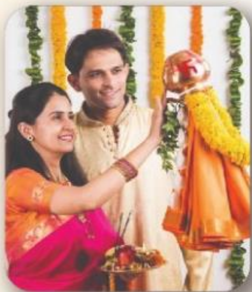

राष्ट्रपति ने गुड़ी पड़वा की पूर्व संध्या और वसंत ऋतु के आगमन से जुड़े **त्योहारों एवं भारतीय नव वर्ष के लिए शुभकामनाएं** दी हैं।

गुड़ी पड़वा के बारे में

- **गुड़ी पड़वा चैत्र माह के पहले दिन मनाया जाता है।**
- यह **वसंत ऋतु के आगमन** का संकेत देता है। **महाराष्ट्र में यह नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक है।**
- **भारत भर में अन्य वसंत त्योहार:**
  - **उगादी:** आंध्र प्रदेश, कर्नाटक व तेलंगाना।
  - **चेटीचंड:** यह त्यौहार सिंधी समाज द्वारा मनाया जाता है।
  - **नवरेह:** जम्मू-कश्मीर।

3. करमा त्यौहार

करमा त्यौहार झारखंड सहित भारत के अन्य राज्यों जैसे ओडिशा, छतीसगढ़ आदि में भी मनाया जाता है।

करमा त्यौहार के बारे में

- यह एक **फसल उत्सव** है। यह **मुंडा, हो, ओरांव, बैगा, खारिया और संथाल लोगों** के बीच लोकप्रिय है।
- इस अवसर पर **करम वृक्ष** की पूजा की जाती है। यह वृक्ष उर्वरता, समृद्धि आदि का प्रतीक है। करम वृक्ष को पारंपरिक रूप से **करम देवता/ करमसानी के प्रतीक के रूप में देखा** जाता है।
- त्यौहार के दौरान, **करमा नर्तक करम वृक्ष की शाखा का उपयोग गायन और नृत्य** के साथ करते हैं।

4. जितिया या जीवित्पुत्रिका त्योहार

बिहार में जीवित्पुत्रिका उत्सव के दौरान अलग-अलग हादसों में 37 बच्चों समेत 43 लोगों की डूबने से मौत हो गई।

जितिया या जीवित्पुत्रिका पर्व के बारे में

- यह हिंदू धर्म का त्योहार है। यह मुख्य रूप से **बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड और नेपाल** में मनाया जाता है।
- इस दिन महिलाएं संतान की **लंबी उम्र, तरक्की और अच्छे स्वास्थ्य के लिए निर्जला उपवास** रखती हैं।
- यह त्योहार **तीन दिनों तक मनाया** जाता है। त्योहार के **पहले दिन को नहाए-खाए** के नाम से जाना जाता है।
- यह त्योहार **राजा जीमूतवाहन** की पौराणिक कथा पर आधारित है। इस अवसर पर **राजा जीमूतवाहन** द्वारा दूसरों के कल्याण के लिए स्वयं द्वारा किए गए त्याग की पूजा की जाती है और उपवास रखा जाता है।

मासिक
समसामयिकी रिवीजन
कक्षाएं 2025
GS प्रीलिम्स और मेन्स
हिन्दी माध्यम
31 JAN | 5 PM
English Medium
25 JAN | 5 PM
VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

Live/Online Classes are available

7.7. खेलों से संबंधित सुर्ख़ियां (Sports Related News)

7.7.1. भारत में खेल इकोसिस्टम (India's Sports Ecosystem)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में आयोजित पेरिस ओलंपिक 2024 की पदक तालिका में भारत 71वें स्थान पर रहा जबकि इससे पहले आयोजित टोक्यो ओलंपिक (2020) में भारत 48वें स्थान पर था।

अन्य संबंधित तथ्य

- भारत ने पेरिस ओलंपिक 2024 में **छह पदक** जीते। इसमें **कोई स्वर्ण पदक शामिल नहीं** है। भारत ने एक रजत और पांच कांस्य पदक जीते हैं। हालांकि टोक्यो ओलंपिक (2020) में भारत ने सात पदक जीते थे, जिसमें एक स्वर्ण, दो रजत, चार कांस्य पदक शामिल थे।
- **पेरिस 2024 में भारत ने ओलंपिक में अब तक का तीसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन** किया।
- **कॉमनवेल्थ गेम्स (2022) और समर डेफलंपिक्स (2021)** जैसे खेल आयोजनों में बेहतर प्रदर्शन के बावजूद पेरिस ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन संतोषजनक नहीं रहा है।

ओलंपिक खेलों के बारे में

- **उत्पत्ति:** आधुनिक ओलंपिक खेलों की शुरुआत **1896 में एथेंस (ग्रीस)** में हुई थी। इसमें 14 देशों ने नौ खेल प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया था। तब से, ओलंपिक खेलों का **हर 4 साल पर आयोजन किया जाता रहा है।**
- **आदर्श वाक्य (मोटो):** ओलंपिक खेलों का मोटो **'फास्टर-हायर-स्ट्रॉन्गर'** है।
- **ओलंपिक ध्वज:** इसकी शुरुआत 1920 में की गई थी। **इस ध्वज में पांच इंटरलॉकिंग रिंग (छल्ले) हैं। ये रिंग/ छल्ले 'दुनिया के पांच महाद्वीपों' के प्रतीक हैं।**
- **ओलंपिक मशाल:** यह अग्नि के सकारात्मक मूल्यों का प्रतीक है। ओलंपिक टॉर्च रिले के साथ यह मशाल खेलों के आयोजन करने वाले देश की यात्रा करती है।
- **पेरिस 2024:** इसमें 4 अतिरिक्त खेल शामिल किए गए थे; **ब्रेकिंग** (ओलंपिक में पहली बार), **स्पोर्ट क्लाइम्बिंग, स्केटबोर्डिंग** और **सर्फिंग।**
- **कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन फॉर स्पोर्ट (CAS):** इसे **1983 में स्थापित** किया गया था। इसका मुख्य कार्य **एथलीट्स के सामने आने वाली कानूनी बाधाओं से निपटना** है।
  - इसे **पेरिस कन्वेंशन द्वारा मान्यता प्राप्त** है। इस कन्वेंशन पर अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक कमिटी **(IOC)** के अध्यक्षों और अन्य ने हस्ताक्षर किए हैं।

भारत और ओलंपिक

- भारत ने **1900 में पेरिस में आयोजित ओलंपिक** खेलों में पहली बार भाग लिया था। भारत का प्रतिनिधित्व **एंग्लो-इंडियन नॉर्मन प्रिचर्ड** ने किया था।
- **भारतीय ओलंपिक संघ (IOA) का गठन 1927 में किया गया** था और उसी वर्ष इसे IOC से **मान्यता** प्राप्त हुई थी। इसके प्रथम **अध्यक्ष सर दोराबजी टाटा** थे।
  - IOA **राष्ट्रीय खेल महासंघों के साथ समन्वय करता है** ताकि **टीमों को ओलंपिक** और अन्य अंतरराष्ट्रीय खेलों **के लिए भेजा जा सके।**
- भारत **2036** के ओलंपिक की मेजबानी की तैयारी कर रहा है, तथा 2036 तक स्पोर्ट्स में देश को शीर्ष दस राष्ट्रों में शामिल करने तथा 2047 तक शीर्ष पांच राष्ट्रों में शामिल करने की आकांक्षा रखता है।

भारत में खेल इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई पहलें

- **बजटीय सहायता:** केंद्रीय युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के लिए बजटीय आवंटन 2014-15 से 2023-24 के बीच लगभग दोगुना हो गया है।
- **खेलो इंडिया कार्यक्रम:** यह कार्यक्रम जमीनी स्तर और शीर्ष स्तर पर एथलीटों की पहचान करने और उनके विकास के लिए शुरू किया गया है।
- **खेलो इंडिया राइजिंग टैलेंट आइडेंटिफिकेशन (कीर्ति/ KIRTI) कार्यक्रम:** इसका उद्देश्य देश के प्रत्येक क्षेत्र से प्रतिभाओं की पहचान करने के लिए 9 से 18 वर्ष के स्कूली बच्चों को लक्षित करना है ।
- **खेल गतिविधियों को मुख्यधारा में लाना:** फिट इंडिया मूवमेंट और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में खेलों को शामिल किया गया है।

© Vision IAS

- **राष्ट्रीय खेल विकास कोष योजना:** यह योजना **एथलीटों के एक ऐसे विकासात्मक समूह** को फंड देती है जो ओलंपिक खेलों में पदक की संभावित दावेदार होते हैं। कॉर्पोरेट और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम इस कोष में योगदान कर सकते हैं।
- **टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना (TOPS):** भारत के शीर्ष एथलीटों को वित्त पोषण, विशेष उपकरण, अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन, शीर्ष स्तरीय कोचिंग और मासिक भत्ता सहित व्यापक सहायता प्रदान की जाती है।
- **एक स्कूल-एक खेल नीति:** रक्षा मंत्रालय ने सैनिक स्कूलों के लिए यह पहल शुरू की है। इसके तहत संबंधित राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश के लिए पहचाने गए कम से कम एक खेल क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करना है।
- **सेवानिवृत्त खिलाड़ी सशक्तीकरण प्रशिक्षण (RESET) कार्यक्रम:** केंद्रीय **युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय** ने RESET कार्यक्रम शुरू किया है। इसका उद्देश्य **सेवानिवृत्त खिलाड़ियों को करियर विकास और रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए ज्ञान तथा कौशल से सशक्त** बनाना है।
  - इसमें **20-50 वर्ष की आयु** के ऐसे सेवानिवृत्त एथलीट शामिल होंगे।

7.7.2. खेल संबंधी अन्य सुर्ख़ियां (Other Sports Related News)

7.7.2.1. ओलंपिक ऑर्डर (Olympic Order)

भारत के पहले व्यक्तिगत ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा को ओलंपिक प्रतिस्पर्धाओं में उत्कृष्ट योगदान के लिए ओलंपिक ऑर्डर से सम्मानित किया गया है।

- अभिनव बिंद्रा ने **2008 बीजिंग ओलंपिक में पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में स्वर्ण पदक** जीता था।

ओलंपिक ऑर्डर पुरस्कार के बारे में

- इस पुरस्कार की **शुरुआत 1975** में की गई थी। यह उन व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने **ओलंपिक प्रतिस्पर्धाओं में विशिष्ट सेवा** प्रदान की है।
- यह **अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (IOC)** द्वारा प्रदान किया जाने वाला **सर्वोच्च पुरस्कार** है।
  - IOC एक गैर-लाभकारी वैश्विक संगठन है। इसका लक्ष्य **'खेलों के माध्यम से एक बेहतर विश्व का निर्माण'** करना है।

7.7.2.2. राष्ट्रमंडल खेल 2026 {Commonwealth Games (CWG) 2026}

हाल ही में, **राष्ट्रमंडल खेलों के 2026 संस्करण का अनावरण** किया गया। इसमें केवल **10 खेल** शामिल हैं। इस संस्करण का आयोजन **ग्लासगो** में किया जाएगा।

राष्ट्रमंडल खेल (CWG) 2026 के बारे में

- जिन **12 श्रेणियों** में भारत ने 2022 CWG में पदक जीता था, उनमें से **6 को 2026 संस्करण से हटा** दिया गया है। उल्लेखनीय है कि 2022 के राष्ट्रमंडल खेलों में भारत ने कुल **61 पदक** जीते थे। इनमें से **30 इन्हीं 6 श्रेणियों** में जीते गए थे।
  - इनमें **बैडमिंटन, क्रिकेट, हॉकी, स्क्वैश, टेबल टेनिस** और **कुश्ती** शामिल हैं।

राष्ट्रमंडल खेलों के बारे में

- राष्ट्रमंडल खेल **पहली बार 1930 में हैमिल्टन (कनाडा)** में आयोजित किए गए थे।
- इन खेलों का आयोजन **प्रत्येक चार साल** में किया जाता है। भारत ने **2010 में दिल्ली** में इन खेलों की मेजबानी की थी।

7.7.2.3. शतरंज (Chess)

वर्ष 2024 भारतीय शतरंज के लिए कई उपलब्धियों के साथ एक सफल वर्ष रहा।

शतरंज में भारत की उपलब्धियां

खेल	खेल विवरण
कैंडिडेट्स चेस टूर्नामेंट, 2024	**डी. गुकेश** ने 2024 FIDE कैंडिडेट्स चेस टूर्नामेंट जीता, और **विश्व शतरंज चैम्पियनशिप मैच के लिए क्वालीफाई करने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी** बन गए।

PT 365 - संस्कृति

	कैंडिडेट्स चेस टूर्नामेंट के बारे में • इसका आयोजन **कनाडा के टोरंटो** में हुआ था। • **अंतर्राष्ट्रीय शतरंज महासंघ (FIDE) ने 1950** में कैंडिडेट्स टूर्नामेंट की शुरुआत की थी। पिछले विश्व शतरंज चैंपियन को चुनौती देने के लिए सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी यानी मजबूत दावेदार का चयन कैंडिडेट्स टूर्नामेंट नामक एक मैच से होता है।
45वां FIDE शतरंज ओलंपियाड	**भारत की शतरंज टीम ने 45वें FIDE ओलंपियाड में ओपन और महिला दोनों श्रेणियों में स्वर्ण** पदक जीता। **45वें FIDE शतरंज ओलंपियाड के बारे में** • **आयोजन:** इसका आयोजन **बुडापेस्ट, हंगरी** में किया गया था। • **44वां शतरंज ओलंपियाड पहली बार भारत (चेन्नई)** में आयोजित हुआ था। • इस प्रतियोगिता में **ओपन श्रेणी में विजेता टीम के लिए ट्रॉफी हैमिल्टन-रसेल कप** है। • **महिला श्रेणी** में विजेता टीम के लिए ट्रॉफी **वेरा मेनचिक कप** है।
विश्व शतरंज चैंपियनशिप, 2024	हाल ही में, **18 वर्षीय भारतीय शतरंज खिलाड़ी गुकेश डोम्मराजू ने चीन के डिंग लिरेन को हराकर** दुनिया के सबसे कम उम्र के शतरंज चैंपियन का खिताब अपने नाम किया। वे अब तक के सबसे युवा क्लासिकल चेस विश्व चैम्पियन बने हैं तथा विश्वनाथन आनंद के बाद दूसरे भारतीय चैम्पियन हैं। **यह शतरंज में भारत की ऐतिहासिक जीत है।** **विश्व शतरंज चैंपियनशिप के बारे** • 2024 की चैंपियनशिप का आयोजन **सिंगापुर** में हुआ था। • **1946** तक, चैंपियनशिप का आयोजन **निजी तौर** पर किया जाता था। • पहली FIDE विश्व चैंपियनशिप **1948** में एक टूर्नामेंट के रूप में आयोजित हुई थी, जिसमें **मिखाइल बोटविनिक** ने विजेता का खिताब अपने नाम किया।
वर्ल्ड रैपिड चेस चैंपियनशिप 2024	हाल ही में, **कोनेरू हम्पी** ने 2019 के बाद दूसरी बार **2024 महिला वर्ल्ड रैपिड चेस चैंपियनशिप** का खिताब जीता। **वर्ल्ड रैपिड चेस चैंपियनशिप के बारे में** • यह **FIDE** द्वारा आयोजित एक **वार्षिक शतरंज टूर्नामेंट** है। इसके माध्यम से रैपिड टाइम नियंत्रण के तहत खेले जाने वाले शतरंज में विश्व चैंपियन का निर्धारण किया जाता है। • रैपिड गेम्स के लिए समय नियंत्रण आमतौर पर **प्रति खिलाड़ी 15 मिनट** निर्धारित किया जाता है, जिसमें पहली चाल से प्रति चाल 10-सेकंड की वृद्धि होती है। • पहली आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त वर्ल्ड रैपिड चेस चैंपियनशिप 2003 में **कैप डी'एग्डे (फ्रांस)** में आयोजित हुई थी।

अंतर्राष्ट्रीय शतरंज महासंघ (FIDE) के बारे में

- यह शतरंज के खेल का **शासी निकाय** है। यह सभी **अंतर्राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिताओं** को शासित करता है।
- इसका गठन एक **गैर-सरकारी संस्था** के रूप में किया गया था। इसे **1999 में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने एक वैश्विक खेल संगठन** के रूप में मान्यता दी थी।
- **वर्तमान में FIDE का मुख्यालय** लॉज़ेन (स्विट्ज़रलैंड) में है। इसकी स्थापना वर्ष 1924 में पेरिस हुई थी। इसका आदर्श वाक्य है- **'वी आर वन फैमिली'।**

7.7.2.4. टी20 विश्व कप (T20 World Cup)

भारत ने **संयुक्त राज्य अमेरिका और वेस्टइंडीज** में आयोजित टी20 विश्व कप के फाइनल में **दक्षिण अफ्रीका** को हराकर 2007 के बाद **दूसरी बार 2024 टी20 क्रिकेट विश्व कप** जीता।

टी20 विश्व कप के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसे **अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC) द्वारा 2007** में शुरू किया गया था। यह ट्वेंटी-20 क्रिकेट की प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय चैंपियनशिप है।
- **प्रारूप:** यह क्रिकेट का एक छोटा प्रारूप है। इसमें प्रत्येक टीम के लिए अधिकतम **20 ओवर** होते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC) के बारे में

- इसका मुख्यालय **संयुक्त अरब अमीरात के दुबई** में स्थित है। ICC **क्रिकेट के लिए वैश्विक शासी निकाय** है। यह **टी20 विश्व कप, चैंपियंस ट्रॉफी, विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप** जैसे प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट्स के आयोजन के लिए जिम्मेदार है।

7.8. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News)

7.8.1. पोर्ट ब्लेयर का नाम बदलकर श्री विजय पुरम किया गया (Port Blair Renamed as Sri Vijaya Puram)

सुर्ख़ियों में क्यों?

अंडमान और निकोबार (A&N) द्वीप समूह की राजधानी **पोर्ट ब्लेयर** का नाम बदलकर **श्री विजय पुरम** कर दिया गया है।

- **श्री विजय पुरम** भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की जीत का प्रतिनिधित्व करता है तथा यह अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के अद्वितीय योगदान को प्रदर्शित करता है।
- **नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने पहली बार यहीं पर तिरंगा फहराया** था और **सेलुलर जेल भी यहीं स्थित** है।
- नाम बदलना **औपनिवेशिक विरासत से अलग होने का भी संकेत** है। यह अंडमान और निकोबार द्वीप की समकालीन सामरिक भूमिका को उजागर करता है। यह द्वीप कभी **चोल साम्राज्य के लिए नौसैनिक अड्डे** के रूप में कार्य करता था।

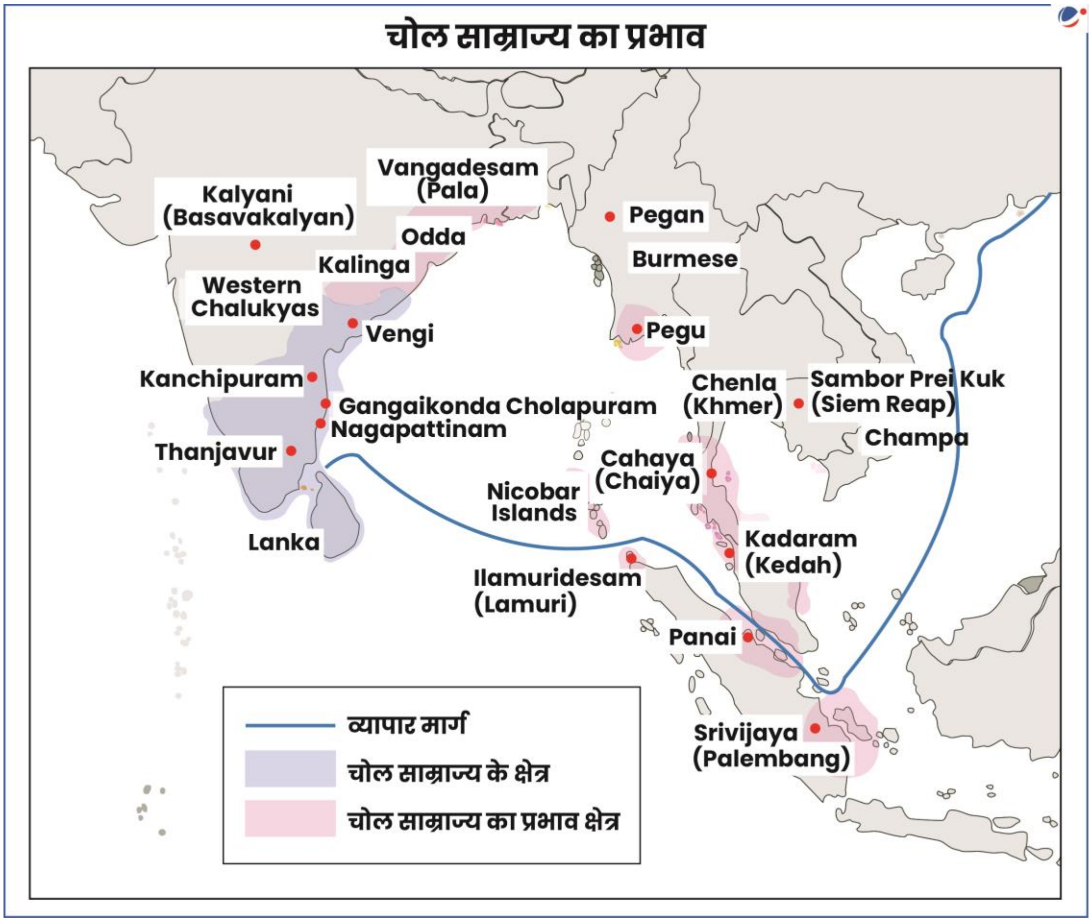

चोल साम्राज्य की नौसैनिक शक्ति

- **महत्वपूर्ण भूमिका: राजराजा (985-1014) और राजेंद्र प्रथम (1014-1044)** जैसे उत्तरवर्ती **चोल शासकों** ने एक **शक्तिशाली नौसेना तैयार की थी।**
  - उन्होंने **आक्रामक सैन्य नीति** अपनाई थी।
  - इन शासकों की बंगाल तक की विजय के कारण **बंगाल की खाड़ी को 'चोल झील'** कहा जाने लगा था। इसने उनकी **'पूर्व की ओर बढ़ने की नीति' के तहत दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ समृद्ध व्यापार** को सक्षम किया।
    - **नागापट्टिनम** जैसे प्रमुख व्यापारिक केंद्र स्थापित किए गए।

महत्वपूर्ण नौसैनिक अभियान

- **राजराजा ने त्रिवेंद्रम आदि में चेर नौसेना** को नष्ट कर दिया था। **कंडालूर सलाई का युद्ध (988 ई.)** केरल के कंडालूर में चेरों के खिलाफ राजराजा की पहली सैन्य विजय थी, जिसमें चेर नौसेना बलों और बंदरगाहों को नुकसान हुआ।
  - इसके अलावा, उसने **श्रीलंका पर आक्रमण** किया और उसके **उत्तरी भाग** पर अधिकार कर लिया। साथ ही, उसने **मालदीव** पर भी विजय प्राप्त की थी।
- **राजेंद्र प्रथम की श्रीलंका पर नौसैनिक विजय ने पूरे द्वीप को चोल साम्राज्य** का एक प्रांत बना दिया था।
  - उसने **मलय प्रायद्वीप और पड़ोसी द्वीपों तक फैले शैलेंद्र साम्राज्य** के खिलाफ एक बड़ा अभियान शुरू किया था। इसके परिणामस्वरूप, उसे **मलय प्रायद्वीप और सुमात्रा के कई क्षेत्रों पर विजय** प्राप्त हुई थी।

7.8.2. वर्ल्ड हेरिटेज ट्रांस-ह्यूमैंन्स इनिशिएटिव (World Heritage Transhumance Initiative)

इस पहल का नेतृत्व **अंतर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद (ICOMOS)**[8] करेगी। इस पहल को **अजरबैजान** का भी समर्थन प्राप्त है।

ट्रांस-ह्यूमैंन्स के बारे में

- ट्रांस-ह्यूमैंन्स **पशुओं के मौसमी प्रवासन की पारंपरिक प्रथा या घुमंतू व्यवस्था** है। इसमें मानव समुदाय अपने पशुधन के साथ भौगोलिक या जलवायु क्षेत्रों के बीच प्रवास करते रहते हैं।
- 2023 में, **दो ट्रांस-ह्यूमैंन्स परंपराओं को यूनेस्को-मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची** में शामिल किया गया था। ये हैं-
    - 10 यूरोपीय देशों में ट्रांस-ह्यूमैंन्स, और
    - स्विट्जरलैंड का अल्पाइन चारागाह मौसम।

भारत के ट्रांस-ह्यूमैंन्स भू-क्षेत्र

- ट्रांस-ह्यूमैंन्स परंपरा **हिमालय** में प्रचलित है। यहां **गुज्जर, बकरवाल, गद्दी और चांगपा** जैसी कई खानाबदोश जनजातियां हैं, जो भेड़ एवं बकरियां पालती हैं।
    - गर्मियों में पशुओं को **उप-अल्पाइन और अल्पाइन चरागाहों** में ले जाया जाता है, जबकि सर्दियों के दौरान उन्हें आस-पास के मैदानों में चराया जाता है।
- यह परंपरा **राजस्थान, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात और उत्तर प्रदेश के मैदानी इलाकों** में भी मौजूद है।

7.8.3. यूनेस्को के "मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड (MOW)-एशिया-पैसिफिक रीजनल रजिस्टर" (UNESCO's MOW Asia-Pacific Regional Register)

"यूनेस्को-मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड-एशिया-पैसिफिक रीजनल रजिस्टर" में 20 साहित्यिक कृतियां शामिल की गई हैं। इनमें तीन भारतीय साहित्यिक कृतियों (पांडुलिपियां) को भी शामिल किया गया है, ये हैं- **रामचरितमानस, पंचतंत्र** और **सहृदयालोक-लोकन।**

- इन कृतियों को सूची में शामिल करने का निर्णय **मंगोलिया** के **उलानबाटर** में आयोजित **मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड कमेटी फॉर एशिया एंड द पैसिफिक (MOWCAP)** की 10वीं बैठक में लिया गया।

MoW प्रोग्राम के बारे में

- इसे **यूनेस्को द्वारा 1992** में शुरू किया गया था।
- **इसमें तीन तरह के रजिस्टर शामिल हैं-** अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय रजिस्टर।
- अंतर्राष्ट्रीय रजिस्टर में भारत की कई कृतियां या पांडुलिपियां शामिल हैं, जैसे- तमिल मेडिकल मैन्युस्क्रिप्ट कलेक्शन, शैव पांडुलिपियां, ऋग्वेद आदि।
- **इस प्रोग्राम के मुख्य लक्ष्य हैं:**
    - विश्व भर की दस्तावेजी विरासत को सुरक्षित रखना,
    - इन दस्तावेजी विरासत तक सभी की पहुंच सुनिश्चित करना, और
    - दस्तावेजी विरासतों के बारे में जन जागरूकता बढ़ाना।

सूची में शामिल तीन भारतीय साहित्यिक कृतियों के बारे में

- **रामचरितमानस:**
    - इसकी रचना **16वीं शताब्दी** में **गोस्वामी तुलसीदास** ने की थी।
    - यह **अवधी भाषा** में लिखा गया एक महाकाव्य है, जिसमें **सात कांड** हैं।
    - इसमें **रामायण** से जुड़ी हुई घटनाओं का **काव्यात्मक रूप से वर्णन** किया गया है।
- **पंचतंत्र:**
    - यह **आचार्य विष्णु शर्मा** द्वारा **संस्कृत** में रचित एक विख्यात ग्रंथ है।
    - यह **जीवंत भारतीय दंतकथाओं के सबसे पुराने संग्रहों में से एक** है।

[8] International Council on Monuments and Sites

© Vision IAS

- ○ यह **पांच भागों** से मिलकर बना है। इस ग्रंथ की सबसे अनोखी विशेषता **"कहानी के भीतर कहानी"** की प्रस्तुति है।
- **सहृदयालोक-लोकन:**
  - ○ यह **आचार्य आनंदवर्धन** द्वारा **संस्कृत** में लिखित और भारतीय काव्यशास्त्र की एक कालजयी रचना है।
  - ○ दार्शनिक **अभिनव गुप्त** ने इस पर **एक भाष्य लिखा** है।

7.8.4. साहित्य अकादमी (Sahitya Akademi)

मशहूर लेखक **रस्किन बॉन्ड** को साहित्य अकादमी फेलोशिप से सम्मानित किया गया।

साहित्य अकादमी फेलोशिप के बारे में

- यह फेलोशिप किसी लेखक को अकादमी द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है।
- यह **'साहित्य के अनमोल धरोहर (The immortals of literature)'** के लिए आरक्षित है।
- **रस्किन बॉन्ड की प्रमुख साहित्यिक रचनाएं:** वैग्रेंट्स इन द वैली, वन्स अपॉन ए मॉनसून टाइम, एंग्री रिवर, स्ट्रेंजर्स इन द नाइट, ऑल रोड्स लीड टू गंगा, आदि।

HQ: **नई दिल्ली**

साहित्य अकादमी के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसे औपचारिक रूप से 1954 में स्थापित किया गया था। यह **सोसाइटीज पंजीकरण अधिनियम, 1860** के तहत पंजीकृत है।
- **मंत्रालय:** यह **संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त** निकाय है।
- **भूमिका:** यह **24 भाषाओं में** साहित्यिक गतिविधियों को संचालित करती है। इन भाषाओं में **संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाएं तथा अंग्रेजी व राजस्थानी** सम्मिलित हैं।
- **इसके द्वारा प्रदत्त प्रमुख पुरस्कार:** साहित्य अकादमी पुरस्कार, **भाषा सम्मान,** आदि।

7.8.5. अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस {International Abhidhamma Divas (IAD)}

संस्कृति मंत्रालय द्वारा **अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (IBC)** के सहयोग से नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन परिसर में **अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस** समारोह का आयोजन किया गया।

- इस समारोह में भारत सरकार द्वारा हाल ही में **पालि को शास्त्रीय भाषा** घोषित किए जाने की भी सराहना की गई।

अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस के बारे में

- अभिधम्म दिवस उस ऐतिहासिक घटना की याद में मनाया जाता है जब भगवान बुद्ध **स्वर्ग लोक (*तुषिता-देवलोक*)** से उत्तर प्रदेश के ***संकसिया*** (अब संकिसा बसंतपुर) में **अवतरित** हुए थे।
  - ○ इस घटना को सम्राट अशोक के **संकासिया हाथी स्तंभ** द्वारा भी चिन्हित किया गया है।
- यह घटना **पहली वर्षावास (वस्स)** के अंत और **पवरना उत्सव (वर्षावास की समाप्ति का उत्सव)** के आयोजन का भी प्रतीक है।
  - ○ **वस्स या वर्षावास तीन महीने की अवधि** होती है। इस दौरान बौद्ध भिक्षु किसी एक बुद्ध विहार में रहकर अध्ययन करते हैं, ध्यान साधना करते हैं, ज्ञानार्जन करते हैं, फिर वर्ष के शेष महीनों में भ्रमण या चारिका करने निकल पड़ते हैं।

7.8.6. अभय मुद्रा (Abhay Mudra)

हाल ही में, संसद में विपक्ष के नेता ने अपने भाषण में **'अभय मुद्रा'** का जिक्र किया।

अभय मुद्रा के बारे में

- यह मुद्रा **निर्भयता** को इंगित करती है।
- यह **बुद्ध द्वारा एक पागल हाथी को वश** में करने के लिए इस्तेमाल की गई मुद्रा है। इसे **पांचवें ध्यानी बुद्ध (अमोघसिद्धि)** ने भी अपनाया था।

बुद्ध से जुड़ी अन्य मुद्राएं और उनके अर्थ

- **भूमिस्पर्श मुद्रा:** यहां पृथ्वी प्रतीकात्मक रूप से बुद्ध के ज्ञान की सत्यता की साक्षी के रूप में है। यह मुद्रा 'मारविजय' की प्रतीक है। इसी मुद्रा में शाक्यमुनि (या बुद्ध) ने सत्य पर ध्यान करते हुए 'मार' द्वारा उत्पन्न बाधाओं पर विजय प्राप्त की थी।
- **ध्यान मुद्रा:** यह ध्यान की मुद्रा है। यह विचार, इंद्रियों और शांति के सटीक संतुलन को इंगित करती है।
- **धर्मचक्रप्रवर्तन (चक्र घुमाना) मुद्रा:** यह धम्म के उपदेश का प्रतिनिधित्व करती है।

7.8.7. सांस्कृतिक संपदा समझौता (Cultural Property Agreement)

नई दिल्ली में विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र के आयोजन के अवसर पर भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने पहले **'सांस्कृतिक संपदा समझौते'** पर हस्ताक्षर किए।

सांस्कृतिक संपदा समझौते के बारे में

- **उद्देश्य:** भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका को पुरावशेषों की अवैध तस्करी को रोकना और उस पर अंकुश लगाना।
- यह समझौता **भारतीय मूल की कुछ पुरातात्विक सामग्री और एथनोलॉजिकल सामग्री के संयुक्त राज्य अमेरिका में आयात करने पर प्रतिबंध** लगाता है।
- यह समझौता **संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय पुरावशेषों की त्वरित जब्ती और उन्हें भारत वापस लाने** में सहायता करेगा।

पुरावशेषों की तस्करी रोकने के प्रयास

- **वैश्विक स्तर पर प्रयास:**
  - "सांस्कृतिक संपदा के स्वामित्व के अवैध आयात, निर्यात और हस्तांतरण पर प्रतिबंध लगाने एवं रोकथाम करने वाले साधनों पर **यूनेस्को कन्वेंशन 1970" के अनुच्छेद 9** में अवैध तस्करी को रोकने के उपाय किए गए हैं।
  - **'काशी कल्चर पाथवे' नाम से G20-कल्चर वर्किंग ग्रुप का आउटकम डॉक्यूमेंट** जारी किया गया। इसमें पुरातात्विक सामग्रियों की अवैध तस्करी के खिलाफ लड़ाई को मजबूत करने के लिए एक प्रभावी वैश्विक गठबंधन का समर्थन किया गया है।
- **भारत में किए गए प्रयास:**
  - **पुरावशेष और बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम[9], 1972 की धारा 3** भारत के बाहर पुरावशेषों के निर्यात पर रोक लगाती है।
  - यदि किसी अन्य देश में **भारतीय पुरावशेषों का पता** चलता है, तो **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** उन देशों के साथ समन्वय करने और पुरावशेषों को देश में वापस लाने के लिए जिम्मेदार है।

7.8.8. विश्व भर में 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (IYD) मनाया गया {World Celebrates 10th International Yoga Day (IYD)}

गौरतलब है कि संयुक्त राष्ट्र ने 2014 में **21 जून** को **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस** घोषित किया था। इसका उद्देश्य योग से जुड़े कई लाभों के बारे में विश्व भर में जागरूकता बढ़ाना है।

- **भारत** ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए **संयुक्त राष्ट्र महासभा में संकल्प का मसौदा** प्रस्तुत किया था। **175 सदस्य देशों** ने इस संकल्प के पक्ष में मतदान किए थे।

योग के बारे में

- **अर्थ:** "योग" शब्द संस्कृत के **"युज"** धातु से बना है जिसका अर्थ है **"मिलाना" या "जोड़ना"।**
  - इसे **शरीर, मस्तिष्क और आत्मा** के संयोजन के रूप में देखा जा सकता है। साथ ही, इसे **संपूर्ण स्वास्थ्य और सेहतमंदी का राज** भी माना जाता है।
- **छह भारतीय दर्शनों (षड्दर्शन) में "योग" दर्शन** भी शामिल है। शेष पांच भारतीय दर्शन हैं- **वैशेषिक, न्याय, सांख्य, पूर्व मीमांसा** और **वेदांत या उत्तर मीमांसा।**

---

[9]Antiquities and Art Treasure Act

© Vision IAS

- **योग की उत्पत्ति:**
  - **सिंधु घाटी सभ्यता की कई मुहरों और जीवाश्म अवशेषों** में "योगाभ्यास" के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। इससे पता चलता है कि **प्राचीन काल से ही भारत में योग का अभ्यास** किया जाता रहा है।
  - **"योग" शब्द का उल्लेख चारों वेदों** में किया गया है।
  - हालांकि, दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के **पतंजलि के "योगसूत्र"** में योग का व्यवस्थित तरीके से उल्लेख मिलता है।
    - **पतंजलि की एक अन्य रचना है: महाभाष्य** (यानी विस्तृत टीका)

योग और सांस्कृतिक कूटनीति के बीच संबंध

- योग **"भारत की सॉफ्ट पावर" कूटनीति** के एक प्रमुख साधन के रूप में सामने आया है। साथ ही, यह सांस्कृतिक कूटनीति में प्रमुख भूमिका निभाते हुए **"भारत के सबसे बड़े सांस्कृतिक दूत"** के रूप में भी उभरा है।
  - "एक-दूसरे की समझ को बढ़ावा देने के लिए देशों और उनके लोगों के बीच **विचारों, जानकारियों, कला रूपों, भाषा और संस्कृति के अन्य पहलुओं का आदान-प्रदान"** ही **सांस्कृतिक कूटनीति** कहलाता है।

ग्रीष्म संक्रांति (Summer Solstice) या अयनांत (21 जून)

- इस दिन **उत्तरी गोलार्ध** सूर्य की ओर झुका होता है और **सूर्य की किरणें सीधे कर्क रेखा पर पड़ती हैं।**
- उत्तरी ध्रुव के सूर्य की ओर झुकाव या उन्मुख होने के चलते **आर्कटिक वृत्त से उत्तर में मौजूद स्थानों पर** लगभग छह महीने तक लगातार दिन का उजाला रहता है।
- उत्तरी गोलार्ध में **सबसे लंबा दिन और सबसे छोटी रात** 21 जून को ही होती है।
  - इस समय दक्षिणी गोलार्ध में ठीक इसके उलट स्थितियां होती हैं, अर्थात् सबसे छोटा दिन और सबसे लंबी रात।

7.8.9. भारतीय ध्वज संहिता (Flag Code of India)

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री ने देशवासियों से **"हर घर तिरंगा"** अभियान के तहत अपने घरों पर तिरंगा फहराने का आग्रह किया।

- राष्ट्रीय ध्वज को फहराने के संबंध में सभी नियम और विनियम **भारतीय ध्वज संहिता, 2002 (2021 और 2022 में संशोधित)** में उल्लिखित हैं।

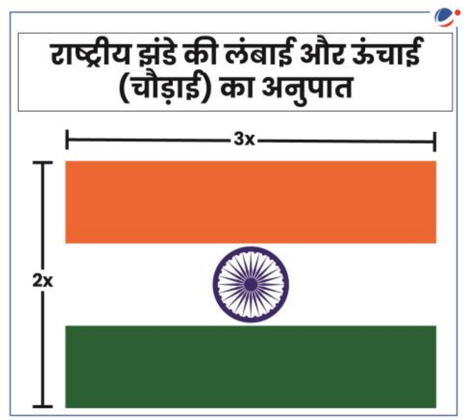

भारतीय ध्वज संहिता, 2002 के मुख्य प्रावधान

- यह भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के **उपयोग, प्रदर्शन और फहराने** के बारे में कानूनों एवं परिपाटियों का एक सेट है। इसे **26 जनवरी, 2002 को प्रभाव** में लाया गया था।
- यह **निजी, सार्वजनिक और सरकारी संस्थानों** द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन को नियंत्रित करती है।
- **घर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराना:** सामान्य नागरिक, निजी संगठन या शैक्षणिक संस्थान राष्ट्रीय ध्वज को उसकी गरिमा और सम्मान के अनुसार किसी भी दिन या अवसर पर फहरा सकते हैं। संहिता में यह संशोधन 2022 में किया गया था।
- राष्ट्रीय ध्वज **हाथ से काते और हाथ से बुने/ मशीन से निर्मित, कपास/ पॉलिएस्टर/ ऊनी/ रेशम/ इचादी बंटिंग** से बना होगा। संहिता में यह संशोधन 2021 में किया गया था।
- राष्ट्रीय ध्वज का आकार **आयताकार** होता है। ध्वज किसी भी **आकार का हो सकता** है लेकिन **ध्वज की लंबाई और चौड़ाई का अनुपात 3:2** रखना अनिवार्य है।

7.8.10. राष्ट्रीय हथकरघा दिवस (National Handloom Day)

7 अगस्त, 2024 को देशभर में **10वां राष्ट्रीय हथकरघा दिवस** मनाया गया।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के बारे में

- इसका उद्देश्य **हथकरघा बुनकरों को सम्मानित करना और हथकरघा उद्योग को प्रेरणा** प्रदान करना है।

- **इतिहास:** यह दिन **'स्वदेशी आंदोलन'** की स्मृति में चुना गया है। ज्ञातव्य है कि स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत **7 अगस्त, 1905** को की गई थी।
    - आंदोलन में **ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार** किया गया था, जबकि हथकरघा निर्मित वस्त्रों सहित भारतीय निर्मित उत्पादों को खरीदने पर बल दिया गया था।
    - **पहला राष्ट्रीय हथकरघा दिवस, 2015** में मनाया गया था।
- **महत्त्व:**
    - हथकरघा भारत का **सबसे बड़ा कुटीर उद्योग और ग्रामीण क्षेत्र का दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदान** करने वाला व्यवसाय है।
    - इसमें **70% बुनकर और संबद्ध श्रमिक** महिलाएं हैं।

नोट: *भारत में बुनाई शैलियों के बारे में और अधिक जानकारी के लिए डॉक्यूमेंट के अंत में परिशिष्ट देखें।*

7.8.11. एरी सिल्क (रेशम) (ERI Silk)

पूर्वोत्तर हस्तशिल्प और हथकरघा विकास निगम ने अपने **एरी सिल्क के लिए ओइको-टेक्स प्रमाणन (Oeko-Tex certification)** सफलतापूर्वक प्राप्त किया।

- ओइको-टेक्स वास्तव में एक प्रमाणीकरण मानक है। यह सुनिश्चित करता है कि **वस्त्रों का हानिकारक पदार्थों के मामले में परीक्षण** किया गया है और उन्हें **पर्यावरण के अनुकूल परिस्थितियों में निर्मित** किया जाता है।

एरी सिल्क के बारे में

- यह दुनिया भर में **एकमात्र वीगन (Vegan) रेशम** के रूप में प्रसिद्ध है। ऐसा इस कारण, क्योंकि **अन्य रेशम उत्पादन प्रक्रियाओं के विपरीत, इसमें कोकून के भीतर कीट** की मृत्यु नहीं होती है। इसके विपरीत, कीट कोकून के भीतर जीवित रहता है।
- इसका उत्पादन एक **रेशम कीट प्रजाति 'फिलोसामिया रिसिनी'** द्वारा किया जाता है। यह कीट **मल्टीवोल्टाइन** (एक सीजन में दो से अधिक बार अंडे/बच्चे देने वाले) होता है। साथ ही, इसे **साल में 5-6 बार पाला** जाता सकता है।

नोट: भारत में सभी पांच प्रकार के रेशम उत्पादित किए जाते हैं। ये पांच प्रकार हैं- **मलबरी, एरी, उष्णकटिबंधीय टसर और शीतोष्ण टसर तथा मुगा।**

7.8.12. डेनिसोवन (Denisovan)

तिब्बत की **बैशिया कार्स्ट गुफा** में कुछ मानव हड्डियों के अवशेष पाए गए थे। वैज्ञानिकों ने इन अवशेषों की पहचान **डेनिसोवन नामक पुरातन मानव प्रजाति के व्यक्ति** के रूप में की है।

डेनिसोवन के बारे में

- यह **होमिनिड की एक विलुप्त** प्रजाति है। वे **आधुनिक मानव के निकटता से संबंधित** थे।
- इस प्रजाति की आबादी का विस्तार **पिछले हिमयुग के दौरान साइबेरिया से लेकर दक्षिण-पूर्व एशिया** तक माना जाता है।
- डी.एन.ए. साक्ष्य से पता चलता है कि **डेनिसोवन्स निएंडरथल और आधुनिक मानव दोनों** से संबंधित हैं, या इन दोनों (निएंडरथल और आधुनिक मानव) के साथ मिले **(Interbred)** हों। ऐसा इसलिए कि तिब्बत में इंसान में डेनिसोवन के जीन प्राप्त हुए हैं।
- **होमो हीडलबर्गेंसिस को आधुनिक मानव और निएंडरथल, दोनों का सामान्य (कॉमन) पूर्वज** माना जाता है। होमो हीडलबर्गेंसिस संभवतः **अफ्रीका** में रहते थे।

7.8.13. बंगाल गजट (Bengal Gazette)

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर कई विशेषज्ञों ने भारत के पहले समाचार पत्र **'बंगाल गजट'** को याद किया।

बंगाल गजट के बारे में

- **29 जनवरी, 1780** को **"हिक्कीज़ बंगाल गजट" या कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर** का प्रकाशन आरंभ हुआ था।
- **आयरिशमैन जेम्स ऑगस्टस हिक्की** ने भारत का **पहला** मुद्रित समाचार-पत्र **बंगाल गजट** प्रकाशित किया था।
- यह ब्रिटिश भारत की राजधानी **कोलकाता** (पूर्व में कलकत्ता) से प्रकाशित होने वाला **अंग्रेजी भाषा** का **साप्ताहिक** समाचार-पत्र था।
- **तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स की आलोचना छपने के बाद 1782** में इस समाचार-पत्र को **बंद कर दिया गया था।**

© Vision IAS

7.8.14. अंतर्राष्ट्रीय गणितीय ओलंपियाड (International Mathematical Olympiad)

भारत छात्रों की छह सदस्यीय टीम ने अंतर्राष्ट्रीय गणितीय ओलंपियाड (IMO) 2024 में **4 स्वर्ण पदक, 1 रजत पदक और 1 ऑनरेबल मेंशन** (Honourable mention) हासिल किया है।

- भारत ने पहली बार इस ओलंपियाड में **1989** में भाग लिया था, तब से लेकर अब तक का यह सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन है।

अंतर्राष्ट्रीय गणितीय ओलंपियाड (IMO) के बारे में

- यह **हाई स्कूल** के छात्रों के लिए **गणित विषय पर वैश्विक स्तर पर आयोजित की जाने वाली चैम्पियनशिप प्रतियोगिता** है। यह प्रतियोगिता **हर साल एक अलग देश में आयोजित** की जाती है।
- पहला **ओलंपियाड 1959 में रोमानिया** में आयोजित किया गया था।
- इस प्रतियोगिता में **स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक** प्रदान किए जाते हैं। साथ ही, बेहतर प्रयास करने वाले छात्रों को **ऑनरेबल मेंशन** भी प्रदान किया जाता है।

7.8.15. विश्व का सबसे पुराना कैलेंडर (World's Oldest Calendar Discovered)

पुरातत्वविदों ने दक्षिणी तुर्की के **एक प्राचीन स्थल गोबेकली टेपे (विश्व का सबसे पुराना मंदिर) में विश्व का सबसे पुराना कैलेंडर की खोज की** है।

कैलेंडर के बारे में

- **प्रकार:** यह एक **सौर-चंद्र आधारित कैलेंडर** है।
- **उद्देश्य:** इसका निर्माण संभवतः **समय और खगोलीय घटनाओं** का पता लगाने के लिए किया गया था।
- **नक्काशी:**
    - **V-आकार के प्रतीक:** प्रत्येक प्रतीक **एक दिन का प्रतिनिधित्व** करता है। इसमें **365 दिन** हैं तथा यह **सौर वर्ष** को प्रदर्शित करता है।
    - **अन्य प्रतीक: जानवरों और अमूर्त डिजाइन** को शामिल किया गया है, जो संभावित रूप से महत्वपूर्ण घटनाओं या अवधियों को चिन्हित करते हैं।
- **ऐतिहासिक महत्त्व:** इसका निर्माण **10,850 ईसा पूर्व के आसपास पृथ्वी पर किसी धूमकेतु के गिरने की याद में कराया** गया था। इस धूमकेतु के गिरने के कारण संभवतः एक छोटा हिमयुग आया और प्रारंभिक मानव समाज पर इसका प्रभाव पड़ा।

परिशिष्ट 1: भारत की बुनाई शैलियाँ (Weaving Styles of India)

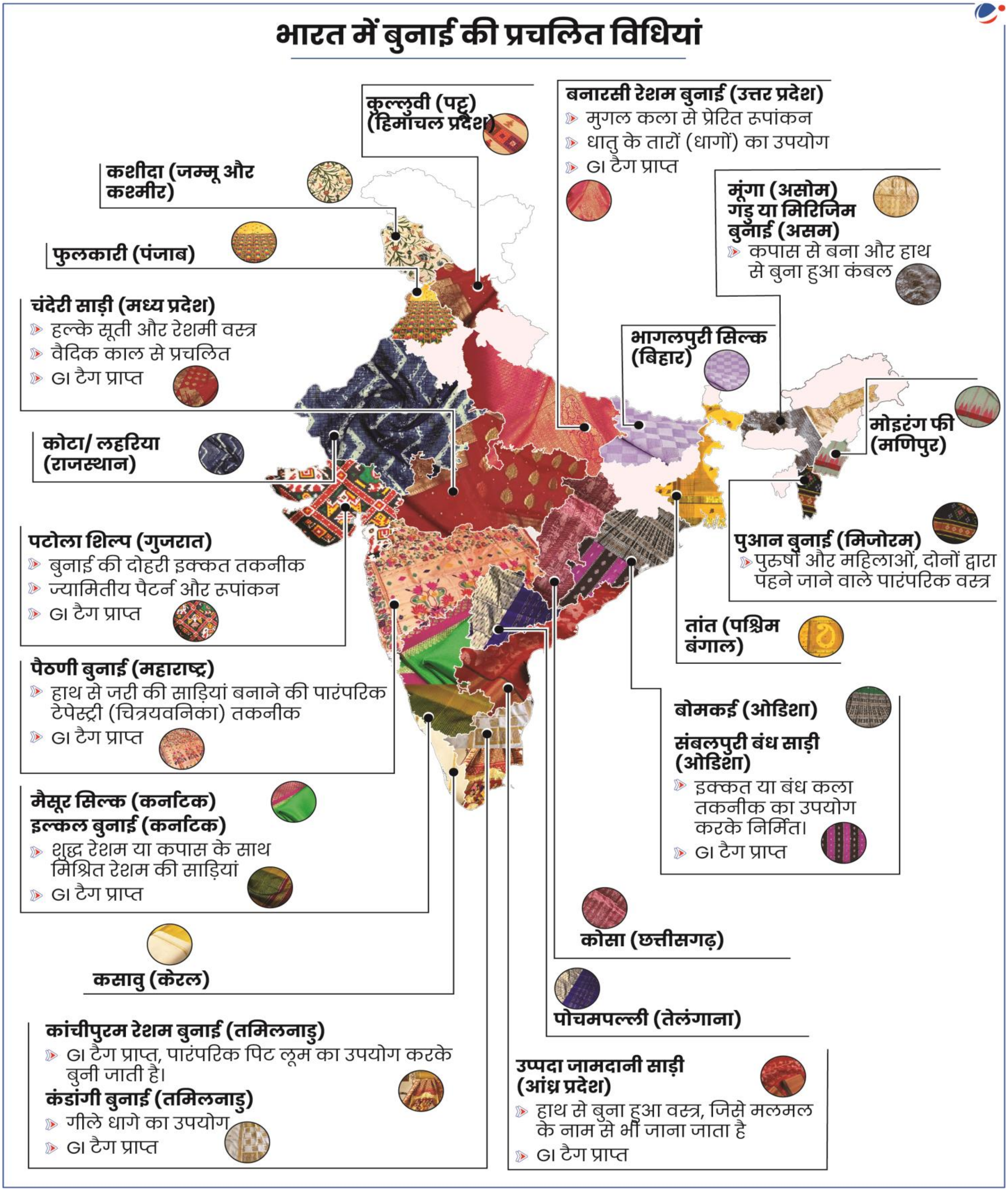

© Vision IAS

परिशिष्ट 2: भारत के फसल उत्सव (Harvest Festivals of India)

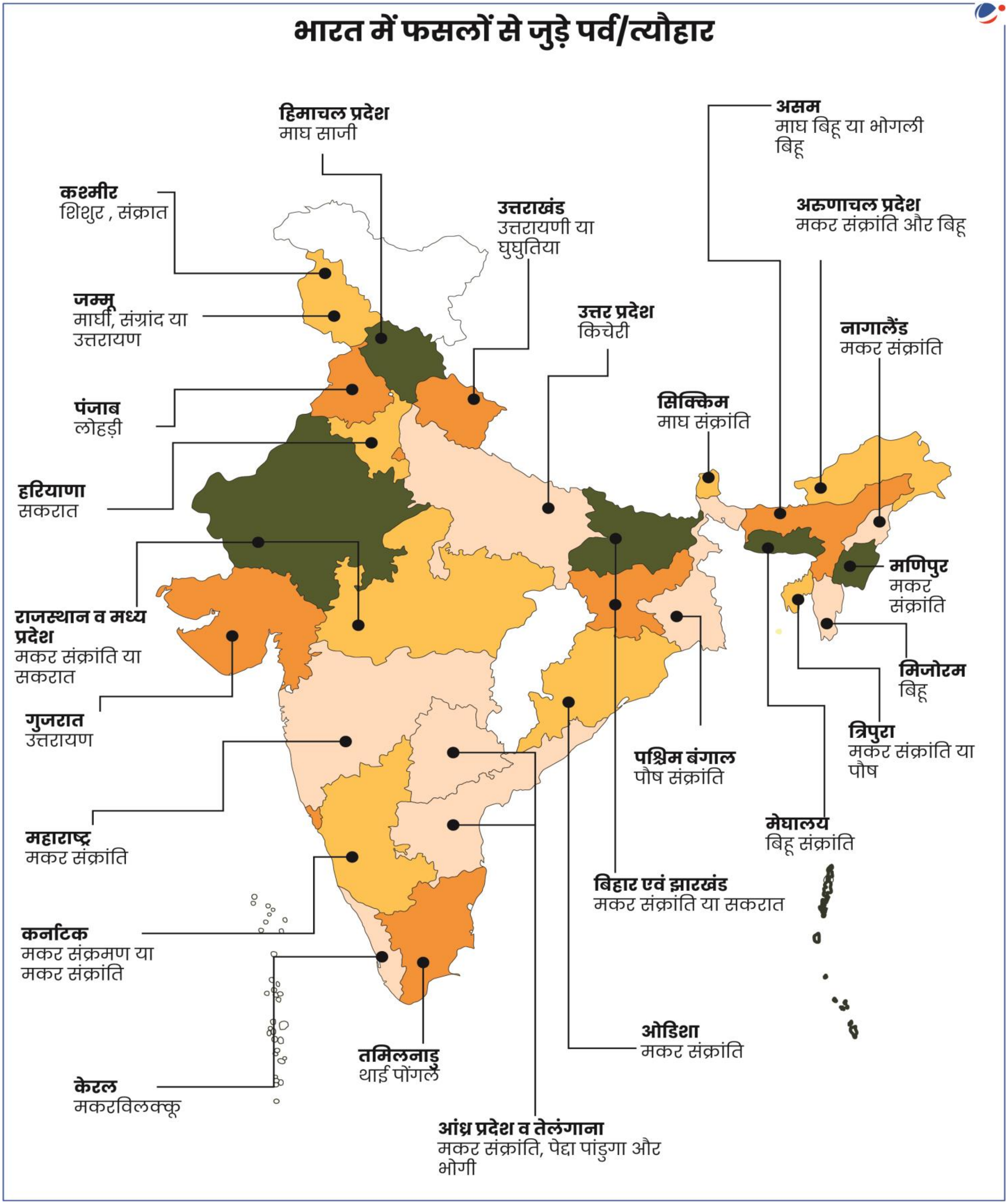

परिशिष्ट 3: भारत का क्षेत्रीय नववर्ष (Regional New Years of India)

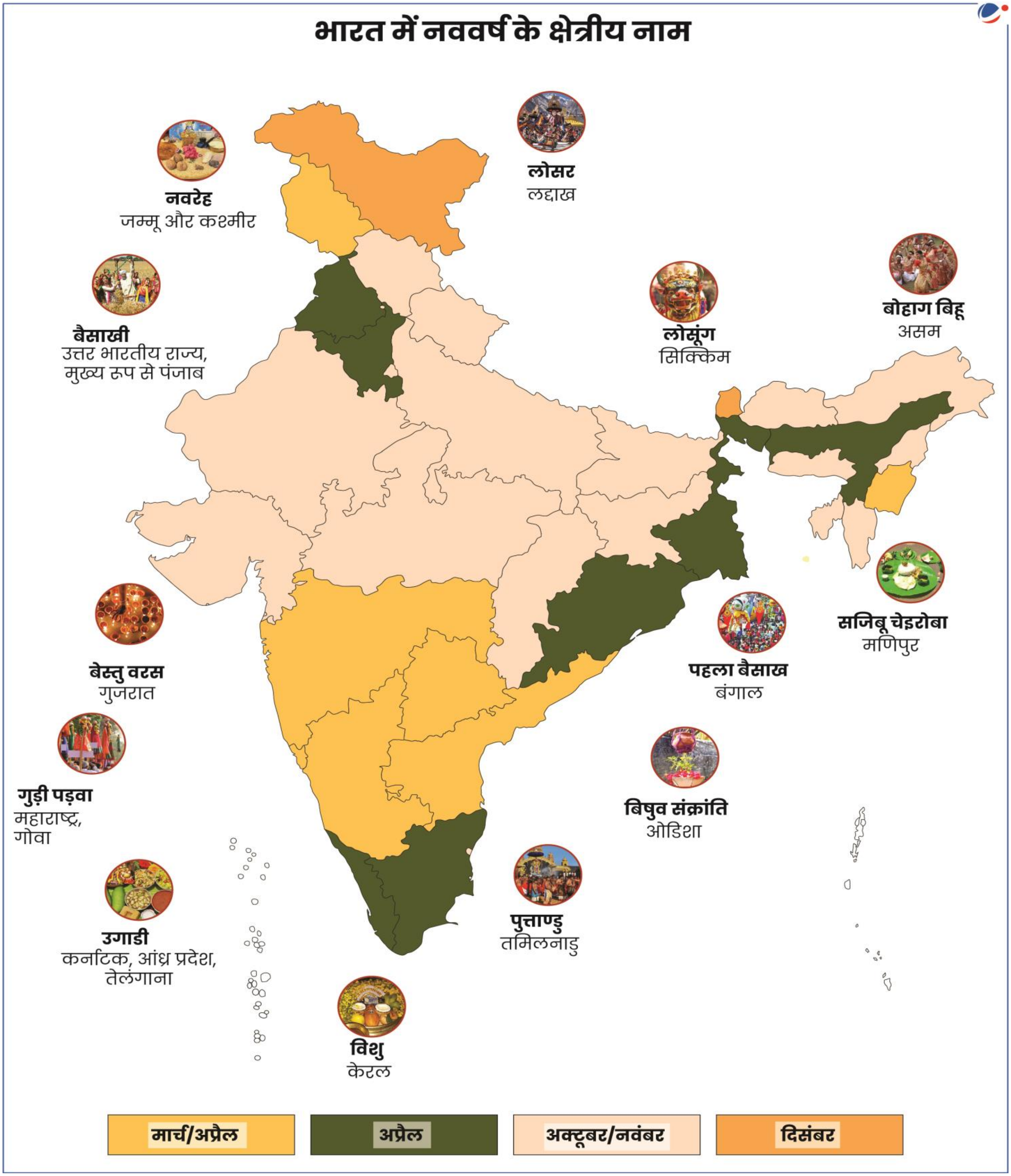

परिशिष्ट 4: अशोक के शिलालेख और शिलालेख (Ashokan Inscriptions and Edicts)

अशोक के अभिलेख

- **जेम्स प्रिंसेप** वह पहला विद्वान था, जिसने 1837 में सम्राट अशोक के अभिलेखों की **व्याख्या** की थी।
- **लिपियां और भाषाएं:** अधिकतर अभिलेख **ब्राह्मी लिपि** में हैं, लेकिन लिपियों में कुछ विविधताएं भी मिलती हैं, जैसे- **पूर्व में मगधी और पश्चिम में संस्कृत।** इसके अलावा, **आरमेइक** और **ग्रीक** भाषा में भी एक द्विभाषीय अभिलेख प्राप्त हुआ है।
- **विषय-वस्तु:** इन अभिलेखों में **नैतिक सुधारों के साथ-साथ व्यक्तिगत और राज्य की नैतिकता** पर भी बल दिया गया है। यह नैतिकता **बौद्ध मूल्यों से प्रभावित** है।

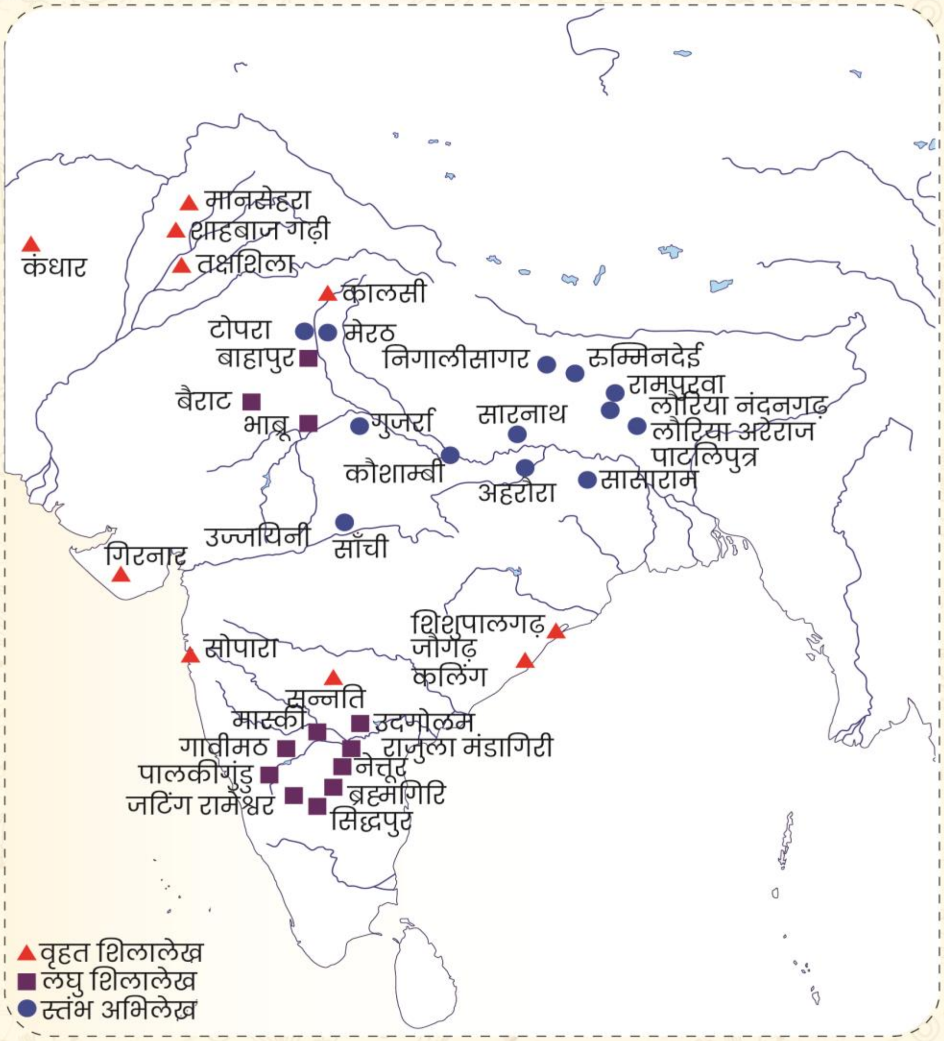

14 वृहत शिलालेख	विषय-वस्तु
शिलालेख-1	जीवों की बलि पर प्रतिबंध लगाया गया।
शिलालेख-2	मनुष्यों एवं जानवरों के लिए चिकित्सा सुविधाओं जैसे सामाजिक कल्याण के आदेश दिए गए।
शिलालेख-3	राज्य के अधिकारी यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रजा धम्म का पालन कर रही है, प्रत्येक 5वें वर्ष धर्मानुशासन बताने के लिए राज्य के दौरे पर जाएंगे।
शिलालेख-4	अहिंसा और धर्माचरण एवं धम्म के महत्त्व के संबंध में आदेश।
शिलालेख-5	सभी के कल्याण के लिए आदेश; बंदियों को रिहाई के लिए धन प्रदायगी और धम्म महामात्रों की नियुक्ति।

14 वृहत शिलालेख	विषय-वस्तु
शिलालेख-6	प्रभावशाली प्रशासन और राजकीय समाचार राजा के समक्ष प्रस्तुत करने का आदेश।
शिलालेख-7	धार्मिक सहिष्णुता और संयम व आत्मशुद्धि के महत्त्व पर बल दिया गया।
शिलालेख-8	धम्म के प्रचार के लिए धम्म यात्राओं की व्यवस्था और ब्राह्मणों व श्रमणकारी भिक्षुओं को दान।
शिलालेख-9	मंगलाचरण (समारोह आदि में मनोरंजन के कार्य) को निरर्थक कहा गया और धम्म मंगल (धर्माचरण) को फलदायी बताया गया।
शिलालेख-10	केवल धम्म के प्रचार के माध्यम से कीर्ति की उपलब्धि।
शिलालेख-11	दानशीलता, करुणा और अहिंसा जैसे मूल्यों के माध्यम से धम्म की व्याख्या।
शिलालेख-12	धार्मिक सहिष्णुता और अलग-अलग संप्रदायों के लोगों के बीच परस्पर सम्मान संबंधी आदेश।
शिलालेख-13	कलिंग विजय का उल्लेख और इसका अशोक पर प्रभाव तथा धम्म विजय को अपनाया गया।
शिलालेख-14	साम्राज्य के अलग-अलग हिस्सों में धम्म लिपियों को लिखवाया गया।

7 स्तंभ अभिलेख	विषय वस्तु
अभिलेख-1	इस तथ्य पर बल दिया गया कि धर्म की तीव्र कामना, कठोर परीक्षा, अत्यधिक आज्ञा पालन, अत्यधिक भय तथा अत्यधिक उत्साह के बिना इस लोक व परलोक में सुख की प्राप्ति कठिन है।
अभिलेख-2	धम्म (धर्म) को श्रेष्ठ बताया गया तथा पापों के अभाव, अच्छा कार्य, दया, दान, सत्य और पवित्रता को धम्म की विशेषता बताया गया।
अभिलेख-3	आत्म-निरीक्षण को प्रोत्साहित किया गया तथा कहा गया कि मनुष्यों को अपने अच्छे कर्मों के साथ-साथ बुरे कर्मों पर भी विचार करना चाहिए।
अभिलेख-4	न्यायिक और प्रशासनिक कार्यों में रज्जुकों की भूमिका का वर्णन किया गया है तथा न्याय, कल्याण व खुशहाली पर बल दिया गया है।
अभिलेख-5	कुछ जीवों का वध निषिद्ध किया गया; जानवरों पर क्रूरता पर रोक लगाई गई; पशुओं को सुरक्षा प्रदान करने का आदेश दिया गया तथा ऐसे दिन निर्धारित किए गए, जब पशुओं का वध न किया जाये तथा उनके साथ कोई हानिकारक कार्य न किया जाए।
अभिलेख-6	लोगों के हित वे सुख की वृद्धि के लिए धम्म लिपियां लिखवाने के बारे में बताया गया है।
अभिलेख-7	अशोक के अनुसार प्राचीन राजाओं की इच्छा थी कि प्रजा में धर्म की समुचित वृद्धि हो पर प्रजा में धर्म की समुचित वृद्धि नहीं हुई। सम्राट ने लोगों के बीच धर्माचरण को बढ़ावा देने के लिए धमदिश उत्कीर्ण करवाए तथा धम्म का प्रभावी तरीके से प्रचार व प्रसार किया।

3 लघु शिलालेख	विषय-वस्तु
शिलालेख-1	यह शिलालेख अशोक के बौद्ध धर्म के मात्र उपासक से उसके सबसे उत्साही अनुयायी होने का प्रमाण है। वे बौद्ध संघ से जुड़ने के बाद बौद्ध धर्म के प्रबल अनुयायी बन गए थे।
शिलालेख-2	इसमें माता-पिता व वृद्धजनों के लिए आदर, जीवों के प्रति दयालुता और ईमानदारी पर बल दिया गया है।
शिलालेख-3	इसमें अशोक ने बुद्ध, धम्म व संघ में अपनी गहन आस्था को व्यक्त किया है।

© Vision IAS

परिशिष्ट 5: भारत के ऐतिहासिक बंदरगाह (Historical Ports of India)

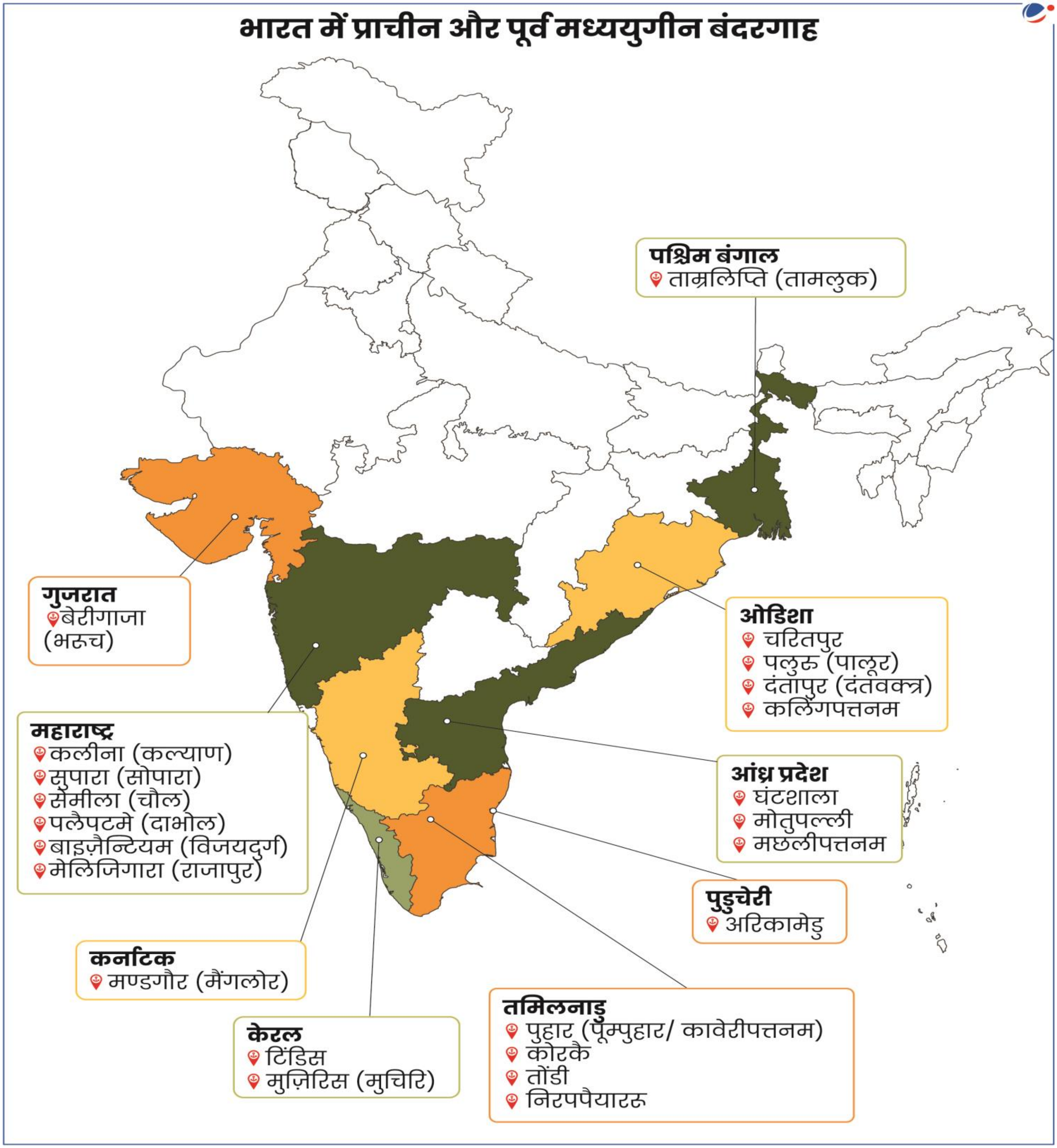

Copyright © by Vision IAS
All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

परिशिष्ट 6: भारत में विश्व धरोहर स्थल (World Heritage Sites in India)

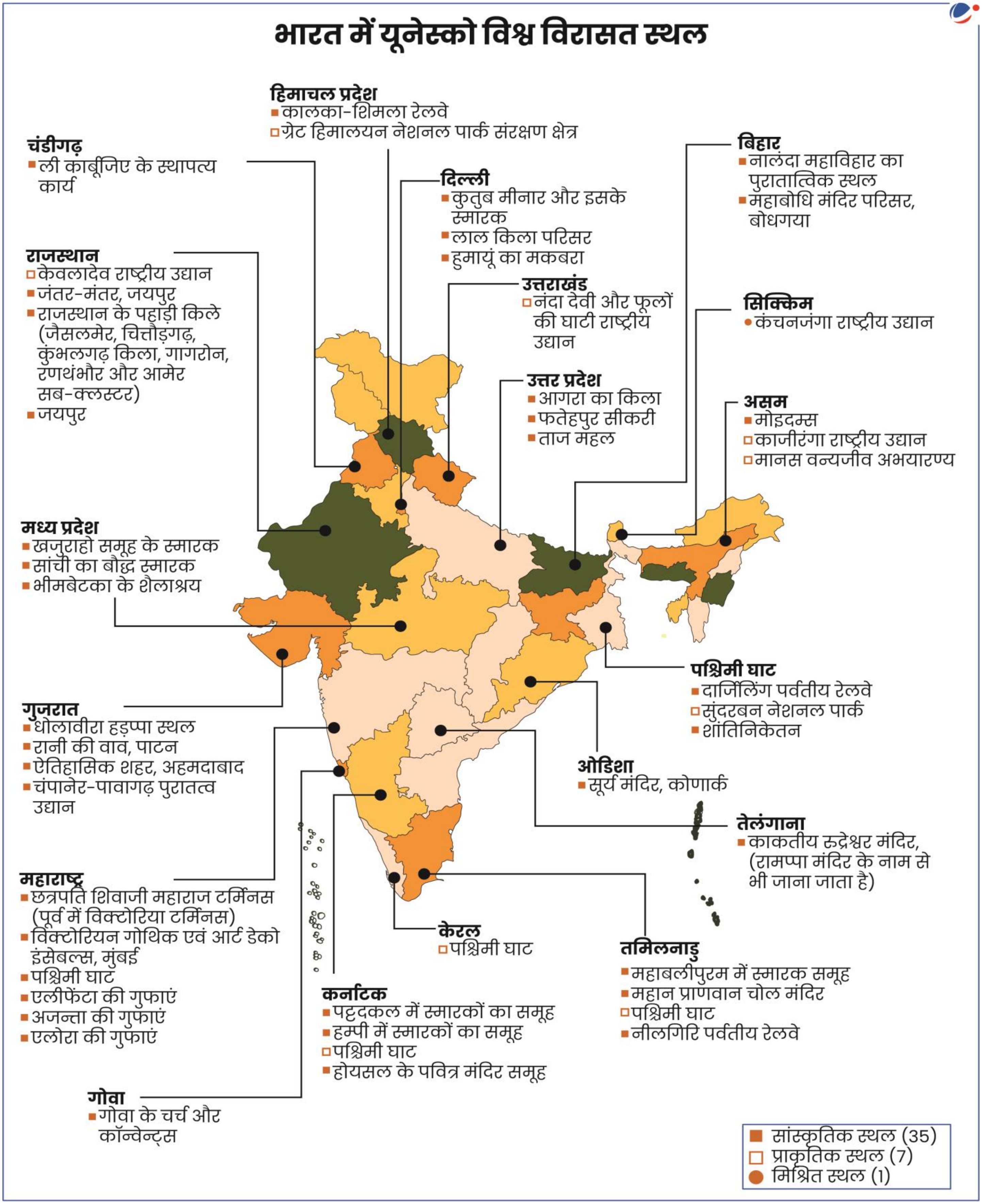

© Vision IAS

Heartiest
Congratulations
to all Successful Candidates

79 in **TOP 100** Selections in **CSE 2023**
from various programs of **Vision IAS**

1 AIR
Aditya Srivastava

2 AIR
Animesh Pradhan

5 AIR
Ruhani

6 AIR
Srishti Dabas

7 AIR
Anmol Rathore

9 AIR
Nausheen

10 AIR
Aishwaryam Prajapati

हिंदी माध्यम में 35+ चयन CSE 2023 में

हिंदी माध्यम टॉपर

53 AIR
मोहन लाल

136 AIR
अर्पित कुमार

238 AIR
विपिन दुबे

257 AIR
मनीषा धार्वे

313 AIR
मयंक दुबे

517 AIR
देवेश पाराशर

UPSC TOPPERS/OPEN SESSION: QR स्कैन करें

53 AIR
मोहन लाल
Toppers' Talk

UPSC CSE 2026 सामान्य अध्ययन

UPSC Prelims 2025 10 years PYQ

Master Classes Series करेंट अफेयर्स

HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B 1st Floor, Near Gate-6 Karol Bagh Metro Station
DELHI

MUKHERJEE NAGAR CENTER
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar

GTB NAGAR CENTER
Classroom & Enquiry Office, above Gate No. 2, GTB Nagar Metro Building, Delhi - 110009

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call: +91 8468022022, +91 9019066066

enquiry@visionias.in | /c/VisionIASdelhi | /visionias.upsc | /vision _ias | VisionIAS_UPSC

अहमदाबाद | बेंगलुरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची